सह्र क़रीब है

तरतीब-ओ-पेशकश

एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी अलैहिस्सलाम

पोस्ट बॉक्स न. १९८२२, मुम्बई - ४०००५०

मुशख़्ख़सात किताब

नामे किताब : सहर क़रीब है

नाशिर : एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी अलैहिस्सलाम

सने इशाअत : १४३७ हि.

हदिया : ७० रुपये

फ़ेहरिस्त

उम्मीद का उजाला ५
चंद बातें ७
पाकीज़ा रहनुमा ११
मुक़द्दमा १३
अंबिया अलैहिमुस्सलाम १६
इस्लाम और रहबरी १८
आफ़ताबे ज़िंदगी ३९
पहला हिस्सा
वेलादत ४१
दूसरा हिस्सा
ग़ैबते सुग़रा ५१
तीसरा हिस्सा
ग़ैबते कुबरा ६२
मुस्तक़बिल पर एक नज़र ६९
(अ) आयाते कुरआन ८०
(ब) रवायाते नबवी ८३
(ज) रवायाते अइम्मा अलैहिमुस्सलाम ८६
ग़ैबत में रहबरी ९५
तूले उम्र १०९
(१) ज़िंदगी १११
(२) मौत ११३

(३) इल्म ११४
(अ) इन्सान की कोशिश ११६
(ब) अस्बाब ११७
(ज) अअ़्दाद-ओ-शुमार ११८
(द) इस्तेस्ना १२०
(४) हक़ीक़त १२३
(५) यक़ीन १२६
ज़हूर का इन्तेज़ार १३१
(१) जाँ गुसल १३५
(२) नेहायत सख़्त और अ़क़्ल गुम करने वाली १३६
(३) सबक़ आमोज़ १३७
(४) ताक़त बख़्श भी है और तअ़्मीरी भी १३७

========

उम्मीद का उजाला

चंद बातें

ख़ौफ़ और उम्मीद ऐसी दो ताक़तें हैं जिन की बेना पर इंसान हमेशा कारोबारी ज़िंदगी में सर गर्म रहता है। अगर इन दोनों चीज़ों से उस का दामन ख़ाली हो जाए तो उसने अपने काम और इस्तेहकाम को अपने हाथों से खोया। क्यूंकि तबाही और नाबूदी का ख़ौफ़ उसको सुस्ती और काहिली से बअ़्ज़ रखता है। तरक़्क़ी और कामियाबी की उम्मीद उसको सई-ओ-कोशिश पर आमादा करती है। ख़ौफ़-ओ-उम्मीद की यही हैरत अंगेज़ तासीर है कि क़ुरआन मजीद ने इन्हीं चीज़ों को अंबिया अलैहिमुस्सलाम की बेअ़्सत की बुनियाद क़रार दिया है।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ۔

व मा नुर्सेलुल मुर्सली-न इल्ला मुबश्शेरी-न व मुन्ज़ेरी-न.

हमने पैग़म्बरों को नहीं भेजा मगर ख़ौफ़ दिलाने और बशारत देने वाले की हैसियत से।

(सूरए अन्आ़म, आयत ४८)

अ़क़ीदए इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के सिलसिले में बह्स पुर उम्मीद मुस्तक़बिल के बारे में है जो अपनी तमाम और ख़ास ख़ुसूसियात के साथ तारीख़े बशरीयत में एक मर्तबा रूनुमा होगा।

उस वक़्त तमाम ज़ुल्म-ओ-जौर, नारवा तबक़ाती इख़्तेलाफ़ात और सामराजियत के तमाम सिलसिले इंसानी मआ़शरे से अपनी अपनी बेसात तह कर लेंगे। और इंसानियत हर तरह की ख़ता-ओ-इश्तेबाह से पाक-ओ-पाकीज़ा रहबरी के साए में ख़ुश रफ़्तार और ख़ुश किरदार, बा तक़्वा और परहेज़गार मुजाहिदों के साथ मअ़्सूम रहबर की क़यादत और रहबरी में हथेली पर जान लिए कमाल की आख़री मंज़िलों तक पहुँचेगी। ख़ुदाई आवाज़ शौक़ से पुर हर इंसान के दिल से टकराती हुई कह रही है।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿١٠٥﴾

व ल-क़द कतब्ना फ़िज़्ज़बूरे मिम बअ़्दिज़्ज़िक्रे अन्नल अर्-ज़ यरिसोहा एबादेयस्सालेहू-न.

और यक़ीनन हम ने पहली याद दहानी के बअ़्द ज़बूर में भी येह बात लिख दी है कि बेशक हमारे नेक बंदे ज़मीन के वारिस होंगे।

(सूरए अंबिया, आयत १०५)

शीआ़ क़ौम का येह अ़क़ीदा है कि अगरचे आज तक ख़ुदा का येह वअ़्दा सारी दुनिया में आ़म नहीं हुआ है और अपनी तमाम तर ख़ुसूसियात के साथ अ़मल में नहीं आया है लेकिन अंजामे कार ख़ुदा

के इरादे की बेना पर यक़ीनी है।

وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ ﴿٥﴾

व नुरीदो अन-न मुन-न अ़लल लज़ीनस्तुज़्एफ़ू फ़िल अर्ज़े व नज्अ़-लहुम अइम्मतंव् व नज्अ़-लहुमुल वारेसी-न.

और हमारा येह इरादा है कि उन लोगों पर एहसान करें जो ज़मीन में कमज़ोर कर दिए गए हैं हम उनको रहबर बनाएंगे और हम उनको वारिस क़रार देंगे।

(सूरए क़सस, आयत ५)

इस मज़हब की रोशनी में और ऐसे रहबर के ज़ेरे साया इस्लाम की आ़लमी हुकूमत क़ाएम होगी।

इस तरह की बशारतें और नसीहतें इस बात का सबब हुईं कि शीआ़ क़ौम तारीख़ के तूफ़ानी और पुर हौल रास्तों में नेहायत कामियाबी और सर बलंदी के साथ साबित क़दम रही और नेहायत उम्मीद के साथ क़दम बढ़ाती रही। इस बेना पर हज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम के मुतअ़ल्लिक़ बह्स-ओ-गुफ़्तुगू ख़ास अहमियत रखती है, बारह सदियों के दौरान शीओं की बे पनाह किताबें और तहरीर इसी हक़ीक़त की हेकायत करती हैं।

दुश्मनाने इस्लाम मुद्दतों से इस फ़िक्र में लगे हुए हैं कि लोगों के दिलों से हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम का अ़क़ीदा छीन लें, इस

मक़्सद के हुसूल के लिए दुश्मनों ने कोई कसर उठा नहीं रखी, तोहमतें लगाईं, बदनाम किया, ज़ुल्म ढाए, तरह तरह की अज़ीयतें पहुँचाईं, यही वजह है कि दीनदार मुसलमानों में भी बहुत कम लोग इस मौज़ूअ् पर गुफ़्तुगू करते हैं। बल्कि एक इज्माली इशारा करके गुज़र जाते हैं और कोशिश करते हैं कि अपने को बहुत ज़्यादा इन मसाएल में न उलझाएं। इस बेना पर सच्चे पैरवकारों पर लाज़िम और ज़रूरी है कि इस अ़क़ीदे को पहचानने और पहचनवाने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा राह हमवार करें और इस सिलसिले में ज़रा भी कोताही और काहिली से काम न लें।

इन चंद बह्सों में हम इस बात की कोशिश करेंगे कि इल्मी और उसूली अंदाज़ से मतालिब बयान करें ताकि इन्कार करने वाले राह पर आ जाएं, अ़क़ीदतमंदों के दिल क़वी हो जाएं और हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की वेलादत के सिपाही इस्तेदलाली अस्लहों से लैस हो जाएं।

पाकीज़ा रहनुमा

मुक़द्दमा

ज़िंदगी की गुज़रगाह में इंसान का रास्ता तमाम मौजूदात से जुदा है, वोह इस वसीअ़-ओ-अ़रीज़ ज़मीन में दूसरे तमाम मौजूदात के बरख़ेलाफ़ जो सर से पैर तक क़वानीने फ़ितरत की ज़ंजीरों में मुक़य्यद हैं और बग़ैर किसी इख़्तेयार के इर्तेक़ाई मंज़िलें तै कर रहे हैं, इस बात पर क़ादिर हैं कि वोह अपनी ज़िंदगी का रास्ता अपने इरादे और इख़्तेयार से मुअ़य्यन करे।

ज़िंदगी के नशेब-ओ-फ़राज़ का सफ़र तै करने के लिए इंसान को इस बात की ज़रूरत थी कि एक रहबर उसकी दस्तगीरी करे, उसके रास्तों को रोशन करे ताकि येह इंसान लग़ज़िशों से महफ़ूज़ रह सके और ज़लालत के अंधे कुएं में न गिरने पाए।

रहबरी एक ऐसा मौज़ूअ़ है जो किसी ख़ास ज़मान-ओ-मकान, अफ़राद-ओ-गरोह से मख़्सूस नहीं है बल्कि हर जगह और हर एक के लिए उसकी ज़रूरत है। रहबरी एक ऐसी ज़रूरत है जिस का इन्कार नहीं किया जा सकता है। अलबत्ता येह रहबरी के तर्ज़-ओ-अंदाज़ का मसअला है कि उसने कभी इंसान को कमालात की बलंदियों से

आश्ना किया और कभी ज़िल्लत-ओ-गुमराही के आख़री दरजात तक पहुँचा कर दम लिया। येह रहबर ही होता है जो समाज की फ़लाह-ओ-बहबूद, तरक़्क़ी-ओ-कमाल, या फ़साद-ओ-तबाही, इन्हेतात-ओ-ज़वाल का रास्ता मुअय्यन करता है।

गुज़श्ता सदियों की ब निस्बत तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिजरी में मुख़्तलिफ़ मकातिबे फ़िक्र वजूद में आए। हर मकतब का मक़्सद-ओ-हदफ़ इंसान को आख़री मंज़िल तक पहुँचाना है। इन मकातिबे फ़िक्र ने अपने अपने नज़रिये और अपने अपने उसूल-ओ-क़वानीन पेश किये। लेकिन तारीख़ इस बात की गवाह है कि उन में से कोई भी, यहां तक कि वोह लोग भी जिन का पूरी दुनिया में बज़ाहिर डंका बजता था, इस बात को आगे न बढ़ा सके। बल्कि इंसान के लिए मज़ीद रंज-ओ-ग़म और मुसीबत-ओ-अलम का सबब बन गए।

मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मकातिबे फ़िक्र (इज़्मों) के हंगामों ने सेराब की तरह प्यासे इंसान को अपना फ़रेफ़्ता किया और उसको अपनी तरफ़ बुलाया, रहबरी की नेअ़्मत से महरूम इंसान उसकी तरफ़ गया ताकि उसकी उम्मीदों का दरख़्त उस नई सर ज़मीन पर बार आवर हो सके। हैरान-ओ-परेशान हो कर, क्यूंकि उस दौड़ धूप में उसको बे आब-ओ-गयाह सहराओं और झुलस्ते हुए सूरज के सिवा कुछ न मिला। जिस की बेना पर हर चीज़ से मुतनफ़्फ़िर हो गया। और उसी तनफ़्फ़ुर और सरकशी ने उसको ज़्यादा हैरान-ओ-परेशान कर दिया। उसी वक़्त बअ़्ज़ दानिशवरों ने दर दर की ठोकरें खाने के

बअ़्द एक मर्तबा उम्मीद भरी निगाहों से ''दीन और रूहानियत'' की तरफ़ देखा।

इस बाज़गश्त ने येह वाज़ेह कर दिया कि इंसान सिर्फ़ ख़ुदा के मुस्तहकम क़वानीन की रोशनी में अपना रास्ता मुअ़य्यन कर सकता है। क्यूंकि इंसान की तमाम ख़ुद साख़्ता राहें ज़ेह्नी वजूद से ज़्यादा हैसियत नहीं रखती हैं जो अ़मल और वाक़ईयत की मंज़िल तक पहुंचते पहुंचते ऐसे दोराहे पर पहुंच जाती हैं जहाँ तवक़्क़ोआ़त कुछ और होती हैं और नताएज कुछ और आख़िरकार इंसान अपनी मंज़िले मक़्सूद तक नहीं पहुंच पाता, परेशानियों में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है। अलबत्ता सिर्फ़ ख़ुदाई क़वानीन ही उस मालिके हक़ीक़ी के तयक़्क़ुन-ओ-ज़मानत के सहारे जो इंसान का पैदा करने वाला नज़्म-ओ-ज़ब्त का ईजाद करने वाला, और उनकी तमाम ज़रूरतों का इल्म रखने वाला है, इंसान के सामने ख़ुश बख़्ती और सआ़दत की राहें खोल सकता है। और बेहतरीन रहबर वोह अफ़राद हैं जिन को उसने मुन्तख़ब किया है और लोगों के दरमियान भेजा है, ताकि इंसान को तारीकियों से निकाल कर हेदायत के उजाले में लाएं और उसके जाने और अंजाने दुश्मनों को पहचनवाएं।

अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम

अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम : येह ख़ुदा के अन्थक मेहनत करने वाले पैग़म्बर, जिन्होंने अपनी दुश्वार तरीन ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए इंसानों से किसी अज्र का मुतालबा नहीं किया। बल्कि हमेशा इंसानों के हाथों मसाएब-ओ-आलाम, सख़्तियां और परेशानियां बर्दाश्त करते रहे और इंसानों के हाथों शहीद होते रहे।[१]

लेकिन ख़ुदावंद आ़लम ने पैग़म्बरों का सिलसिला मुन्क़तअ़ नहीं किया बल्कि हर जगह और हर आबादी के लिए इल्म-ओ-आज़ादी के अ़लमबरदारों को भेजा।[२] ताकि येह हज़रात इंसानियत की सरज़मीन

---

१. कुरआन मजीद, सूरए माएदा, आयत ७०, *कुल्लमा जा-अहुम रसूलुन बेमा ला तह्वा अन्फ़ोसोहुम फ़रीक़न कज़्ज़बू व फ़रीक़न यक़्तोलू-न।* जब भी किसी पैग़म्बर ने उनकी पसंद के ख़ेलाफ़ बात की तो कुछ नबियों की उन्होंने तकज़ीब की और बअ़्ज़ को क़त्ल कर दिया।

२. कुरआन मजीद सूरए नह्ल, आयत ३६ *व ल-क़द ब-अ़स्ना फ़ी कुल्ले उम्मतिर रसूलन अनेअ़्बुदुल्ला-ह वज्तनेबुत्ताग़ू-त* और हर उम्मत में हम ने एक रसूल मब्ऊस किया जिन का कहना येह था कि ख़ुदा की इबादत करो और सरकशों से दूर रहो।

पर अब्रे रहमत की तरह बरसें और इंसान के दिल की गहराइयों को हयात आफ़रीं छींटों से सैराब कर दें और उसके दिल में पोशीदा अ़ह्द-ओ-मीसाक़ को याद दिलाएं ताकि वोह उस अ़ह्द-ओ-पैमान पर अ़मल कर सकें।[१]

जिस वक़्त ज़माना तारीकियों में डूबा हुआ था और हर तरफ़ घटा टोप अंधेरा छाया हुआ था, तारीख़ अपने बोहरानी दौर से गुज़र रही थी, दुनिया जेहालत और नादानी के समन्दर में हिचकोले ले रही थी, उस वक़्त रहमान-ओ-रहीम ख़ुदा के दस्ते पुर क़ुदरत ने तमाम पैग़म्बरों के पैग़ाम की तकमील के लिए हेजाज़ के तपते हुए सहरा से नबूवत-ओ-रेसालत के आख़री ताजदार को मब्ऊस किया ताकि उसका पैग़ाम सारी दुनिया तक पहुँचा सके।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا

या अय्योहन्नासो इन्नी रसूलुल्लाहे इलैकुम जमीअ़न.

ऐ लोगो! मैं ख़ुदा की तरफ़ से तुम सब के लिए भेजा गया हूँ।

(सूरए अअ़्राफ़, आयत १५८)

येह पैग़म्बरे रहमत अ़ज़ीम तरीन अख़्लाक़ के साथ कोहे नूर और ग़ारे हेरा की बलंदियों से मब्ऊस किया गया ताकि एक मर्तबा फिर और आख़री मर्तबा इसांन की आज़ादी का नअ़्रा बलंद करे और

१. हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम का क़ौल है: *फ़-बअ़-स फ़ीहिम रोसोलहू व वा-त-र इलैहिम अंबियाअहू लेयस्तादूहुम मीसा-क़ फ़ित-रतेही व योज़क्केरूहुम मन्सी-य नेअ़्मतेही व यहतज्जू अ़लैहिम बित्तब्लीग़* (नहजुल बलाग़ा, सुब्ही सालेह, स० ४३-४४)

उसको तमाम क़ैद-ओ-बंद से आज़ाद करे, जाहिली अक़्दार का ख़ातेमा करे। ग़लत क़िस्म की इबादतों को ख़त्म करे, हर जगह बराबरी और बरादरी का निज़ाम क़ाएम करे, ईमान और तौहीद को ज़िंदा करे, ख़ुदा के आख़री मन्शूर, क़ुरआन जिस में किसी भी चीज़ को फ़रोगुज़ार नहीं किया गया है।[१] और अपने अह्लेबैत को सुब्हे क़यामत तक इंसान की सआदत-ओ-रहबरी के लिए पेश करे।

इस्लाम और रहबरी

किसी भी आसमानी मज़हब में इस्लाम की तरह रहबरी के मौज़ूअ् पर बह्स नहीं की गई है और येह बात आसानी से कही जा सकती है कि इस्लामी तअ्लीमात में जितना रहबरी पर ज़ोर दिया गया है उतना किसी और मौज़ूअ् पर नहीं दिया गया है। हेदायत ख़ुदावंद आलम की तरफ़ से है और ख़ुदा की हुज्जतों और रहबरों और पेशवाओं का तसलसुल तमाम इंसानों को उस हेदायत तक पहुँचाने के लिए है।

اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى

इन्-न अ़लैना लल हुदा....

लोगों की हेदायत हमारी ज़िम्मेदारी है।

(सूरए लैल, आयत ११)

चूंकि येह रहबरी सिर्फ़ एक सालेह, नेकूकार पेशवा और रहबर की

१. مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ *मा फ़र्रत्ना फ़िल किताबे मिन शैइन,* क़ुरआन मजीद, सूरए अन्आम, आयत ३८। हम ने किताब में कोई चीज़ ज़्यादा क़रार नहीं दी है।

सूरत में मुमकिन है इसी बेना पर इमाम और रहनुमा के बारे में इस हद तक ताकीद की गई है कि वोह अफ़राद जो रहनुमा और इमाम की मअ़्रेफ़त के बग़ैर इस दुनिया से रुख़्सत हो जाएं पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने उनकी मौत को जाहेलीयत की मौत क़रार दिया है।

مَنْ مَاتَ وَلَمْ يَعْرِفْ اِمَامَ زَمَانِهٖ مَاتَ مِيْتَةً جَاهِلِيَّةً۔

मन मा-त व लम यअ़्रिफ़ इमा-म ज़मानेही मा-त मीततन जाहेलीयतन.

(ग़ैबते नोअ़्मानी, मतबूआ मकतबुस्सदूक़ १३९७, स० १३०)

इसके अ़लावा इस्लाम में इमाम और रहनुमा के वजूद पर इस हद तक ताकीद की गई है कि ज़मीन कभी भी हुज्जते ख़ुदा .... इमाम-ओ-रहनुमा ... के वजूद से ख़ाली नहीं रह सकती और रूए ज़मीन पर इमाम का वजूद, इंसानी वजूद के आख़री लम्हे तक रहेगा।

इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से मरवी एक हदीस में ख़ुदा की हुज्जतों के यके बअ़्द दीगरे आते रहने के सिलसिले में यूं आया है।

لَوْ لَمْ يَبْقَ فِي الْاَرْضِ اِلَّا اِثْنَانِ لَكَانَ اَحَدُهُمَا الْحُجَّةَ۔

लौ लम यब-क़ फ़िल अर्ज़े इल्ला इस्नाने ल-का-न अ-हदो हुमल हुज्ज-त.

अगर ज़मीन पर सिर्फ़ दो अफ़राद बाक़ी रह जाएं तो उनमें से एक हुज्जते ख़ुदा होगा।[१]

१. उसूले काफ़ी, जि०१, स० २५३; बसाएरुद्दरजात, स० ४८८, ग़ैबते नोअ़्मानी, स० १४०, कमालुद्दीन व तमामुन् नेअ़्मा, स० २०३।

ख़ुदा का इरादा और मन्शा येह है कि आख़री इंसान भी उस चश्मए फ़ैज़-ओ-बरकत से महरूम न रहे। हदीस में इस बात को कितने हसीन अंदाज़ में बयान किया गया है कि ज़मीन कभी भी हुज्जते ख़ुदा के वजूद से ख़ाली नहीं रह सकती। इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

لَوْ اَنَّ الْاِمَامَ رُفِعَ مِنَ الْاَرْضِ سَاعَةً لَسَاخَتْ بِاَهْلِهَا وَمَا جَتْ كَمَا يَمُوْجُ الْبَحْرُ بِاَهْلِهٖ۔

लौ अन्नल इमा-म रोफ़े-अ मिनल अर्ज़े सा-अतन ल-साख़त बे-अहलेहा व माजत कमा यमूजुल बहरो बेअहलेही.[१]

अगर एक लम्हा भी इमाम न हो तो ज़मीन अपने अह्ल समेत धंस जाए।

इन तमाम बातों से येह बात बाक़ाएदा वाज़ेह हो जाती है कि इस्लाम में इंसान की रहबरी और हेदायत को किस क़द्र अहमियत दी गई है यहां तक कि इंसान एक लम्हा भी बग़ैर रहबर और सर परस्त न रहे।

हज़रत पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की ज़िंदगी पर एक सरसरी नज़र करने से ही येह बात आश्कार हो जाती है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने इंसान की हेदायत और अपने बअ्द मुसलमानों की रहबरी-ओ-हेदायत और लोगों को

१. ग़ैबते नोअ्मानी, स० १३९; मुख़्तसर तफ़ावुत से उसूले काफ़ी, जि० १ स० २५३; बसाएरुद्दरजात, स० ४४८; कमालुद्दीन, स० २०२, २०३)

अपनी हयाते तय्येबा के बअ़्द सच्ची राहनुमाई की निशानदेही फ़रमाते हुए उसके बारे में किस क़द्र ताकीद फ़रमाई है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम नशेब-ओ-फ़राज़ से भरी अपनी ज़िंदगी में मुतअ़द्दिद और मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियों की तब्लीग़ के साथ साथ हर मौक़अ़्-ओ-मुनासेबत से रहबरी के मसअले को पेश करते रहते थे। ताकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बअ़्द उनके जॉनशीन के बारे में कोई शक-ओ-शुब्हा बाक़ी न रहे जो हज़रत के पैग़ाम को आगे बढ़ाने वाला और दवाम अ़ता करने वाला है। तारीख़ इस बात की गवाह है कि येह अहम मौज़ूअ़् पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को बार बार अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करता था और बारहा पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की ज़बाने अक़्दस की जुंबिश का सबब उस अ़ज़ीम रहबर का तआ़रुफ़ रहा। ताकि इस्लाम का दरख़्त अपने मुहाफ़िज़ और रहबर को न पहचानने की बेना पर राहे हक़ से मुन्हरिफ़ हो कर ख़ुश्क न हो जाए।

पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की ज़िंदगी के मुतअ़द्दिद वाक़ेआ़त से सिर्फ़ तीन वाक़ेआ़त का तज़्केरा बतौर नमूना इस हक़ीक़त के लिए काफ़ी है कि अपने जॉनशीन के उ़न्वान से हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम का तआ़रुफ़ कराने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने किस क़द्र सई-ओ-कोशिश फ़रमाई। और येह ख़ुदा का एक हुक्म था कोई ज़ाती मसअला नहीं था क्यूंकि पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम अपनी जानिब से कोई बात नहीं फ़रमाते थे। वोह जो कुछ करते या फ़रमाते ख़ुदा की वह्य के मुताबिक़ होता। पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम तो बस

ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाने वाले और सरासर उसके मुतीअ़-ओ-फ़रमांबरदार हैं।[१]

इसी बेना पर उनका हुक्म ख़ुदा का हुक्म है और उनके हुक्म की मुख़ालेफ़त सरासर ज़लालत और गुमराही है। जैसा कि क़ुरआन मजीद का इर्शाद है:

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَن يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا ﴿٣٦﴾

व मा का-न लेमोअ़्मेनिन व ला मोअ़्मेनतिन एज़ा क़ज़ल्लाहो व रसूलोहू अम्रन अन यकू-न लहुमुल ख़े-य-रतो मिन अम्रेहिम व मन यअ़्सिल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द ज़ल-ल ज़लालन मुबीनन.

किसी मोअ़्मिन मर्द या औरत को येह हक़ हासिल नहीं है कि जब ख़ुदा और उसका रसूल किसी बात का फ़ैसला कर लें तो वोह उसके ख़ेलाफ़ जाएं और मुख़ालिफ़ राए का इज़हार करें जो शख़्स भी ख़ुदा और रसूल की ना फ़रमानी करे वोह यक़ीनन खुली हुई गुमराही में गिरफ़्तार है।

(सूरए अहज़ाब, आयत ३६)

येह बात क़ाबिले तवज्जोह है कि हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की

१. وَمَا يَنطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ *व मा यन्तेक़ो अ़निल हवा इन हो-व इल्ला वह्युन यूहा.* क़ुरआन मजीद, सूरए नज्म, आयत ३-४.

जानशीनी भी इसी तरह है यअ़्नी ख़ुदा और रसूल ने इस सिलसिले में अपने फ़ैसले का एअ़्लान कर दिया है अब किसी भी मुसलमान को येह हक़ हासिल नहीं कि उसकी मुख़ालेफ़त करे या कोई दूसरा रास्ता इख़्तेयार करे।

वाक़ेआत

पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की पहली उ़मूमी दअ़्वत है जहाँ पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने पहली मर्तबा बनी हाशिम के बुज़ुर्गों के सामने दीने इस्लाम का एअ़्लान किया और उनको ख़ुदाए वह्दहू ला शरीक पर ईमान लाने और अपनी रेसालत को क़बूल करने की दअ़्वत दी। उसी मज्लिस में एक नौजवान के आहिनी अ़ज़्म-ओ-इरादा ने सब को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह कर लिया जो पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की बात का तन्हा जवाब देने वाला था और पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की रेसालत पर ईमान लाने वाला था। येह नौजवान कोई और नहीं था, येह हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम थे। पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने जिन का तआ़रुफ़ अपने जानशीन के उ़न्वान से कराया।[१]

१. इस वाक़ए के बेशुमार हवाले शीआ़ किताबों के अ़लावा सुन्नी किताबों में देखे जा सकते हैं। बतौर नमूना यहां चंद माख़ज़ का तज़्केरा करते हैं। मुसनद अहमद बिन हंबल हिस्सा अव्वल, स० ३३३, १५९, १११। शर्हे नहजुल बलाग़ा इब्ने अबिल हदीद, जि० ३, स० २८२, २६३। केफ़ायतुत्तालिब हाफ़िज़ गंजी शाफ़ई बाब ५१, तफ़सीरे तबरी ज़ैल आयत, وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ

उस मौक़ेअ़ पर जब पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की एअ़लानिया तब्लीग़े रेसालत का इब्तेदाई मरहला था और इस्लाम का कोई नासिर-ओ-मददगार नहीं था। या वोह मौक़अ़ जब इस्लाम का सूरज बलंदी पर था और उसके जाह-ओ-जलाल ने तमाम लोगों को अपनी हयात आफ़रीन तअ़लीमात और पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की तरफ़ जज़्ब कर लिया था और येह हमारी गुफ़्तुगू का एक दूसरा वाक़ेआ है। इन दोनों जगहों पर कोई ज़्यादा फ़र्क़ नहीं है ख़्वाह वोह ''यौमुद्दार'' हो या ''यौमे ग़दीरे ख़ुम''। पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने हर जगह एअ़लानिया तौर से और हर के लिए हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-रहबरी का एअ़लान फ़रमाया। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि पहले दौर में लोगों की तअ़दाद महदूद थी यअ़नी सिर्फ़ ख़ानदाने बनी हाशिम के बुज़ुर्ग मौजूद थे। और दूसरी मर्तबा एक वसीअ़ पैमाने पर, अपनी क़ुदरत की मेअ़राज पर, तमाम लोगों के सामने,

---

व अंज़िर अ़शी-र-तकल अक़रबी-न, तारीख़ुल उमम वल मुलूक स० २१७, मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से।

बअ़ज़ ख़ुद ग़रज़ अफ़राद के जाहेलाना तअ़स्सुबात येह बता रहे हैं कि उन लोगों ने किस तरह आफ़ताबे हक़ीक़त से चश्म पोशी की है। और उन लोगों में हक़ को देखने की ताब-ओ-तवानाई नहीं है।

मिस्र के अपने ज़माने के मशहूर-ओ-मअ़रूफ़ अह्ले क़लम मोहम्मद हसनैन हैकल जो ख़ुद एक सुन्नीयुल अ़क़ीदा हैं उन्होंने अपनी किताब ''हयाते मोहम्मद'' मतबूआ १३५४ हि. के सफ़हा १०४ पर इस वाक़ए का ज़िक्र किया है। उस दिन रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम का तआ़रुफ़ अपने जॉनशीन के उन्वान से कराया। लेकिन बअ़द में सुन्नियों की तरफ़ से उनकी इतनी मलामत की गई और इतना ज़ोर दिया गया कि दूसरे एडीशन में इस वाक़ए का तज़्केरा ही नहीं किया। क्या कहना इस इंसाफ़ का!

वसीअ्-ओ-अ्रीज़ मैदान, वादिए ''ग़दीर'' में हर एक के लिए इसी बात की वज़ाहत फ़रमाई।[१]

और अब तमाम मुसलमानों का रुख़ हज़रत अ्ली अ्लैहिस्सलाम की तरफ़ था जो हमेशा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ्लैहे व आलेही व सल्लम की नुसरत-ओ-जाँनिसारी का परचम काँधों पर उठाए हथेली पर जान लिए, हर फ़ेदाकारी के लिए हर वक़्त तय्यार रहते थे। येह बात सिर्फ़ ज़बानी नहीं थी बल्कि लोगों ने बारहा मैदाने जंग में उसका अ्मली मुज़ाहेरा देखा था।

और तीसरा वाक़ेअ्ा पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ्लैहे व आलेही व सल्लम की ज़िंदगी के आख़री लम्हात और आँहज़रत सल्लल्लाहो अ्लैहे व आलेही व सल्लम बिस्तरे अ्लालत पर हैं उस वक़्त भी लोगों के सामने हज़रत अ्ली अ्लैहिस्सलाम को रहबर-ओ-पेशवा के उ्न्वान से पहचनवाया और तमाम लोगों को एक बार फिर हज़रत अ्ली अ्लैहिस्सलाम की तरफ़ मुतवज्जेह कर दिया। अह्लेबैत अतहार अ्लैहिमुस्सलाम को 'सिक़्ले अकबर'' (क़ुरआन) के हम वज़्न-ओ-हम पल्ला क़रार दिया और उन दोनों को जो हरगिज़ एक दूसरे से जुदा नहीं होंगे गुमराहियों से नजात का ज़रीअ्ा क़रार दिया।

(इस हदीस के बारे में अ्नक़रीब गुफ़्तुगू करेंगे)

इस तरह पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने अइम्मा

---

१. तारीख़े इस्लाम में ''ग़दीर'' को वोह अबदी मक़ाम हासिल है कि हर एक ने उसको तशरीह-ओ-तफ़सील से नक़्ल किया है तफ़सीलात के लिए ''अ्बक़ातुल अन्वार'', ''एहक़ाक़ुल हक़'' और ''अल ग़दीर'' का मुतालेअ्ा किया जा सकता है।

अलैहिमुस्सलाम की वेलायत-ओ-रहबरी के अज़ीम तरीन मसअले को लोगों के सामने वाज़ेह कर दिया। येह बात आसानी से कही जा सकती है कि येह मसअला उन अहम मसाएल में है जिस के बारे में काफ़ी तअ़्दाद में आयतें और रवायतें मिलती हैं जिस से येह बात वाज़ेह हो जाती है कि इस्लामी अक़ाएद में येह अक़ीदा किस दरजा अहमियत का हामिल है।

इस मौज़ूअ़् की अहमियत के लिए इतना काफ़ी है कि क़ुरआन करीम ने ''उलुल अम्र'' की इताअ़त को ख़ुदा और रसूल की इताअ़त के साथ साथ ज़िक्र किया है।

أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ

अतीउ़ल्ला-ह व अतीउ़र्रसू-ल व उलिल अम्रे मिन्कुम.

ख़ुदा, पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम **और उलिल अम्र की इताअ़त करो।**

(सूरए निसा, आयत ५९)

इस बेना पर ''उलिल अम्र'' की इताअ़त वाजिब-ओ-ज़रूरी है और इस बात पर इस्लाम के तमाम फ़िर्क़े मुत्तफ़िक़ हैं। बह्स-ओ-गुफ़्तुगू बस इस बात में है कि उलिल अम्र का मिस्दाक़ कौन अफ़राद हैं? किस की क़ामते रअ़्ना है जिस पर क़बाए वेलायत सहीह उतरती है। शीओं का अक़ीदा येह है कि उलिल अम्र वोह अफ़राद हैं जो आदिल, आलिम, पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के जॉनशीन, जिनका क़ौल-ओ-फ़ेअ़्ल, कोई हुक्म-ओ-अमल ख़ुदा और रसूल के अहकाम के ख़ेलाफ़ हरगिज़ नहीं है, वोह दीने इस्लाम

की तरवीज-ओ-इशाअ़त, क़ुरआन करीम की वज़ाहत और सुन्नते पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की हेफ़ाज़त करने वाले उ़लूम और मआ़रिफ़े इलाहिया में रुसूख़-ओ-उ़बूर रखने वाले हैं और येह अफ़राद बारह इमामों के अ़लावा कोई और दूसरा नहीं है। क्यूंकि जुम्ला हुक्मरानों में से किसी एक हुक्मराँ में भी बग़ैर किसी इस्तेस्ना के येह सेफ़ात नहीं पाई जातीं। सिर्फ़ और सिर्फ़ बारह इमाम ही हैं जिन में येह तमाम सेफ़ात कामिल तरीक़े से पाई जाती हैं। और इस सिलसिले में पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आ़लेही व सल्लम की बहुत सारी हदीसें भी मौजूद हैं।[१]

जैसा कि हम देख चुके हैं कि पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने अपनी बेअ़्सत की इब्तेदा से ज़िंदगी के आख़री लम्हात तक हर जगह, मैदाने जंग में, मस्जिद में, सहाबा के दरमियान, मक्का में, मदीना में, हज के मौक़ेअ़् पर और ख़ुत्बा देते वक़्त, मौक़ेअ़् और मुनासेबत से इस बात की बाक़ाएदा वज़ाहत कर दी है कि उनके बअ़्द उनका जॉनशीन और इस उम्मत का रहबर-ओ-रहनुमा कौन होगा।

हम यहां क़ुरआन करीम की तीन आयतों का तज़्केरा करते हैं जिन में इस अहम मौज़ूअ़् को पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की ज़बानी वाज़ेह किया गया है ताकि इस मसअले के क़ुरआनी होने में शक-ओ-शुब्हा बाक़ी न रहे।

---

१. तफ़सीलात के लिए मुन्तख़बुल असर फ़िल इमामिस्सानी अ़शर के स० ७२, हदीस ३६, स० १०१, हदीस ४ का मुतालेआ़ किया जाए अहादीसे पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की रोशनी में उलिल अम्र का वाक़ई मिस्दाक़ अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम को बताया गया है।

(१) सूरए माएदा, आयत ५५

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾

इन्नमा वलीयोकुमुल्लाहो व रसूलोहू वल्लज़ी-न आ-मनुल्लज़ी-न युक़ीमूनस सला-त व यूअ़्तूनज़ ज़का-त व हुम राकेऊ़-न.

तुम्हारा मालिक-ओ-मुख़्तार सिर्फ़ ख़ुदा है, उसका रसूल है और वोह लोग हैं जो ईमान लाए हैं, जो नमाज़ क़ाएम करते हैं और रुकूअ़् की हालत में ज़कात देते हैं।

इस बात की तरफ़ तवज्जोह रहे कि रुकूअ़् की हालत में ज़कात देने वालों की वेलायत-ओ-रहबरी का ज़िक्र ख़ुदा और रसूल की वेलायत के साथ साथ है। यअ़्नी मोअ़्मेनीन के तमाम उमूर की ज़िम्मेदारी पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बअ़्द इन्हीं लोगों के हाथों में है।[१]

शीअ़ा और अह्लेसुन्नत की अकसर हदीस की किताबों में

१. जिन आयतों की तफ़सीर हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के बारे में है उनकी तअ़्दाद उससे कहीं ज़्यादा है। अ़ल्लामा हाशिम बहरानी ने अपनी अ़ज़ीम किताब ''ग़ायतुल मराम'' में २४८ आयतों का तज़्केरा किया है कि हदीसों के ज़रीए आयतों को हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के बारे में बताया गया है। इसी तरह ''एहक़ाक़ुल हक़' जि० ३ में ८४ आयतों को शीअ़ा-ओ-सुन्नी रवायतों की बुनियाद पर हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम और अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के बारे में बताया गया है।

मुतअ़द्दिद हदीसें मिलती हैं जो इस बात की वज़ाहत-ओ-सराहत करती हैं कि येह आयत हज़रत अ़ली इब्ने अबी तालिब अ़लैहिस्सलाम की शानेवाला में उस वक़्त नाज़िल हुई जब हज़रत ने रुकूअ़ की हालत में अपनी अंगूठी साएल को मरहमत फ़रमाई।[१]

इस आयत की बेना पर आफ़ताबे रेसालत के ग़ुरूब होने के बअ़्द उम्मत की रहबरी हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम का हक़ है।

(२) सूरए माएदा, आयत ६७

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ ۚ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۗ

या अय्योहर्रसूलो बल्लिग़ मा उन्ज़े-ल इलै-क मिर्रब्बे-क व इल्लम तफ़्अ़ल फ़मा बल्लग़्-त रेसा-ल-तहू वल्लाहो यअ़्सेमो-क मिनन्नासे.

ऐ रसूल जो कुछ आप के परवरदिगार की जानिब से आप पर नाज़िल किया गया है उसको (लोगों तक) पहुँचा दीजिए। अगर आप ने ऐसा न किया तो आप ने उसका पैग़ाम ही नहीं पहुँचाया। और ख़ुदा आप को लोगों के शर से महफ़ूज़ रखेगा।

इस से वाज़ेह होता है जिस चीज़ के पहुँचाने का हुक्म दिया जा रहा है वोह नेहायत अहम है जिस का न पहुँचाना रेसालत के न

१. गरांक़द्र किताब ''अल ग़दीर'' तालीफ़ आयतुल्लाह अ़ल्लामा मुजाहिद शैख़ अ़ब्दुल हुसैन अमीनी मरहूम, जिल्द० ३ की तरफ़ रुजूअ़ फ़रमाइये।

पहुँचाने के मुतरादिफ़ है। अगर देखा जाए तो हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की रेसालत तमाम अंबिया और मुर्सलीन की रेसालत की तकमील है। पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की रेसालत तमाम अंबिया-ओ-मुर्सलीन की मेहनतों का मा हसल है और उनकी ज़हमतों का समर है। इस बात को पेशे नज़र रखते हुए येह मसअला और ज़्यादा अहम हो जाता है कि इस बात का न पहुँचाना न सिर्फ़ आँहज़रत की पूरी तब्लीग़ी ज़िंदगी के बेकार हो जाने के मुतरादिफ़ है बल्कि गुज़श्ता अंबिया के अ़दमे रेसालत के बराबर है। और यक़ीनन ऐसा ही है। क्यूंकि अगर रहबर शाइस्ता न हो तो सारी मेहनत बरबाद हो जाएगी। और कुफ़्र अपने पुर फ़रेब और मकरूह चेहरे के साथ इस्लामी मआ़शरे पर मुसल्लत हो जाएगा।

अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल हुसैन अमीनी ता-ब सराह ने शीआ़ और सुन्नी और ख़ास कर अह्लेसुन्नत के बुज़ुर्ग उ़लमा से ऐसे तीस माख़ज़ का तज़्केरा किया है कि येह आयत हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के बारे में नाज़िल हुई है। येह आयत उस वक़्त नाज़िल हुई जिस वक़्त पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम अपने आख़री हज ''हज्जतुल वेदाअ़'' से वापस हो रहे थे और मोअ़्मेनीन गरोह दर गरोह शम्ए़ रेसालत के गिर्द परवानों की तरह हल्क़ा बाँधे हुए मदीना मुनव्वरा की सिम्त रवां दवां थे। उस वक़्त येह आयत नाज़िल हुई। पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ग़दीरे ख़ुम के तारीख़ी मैदान में अस्हाब के अ़ज़ीमुश्शान इज्तेमाअ़ में हज़रत अ़ली इब्ने अबी तालिब अ़लैहिस्सलाम की वेलायत-ओ-रहबरी के एअ़्लान की ख़ातिर हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को अपने हाथों पर उठाया और सब के सामने

ख़लीफ़ा और इमाम के उ़न्वान से उन ह़ज़रत का तआ़रुफ़ कराया, ताकि सब लोग अपने रहबर और पेशवा को ख़ूब अच्छी तरह पहचान लें, और ज़लालत-ओ-गुमराही के ख़ौफ़नाक तूफ़ान में कुफ़्र-ओ-नेफ़ाक़ की बला ख़ेज़ मौजों में बहते बहते जहन्नम के किनारे न पहुँच जाएं।

तारीख़ में कोई भी ह़ज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम जैसा नज़र नहीं आता है। ह़ज़रत की ज़ात में तमाम इंसानी, अख़्लाक़ी और एलाही सेफ़ात जमअ़ थीं। तक़्वा, एबादत, शुजाअ़त, ह़ुकूमत.... जो पैग़म्बर का भाई था और जाँ निसार भी, जो मददगार भी था और सहारा भी। जॉनशीने पैग़म्बर भी था और सरदार भी.....

(३) सूरए माएदा, आयत ३

الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا

अलयौ-म अक्मल्तो लकुम दी-नकुम व अत्मम्तो अ़लैकुम नेअ़्मती व रज़ीतो लकुमुल इस्ला-म दीना.

आज तुम्हारे लिए दीन को कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़्मत तमाम कर दी और इस बात से राज़ी हो गया कि तुम्हारा दीन इस्लाम हो।

येह आयत ग़दीर के तारीख़ी वाक़ए के बअ़्द नाज़िल हुई और इमामत-ओ-वेलयात के बारे में बेहतरीन, ख़ूबसूरत तरीन और अबदी तअ़्बीर, यअ़्नी इस्लाम, वेलायत-ओ-इमामत की बेना पर कामिल

हो गया और ख़ुदा की अअ्ला तरीन नेअ्मत, नेअ्मते वेलायत-ओ-इमामत, लोगों को नसीब हुई।[१]

इस मौज़ूअ् से मुतअल्लिक़ शीओं ने बेहतरीन, तहक़ीक़ी, इल्मी और अमीक़ किताबें इस अर्से में तालीफ़-ओ-तसनीफ़ की हैं जिन में बअ्ज़ किताबें इस तरह हैं:

अस्ल सुलैम बिन क़ैस, बसाएरुद्दरजात, तल्ख़ीसुश्शाफ़ी, ग़ायतुल मराम, एहक़ाकुल हक़, अबक़ातुल अनवार, बेहारुल अनवार और अलग़दीर.... जिस से बिल्कुल वाज़ेह हो जाता है कि इमामत का अक़ीदा किस क़द्र मुस्तहकम है।

लेकिन येह तारीख़े इस्लाम का दर्दनाक वाक़ेआ है कि पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की वफ़ात के बअ्द पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की तमाम ताकीदें और तमाम अहकाम बअ्ज़ अफ़राद ने इक़्तेदार तलबी के जोश में पसे पुश्त डाल दिये और अपनी हवस के आगे उनकी तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं दी और इस तरह हज़रत अली अलैहिस्सलाम के मुसल्लमुस्सुबूत हक़ की जगह ख़ुद बिराजमान हो गए।[२] और इस तरह मुसलमानों को इन्हेराफ़ के रास्ते पर लगा दिया।

हाँ हज़रत अली अलैहिस्सलाम के पंजसाला मुख़्तसर दौरे हुकूमत में वाक़ई इस्लाम और अद्ल-ओ-इन्साफ़ की झलक नज़र आती है

---

१. इस बात के सुबूत के लिए कि येह आयत ग़दीरे ख़ुम में नाज़िल हुई है, एहक़ाकुल हक़ जि० २, स० ३९९, ४११, का मुतालेआ कीजिए।

२. नमूने के तौर पर नहजुल बलाग़ा की तरफ़ रुजूअ् किया जा सकता है जिस में ख़ुत्बए शक़शक़ीया हज़रत अली अलैहिस्सलाम के सोज़े दिल का तरजुमान है।

लेकिन यही मुख़्तसर और महदूद रोशनी आज तक सारे आ़लम की निगाहों को ख़ीरा किए हुए है।

अफ़सोस सद अफ़सोस कि येह आफ़ताब बरसों से लोगों की जेहालत और तअ़स्सुब के बादलों में पोशीदा था। सिर्फ़ बअ़्ज़ बसीरत अफ़रोज़ निगाहें और पाकीज़ा ख़मीर अफ़राद ही इस आफ़ताबे आ़लमताब से इस्तेफ़ादा कर सके। और आज भी इस बात का अफ़सोस है कि बअ़्ज़ अफ़राद इस दौर में भी अपनी इन्हेराफ़ी रविश और आबाई कज फ़िक्री पर पाबंदी से क़ाएम हैं और आँखों को तअ़स्सुब के हाथों से बंद किए हुए हैं ताकि इस आफ़ताबे रुश्द-ओ-हेदायत का जल्वा न देख सकें। लेकिन वोह इस हक़ीक़त से ग़ाफ़िल हैं कि ख़ुदावंद आ़लम अपने नूर को कामिल करेगा अगरचे येह बात काफ़िरों को नागवार ही क्यूं न गुज़रे।

وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُورِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ۔

वल्लाहो मुतिम्मो नूरेही व लौ करेहल काफ़ेरून.

(सूरए सफ़, आयत ८)

अपनी उम्मत से पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की आख़री बातें बड़ी अहम, बुनियादी और हस्सास हैं जो हमारी निगाहों के सामने हैं। पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के बअ़्द इस्लामी मआ़शरे की पुर पेच राहों को रोशन और वाज़ेह करने के साथ साथ दो अहम और गरांक़द्र रहबरों की निशानदेही करती हैं जिन्हें अपनाने के बअ़्द ही उम्मत सेराते मुस्तक़ीम का नाम-ओ-निशान पा सकती है।

जिस वक़्त सैकड़ों अस्हाब की निगाहें पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के चेहरए अनवर पर मरकूज़ थीं, पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने अपने आख़री ख़ुतबे में कुछ बातों के बअ़्द इस तरह इर्शाद फ़रमायाः

ऐ लोगो!

मैंने मौत के लिए परवरदिगार की दअ़्वत क़बूल कर ली है और मैं अ़न्क़रीब तुम्हारे दरमियान से चला जाऊंगा। लेकिन दो गरांक़द्र चीज़ें तुम्हारे दरमियान छोड़े जा रहा हूं! ख़ुदा की किताब, क़ुरआन और मेरी इ़तरत-ओ-अह्लेबैत। अगर मेरे बअ़्द इन दोनों से मुतमस्सिक रहे तो हरगिज़ गुमराह नहीं होगे। येह दोनों किसी वक़्त भी एक दूसरे से जुदा नहीं होंगे। यहां तक कि हौज़े कौसर पर मेरे पास आएं।

जहां तक मेरे अह्लेबैत का तअ़ल्लुक़ है, तुम उनसे इ़ल्म हासिल करो उन को इ़ल्म सिखाओ नहीं। येह तुम से ज़्यादा जानते हैं!! ज़मीन हरगिज़ उनसे ख़ाली नहीं रह सकती। अगर उनसे ख़ाली हो जाए तो अपने अह्ल समेत धंस जाए।

उसके बअ़्द फ़रमायाः

ख़ुदावंदा! तू हरगिज़ ज़मीन को हुज्जत के वजूद से ख़ाली न रखना। ताकि तेरा दीन बातिल के रास्ते पर न चल पड़े और तेरे दोस्त हेदायत के बअ़्द गुमराह न हो जाएं। येह हुज्जते ख़ुदा तअ़्दाद के लेहाज़ से कम हैं लेकिन ख़ुदावंद अ़ालम की

बारगाह में बड़े अ़ज़ीमुल मर्तबत और जलीलुल क़द्र हैं।[१]

आँहज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **के कलाम से येह बात बिल्कुल साफ़ और वाज़ेह है कि आँहज़रत** सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **ने कुरआन के साथ साथ एक और जॉनशीन और ख़लीफ़ा मुअ़य्यन फ़रमाया है जो कुरआन की वज़ाहत करने वाले, इख़्तेलाफ़ात को दूर करने वाले, और मआ़रिफ़े ख़ुदावंदी को बयान करने वाले हैं।**

कुरआन करीम अपनी जामेईयत के एअ़्तेबार से मुख़्तलेफ़ुल जेहात का हामिल है। लेहाज़ा ज़रूरी है कि उसके साथ साथ हमेशा ऐसी शख़्सीयत (इमाम) हो जो लोगों को तअ़्लीम दे और उनके इख़्तेलाफ़ात को हल करे। इसी बेना पर ख़ुदावंद आ़लम ने कुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमायाः-

بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ

बल हो-व आयातुन बय्येनातुन फ़ी सुदूरिल्लज़ी-न ऊतुल इ़ल्-म.

बल्कि वोह रोशन आयतें हैं जो उन लोगों के सीनों में हैं जिन को इ़ल्म दिया गया।

(सूरए अ़न्कबूत, आयत ४९)

---

१. एहक़ाकुल हक़ जि॰ ९, स. ३५७ इस हदीस को अह्लेसुन्नत के मुख़्तलिफ़ गरोहों ने मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से नक़्ल किया है इसके बअ़्द साहेबाने तहक़ीक़-ओ-नज़र के लिए कोई गुंजाइश बाक़ी नहीं रह जाती है। शहीदे सालिस क़ाज़ी नूरुल्लाह शुस्तरी की किताब ''एहक़ाकुल हक़'' पर आयतुल्लाहिल उ़ज़्मा आक़ाए सय्यद शहाबुद्दीन मरअ़शी ने हाशिया लिख कर किताब की अफ़ादियत में कई गुना इज़ाफ़ा कर दिया है। किताब की जिल्द ९, स॰ ३०९ और ३७६ पर इस हदीस के हवालों का तज़्केरा किया है।

इसी बेना पर पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने दो गरांक़द्र चीज़ों का तज़्केरा किया है और फ़रमाया है कि येह दोनों सुब्हे क़यामत तक हरगिज़ जुदा नहीं हो सकते। और इन दोनों से तमस्सुक के बअ़्द ज़लालत-ओ-गुमराही का कोई ख़तरा नहीं है।

एक दूसरी जगह पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने अपने अह्लेबैत को मुतलातुम मौजों के दरमियान कश्तिये नजात से तअ़्बीर किया है:-

مَثَلُ اَهْلِ بَيْتِيْ فِيْكُمْ مَثَلُ سَفِيْنَةِ نُوْحٍ مَنْ رَكِبَهَا نَجٰى وَ مَنْ تَخَلَّفَ عَنْهَا غَرِقَ۔

म-सलो अह्लेबैती फ़ीकुम म-सलो सफ़ीनते नूहिन मन रकेबहा नजा व मन तख़ल्ल-फ़ अ़न्हा ग़रे-क़.

तुम्हारे दरमियान मेरे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की मिसाल कश्तिये नूह की तरह है जो उस पर सवार हुआ उसने नजात पाई और जिस ने रू गर्दानी की वोह (ज़लालत-ओ-गुमराही की मौजों में) ग़र्क़ हो गया।

(मुस्तदरक, जि० २, स० ३४३, जि० ३, स० १५२ (मतबूआ हैदराबाद))

पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की दूसरी रवायात में औसिया की तअ़्दाद और उनके नाम का तज़्केरा मिलता है। उन तमाम रवायात में पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के रास्ते का तसलसुल और दवाम इमामत और वेलायत को क़रार दिया

गया है।[१]

इस बेना पर आफ़ताबे रेसालत के ग़ुरूब होने के बअ़्द उम्मत की रहबरी की ज़माम बारह इमाम [२] बनी इसराईल के नुक़बा की तअ़्दाद के बराबर .... के ज़िम्मे है जिन में हर एक क़ुरैशी है और हर एक मअ़्सूम है। और इस सिलसिले की आख़री कड़ी हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम की ज़ाते वाला सिफ़ात है।

तारीख़ ख़ाह अपनों की हो या बेगानों की, ग्यारह इमामों के ज़हूर पर गवाह है। हर एक इमाम ने इस्लाम और शीईयत की तारीख़ को अपने से मख़्सूस किया है। उन रहनुमाओं ने आफ़ताब की शुआ़ओं की तरह अपने इल्म की शुआ़ओं से इंसानियत की मुर्दा ज़मीन को हयाते नौ अ़ता की है और अपनी नूरानियत से तबाह हाल मअ़ाशरे

---

१. बतौरे नमूना किताब मुन्तख़बुल असर, स० ९९ - १००, और ग़ैबते नोअ़्मानी, स० ८१ पर पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की ऐसी रवायतों का तज़्केरा किया है जिस में अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम का तज़्केरा है।

२. عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ يَقُوْلُ يَكُوْنُ اِثْنَى عَشَرَ اَمِيْرًا فَقَالَ كَلِمَةً لَمْ اَسْمَعْهَا فَقَالَ اَبِيْ اِنَّهُ قَالَ كُلُّهُمْ مِنْ قُرَيْشٍ अ़न जाबिर बिन समरा, क़ा-ल समेअ़्तो रसूलल्लाहे यकूलो यकूनो इस्ना अ़-श-र अमीरन फ़क़ा-ल कले-मतन लम अस्मअ़्हा फ़क़ा-ल अबी इन्नहू क़ा-ल कुल्लोहुम मिन क़ुरैशिन (सहीह बुख़ारी जि० ९, स० ८१) मुस्लिम ने भी अपनी सहीह में इस तरह बयान किया है:

لَا يَزَالُ الدِّيْنُ قَائِمًا حَتّٰى تَقُوْمَ السَّاعَةُ اَوْ يَكُوْنُ عَلَيْكُمْ اِثْنَا عَشَرَ خَلِيْفَةً كُلُّهُمْ مِنْ قُرَيْشٍ

ला यज़ालुद्दीनो क़ाएमा हत्ता तक़ूमस्साअ़तो औ यकूनो अ़लैकुम इस्ना अ़-श-र ख़ली-फ़-तन कुल्लोहुम मिन क़ुरैशिन. फ़ज़ाएलुल ख़म्सा मिनस् सेहाहिस् सित्ता, जि० २, स० २३)

को बामे उ़रूज तक पहुँचाया। वक़्त और हालात की मुनासेबत से इस्लामी तअ़्लीमात की नश्र-ओ-इशाअ़त की। बअ़्ज़ ना गुफ़्ता बेह हालात की बेना पर तमाम बातें तो अ़मली न हो सकीं लेकिन तमाम मक़ासिद आख़्री रहबर के वक़्ते ज़हूर के लिए सेपुर्द कर दिए गए हैं ताकि वोह अपनी आ़लमी हुकूमत के दौर में दुनिया के चप्पे चप्पे में तमाम इस्लामी तअ़्लीमात को आ़म कर दें और सारी दुनिया में इस्लाम फैला दें।

आफ़ताबे ज़िंदगी

पहला हिस्सा

वेलादत

१५ शअ़्बान २५५ हि. की सुब्ह एक आफ़ताबे आ़लमताब काएनात के उफ़ुक़ पर नमूदार हुआ। जिस की किरनों ने इंसानियत के जिस्म में ताज़ा रूह फूंक दी और जो काएनात का सरमायए ज़िंदगी क़रार पाया। मुनकिरों की तमाम तर तमन्नाओं और आर्ज़ूओं के बरख़ेलाफ़ ख़ुदा का क़तई वअ़्दा हज़रत महदी अलैहिस्सलाम की वेलादत की सूरत में ज़ाहिर हुआ।

नूरे ख़ुदा को ख़ामोश करने के लिए अ़ब्बासी और उमवी ख़ोलफ़ा और हज़रत के मुख़ालेफ़ीन की नामुराद कोशिशें एक बार फिर नाकामियों से दो चार हो गईं। वाक़ेअ़न येह तारीख़ का अ़जीब-ओ-ग़रीब वाक़ेआ़ है।

बनी अ़ब्बास के ज़ालिम-ओ-जाबिर ख़ोलफ़ा ने सुन रखा था कि बारहवें इमाम काएनात के गोशा गोशा पर अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ की

हुकूमत क़ाएम करेंगे। ज़ुल्म-ओ-जौर, सितम-ओ-इस्तेब्दाद की सारी बिसात उलट देंगे। इस लिए उन लोगों ने शीओं को जितना सताया जा सकता था सताया, जिस क़द्र उन बे गुनाहों का ख़ून बहा सकते थे बहाया, उन शीआ शोहदा के हालात उन किताबों में देखे जा सकते हैं जो उसी मौज़ूअ् पर उसी ज़माने में लिखी गई हैं।[१]

इस बेना पर कि शीओं के इमाम मरकज़े हुकूमत से दूर न रहें और उन पर पूरी नज़र रखी जा सके, मुतवक्किल अ़ब्बासी ने २३५ हि. में येह हुक्म सादिर किया कि दसवें इमाम हज़रत इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम और उनके अह्ले ख़ानदान मदीना के बजाए सामर्रा आकर रहें।

(इस्बातुल वसीया, अबुल हसन अ़ली मसऊ़दी, स० ४३५, मुतरजम)

उसी तरह मोअ्तमिद अ़ब्बासी जो फ़िरऔन की तरह इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के फ़र्ज़ंद से डर रहा था, वोह हमेशा हज़रत की फ़िक्र में रहता था। कुछ टोह लगाने वाली दाइयों को इस बात पर मअ़्मूर किया था कि अ़लवीयों और हज़रत के घर का चक्कर लगाती रहें ताकि नौ मौलूद की ख़बर मिलते ही उसको नीस्त-ओ-नाबूद कर दिया जाए।

(काफ़ी, बाब किताबुल हुज्जा, मौलिद अबी मोहम्मद अल हसन बिन अ़ली अ़लैहिमुस्सलाम)

---

१. मक़ातेलुत्तालेबीन, तालीफ़, अबुल फ़रज इस्फ़हानी, मोअल्लिफ़ ने इस किताब में उन शोहदा का तज़्केरा किया है जो हज़रत अ़ली इब्ने अबी तालिब अ़लैहिस्सलाम की नस्ल से थे। और येह सिर्फ़ ३१३ हि. तक शहीद होने वाले शोहदा की फ़ेहरिस्त है।

ये सारी तलाश-ओ-जुस्तुजू इमाम को दरियाफ़्त करने और उनको क़त्ल करने के लिए थी। येह तफ़तीश और ख़ाना तलाशी उस वक़्त और ज़्यादा हो गई जब इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदा की दअ़्वत पर लब्बैक कहते हुए इस दारे फ़ानी से आ़लमे अबदीयत की जानिब रेहलत फ़रमाई। उस वक़्त बात काफ़ी ज़्यादा दुश्वार और हस्सास हो गई थी। क्यूंकि सब जानते हैं कि अब एनाने हुकूमत हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के मुबारक हाथों में आई है और अब सारी काएनात हज़रत के ज़ेरे फ़रमान है।

शीओ़ं के मोअ़्तबर और बलंद मर्तबा आ़लिम जनाब शैख़ सदूक़ रह्मतुल्लाह अ़लैहे अपनी किताब कमालुद्दीन में इस तरह लिखते हैं:

जिस वक़्त इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम का जसदे अतहर क़ब्र के हवाले किया गया और लोग चले गए। ख़लीफ़ा और उसके कारिंदे इमाम के फ़र्ज़ंद को तलाश करने लगे। घरों की बाक़ाएदा तलाशी ली गई।

(कमालुद्दीन, शैख़ सदूक़, जि० १, स० १०१, मुतरजम)

उसी तरह शीओ़ं के मोअ़्तबर और बलंद पाया आ़लिम शैख़ मुफ़ीद रह्मतुल्लाह अ़लैहे अपनी किताब ''इर्शाद'' में लिखते हैं कि:

जिस वक़्त इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम का इन्तेक़ाल हुआ, ख़लीफ़ए वक़्त ने इमाम के फ़र्ज़ंद को बाक़ाएदा तलाश किया। और इस सिलसिले में उसने बहुत ज़्यादा सई-ओ-कोशिश की। क्यूंकि इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के बारे में शीओ़ं का येह अ़क़ीदा आ़म हो

चुका था और मशहूर था कि शीआ़ हज़रत अ़लैहिस्सलाम का इन्तेज़ार कर रहे हैं।

(इर्शाद, बाबे वफ़ात अबी मोहम्मद अल हसन बिन अ़ली अ़लैहिमुस्सलाम)

मोअ़्तज़िद भी बनी अ़ब्बास का एक और सितमगर ख़लीफ़ा था। उसने २७९ हि. से २८९ हि. तक ख़ेलाफ़त की। जब उसने सुना कि गुज़श्ता ख़ोलफ़ा तमाम तर कोशिशों के बावजूद भी बीस साल से ज़्यादा अ़र्सा गुज़रा कि हज़रत हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के यहां बेटा पैदा हुआ और आज भी ज़िंदा है। उसने येह इरादा किया कि इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के तमाम ख़ानदान को यकबारगी ख़त्म कर दे। इस सिलसिले में उसके एक कारिन्दे का बयान इस तरह हैः

> मोअ़्तज़िद ने मुझे दो आदमियों के साथ, इस बात पर मामूर किया कि हम एक घोड़े पर सवार हों और दूसरा घोड़ा अपने साथ ले जाएं। और बहुत तेज़ी से सफ़र करें। यहां तक कि नमाज़ के लिए भी कहीं न ठहरें और सामर्रा चले जाएं। उसने हमें इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के घर पता दिया और कहा वहां जो भी मिले उसका सर काट कर हमारे पास ले आओ।

(ग़ैबत, शैख़ तूसी, स० १६० और शवाहेदुन् नबूवा, अ़ब्दुर्रहमान जामी हनफ़ी)

वोह इस बात से बिल्कुल ग़ाफ़िल था कि वोह ताक़त जिस ने गुज़श्ता ख़ोलफ़ा के ज़माने में हज़रत की हेफ़ाज़त की थी, वोह इस वक़्त भी हज़रत अ़लैहिस्सलाम की हेफ़ाज़त करेगी। क्यूंकि ख़ुदावंद आ़लम जिस काम का इरादा करता है उसको ज़ालिम-ओ-जाबिर

रोक नहीं सकता है। क्या येह मुमकिन है कि ख़ुदा का हत्मी वअ़्दा पूरा न हो?

तअ़ज्जुब तो इस बात पर है कि इससे पहले भी ख़ुदाए वहदहू ला शरीक ने बारहा वाज़ेह कर दिया है ताकि सब के सब येह जान लें कि अगर ख़ुदा किसी बंदे को मुन्तख़ब करना चाहे, उसको हुकूमत-ओ-सरबराही अ़ता करे और उसके हाथों कुफ़्र-ओ-ज़ुल्म को नीस्त-ओ-नाबूद करे, तो कोई ख़ुदा के इरादे में रोड़े नहीं अटका सकता है। जनाब मूसा अ़लैहिस्सलाम का वाक़ेआ हमारे सामने है, किस तरह वोह फ़िरऔन के घर में पले बढ़े। जिस से येह वाज़ेह हो जाता है कि जब ख़ुदा किसी काम को करना चाहता है तो तमाम लोगों की सारी कोशिशें नक़्श बर आब साबित होती हैं। हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम की वेलादत और बक़िया हालाते ज़िंदगी के बारे में बात कुछ इसी तरह की है। मुख़ालेफ़ीन की पूरी कोशिशों के बावजूद भी ख़ुदा ने अपनी हुज्जत की हेफ़ाज़त की और ख़ेयानतकारों के सारे मन्सूबों पर पानी फेर दिया।

बहरहाल जैसा कि हम बयान कर चुके हैं कि १५ शअ़्बान २५५ हि. की सुब्ह को हज़रत इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने अपने फ़र्ज़ंद का मलकूती और नूरानी चेहरा देखा। जिस की उ़म्र तूलानी होगी और जो ख़ुदा के तमाम वअ़्दों और बशारतों को अ़मली कर दिखाएगा।

हज़रत की वेलादत को अभी तीन दिन भी न गुज़रे थे कि इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने अपने अहबाब से फ़रमायाः

وُلِدَ لِاَبِیْ مُحَمَّدِ الْحَسَنِ مَوْلُوْدٌ فَسَمَّاهُ مُحَمَّدًا فَعَرَضَهُ عَلٰی اَصْحَابِهٖ یَوْمَ الثَّالِثِ وَ قَالَ "هٰذَا اِمَامُكُمْ مِنْ بَعْدِیْ وَ خَلِیْفَتِیْ عَلَیْكُمْ وَهُوَ الْقَائِمُ الَّذِیْ تَمْتَدُّ اِلَیْهِ الْعَنَاقُ بِالْاِنْتِظَارِ فَاِذَا امْتَلَاتِ الْاَرْضُ جَوْرًا وَ ظُلْمًا خَرَجَ فَیَمْلَاُهَا قِسْطًا وَّ عَدْلًا۔

वोले-द ले-अबी मोहम्मदिल ह-सने मौलूदुन फ़-सम्माहो मोहम्मदन फ़-अ-र-ज़हू अ़ला अस्हाबेही यौमस सालेसे व क़ा-ल "हाज़ा इमामोकुम मिन बअ़्दी व ख़लीफ़ती अ़लैकुम व होवल क़ाएमुल्लज़ी तमतद्दो इलैहिल अ़नाक़ो बिल इन्तेज़ारे फ़-एज़म्तलातिल अर्ज़ो जौरन व ज़ुल्मन ख़-र-ज फ़-यम्लओहा क़िस्तंव व अ़द्ला.

मेरे बअ़्द येह तुम्हारा साहबे अम्र है और मेरे बअ़्द वोह जानशीन है येह वही क़ाएम है जिस के ज़हूर के इन्तेज़ार में सब लोग ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। जब ज़मीन ज़ुल्म-ओ-जौर से भर जाएगी तो ज़हूर करेगा, और उसको अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से भर देगा।

(यनाबीउ़ल मवद्दा, ख़्वाजा कलाँ सुलेमान कुन्दूज़ी हनफ़ी, स० २६०)

और इसी वेलादत के मौक़अ़ पर अपने दूसरे अस्हाब से फ़रमायाः

زَعَمَتِ الظَّلَمَةُ اَنَّهُمْ یَقْتُلُوْنَنِیْ لِیَقْطَعُوْا هٰذَا النَّسْلَ كَیْفَ رَاَوْا

قُدْرَةَ الْقَادِرِ۔

ज़-अ-मतिज़्ज़-ल-मतो अन्नहुम यक़्तोलू-ननी लेयक़्तऊ हाज़न्नस-ल कै-फ़ रऔ कुद-र-तल क़ादिरे.

सितमगर येह ख़याल कर रहे थे कि मुझे क़त्ल कर देंगे ताकि मेरा फ़र्ज़ंद दुनिया में न आने पाए। अब उन लोगों ने ख़ुदा की कुदरत को कैसा पाया।

(जनाब सय्यद बिन ताऊस इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम से इस तरह नक़्ल करते हैं)

इस पुर मसर्रत और पुर बरकत मौलूद की वेलादत की मुनासेबत से हज़रत इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम के हुक्म से दस हज़ार रतल (एक रतल ७५० ग्राम के बराबर) की रोटी और गोश्त बनी हाशिम में तक़्सीम किया गया। उ़स्मान बिन सईद जो इस काम के ओ़हदेदार थे उन्होंने नेहायत उ़म्दा तरीक़े से इस काम को अंजाम दिया।

(कमालुद्दीन, शैख़ सदूक़ जि० २, स० १०४, मुतरजम)

इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने इब्तेदा ही से ख़ुदा के हुक्म से अपने नूरे नज़र को लोगों की निगाहों से पोशीदा रखा। जनाब शैख़ मुफ़ीद की इस इबारत पर तवज्जोह फ़रमाइये जिस का एक हिस्सा पहले गुज़र चुका है।

इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने अपने नूरे नज़र को हुकूमते हक़ के लिए अपनी जगह छोड़ा। वोह अपने फ़र्ज़ंद को लोगों की निगाहों से पोशीदा रखते थे क्यूंकि उस वक़्त हालात बहुत ज़्यादा सख़्त थे। ख़लीफ़ए वक़्त इमाम अ़लैहिस्सलाम के फ़र्ज़ंद को तलाश कर रहा था।

क्यूंकि महदी अलैहिस्सलाम के बारे में शीओं का अक़ीदा आम हो चुका था और मशहूर था कि शीआ उनका इन्तेज़ार कर रहे हैं। इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम अपनी ज़िंदगी में अपने फ़र्ज़ंद को ज़ाहिर नहीं करते थे और हज़रत की वफ़ात के बअ्द भी दुश्मन इमाम महदी अलैहिस्सलाम को न पहचान सके।

(इर्शाद, मुफ़ीद, बाबे वफ़ात अबी मोहम्मद अल हसन बिन अली अलैहिस्सलाम)

हज़रत महदी अलैहिस्सलाम का मसअला अगरचे मुख़ालिफ़ों और दुश्मनों से पोशीदा रहा। लेकिन हज़रत के पाक दिल और पाकीज़ा ख़मीर शीआ बहुत जल्द इस बात से वाक़िफ़ हो गए थे।

बअ्ज़ को ख़ुद हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम ने ख़त के ज़रीए इत्तेलाअ् दी जैसे अहमद बिन इस्हाक़ जो हज़रत के सच्चे जाँनिसार शीआ थे, उनके पास एक ख़त गया जो ख़ुद हज़रत के दस्ते मुबारक से लिखा हुआ था।

> मेरे यहां एक फ़र्ज़ंद की वेलादत हुई है। येह ख़बर लोगों से पोशीदा रहे। हम सिर्फ़ नज़दीकी रिश्तेदारों और मख़्सूस दोस्तों को इससे बा ख़बर करेंगे।

(कमालुद्दीन, शैख़ सदूक़, जि० २, स० १०८ मुतरजम)

बअ्ज़ शीआ ख़ास कर इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम की ज़ेयारत के लिए जाते थे हज़रत उनको बारहवें इमाम हज़रत महदी अलैहिस्सलाम की ज़ेयारत का शरफ़ अता फ़रमाते थे, जैसे अबू अम्र अहवाज़ी ख़ुद उनका बयान है:

اَرَانِیْهِ اَبُوْ مُحَمَّدٍ عَلَیْهِ السَّلَامُ وَقَالَ هٰذَا صَاحِبُكُمْ۔

अरानीहे अबू मोहम्मदिन अलैहिस्सलाम व क़ा-ल हाज़ा साहेबोकुम.

इमामे ज़माना को मुझे दिखाया और फ़रमाया येह तुम्हारा साहब है।

(इर्शादे मुफ़ीद, बाब मन रायल इमामुस् सानी अशर)

बअ्ज़ शीआ इज्तेमाई शक्ल में इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होते थे। अगर उन लोगों का ईमान और राज़दारी हज़रत अलैहिस्सलाम के नज़दीक मूरिदे इत्मीनान होती थी तो हज़रत अलैहिस्सलाम अपने नूरे नज़र को दिखाते थे।

मुआविया बिन हकीम, मोहम्मद बिन अय्यूब, मोहम्मद बिन उस्मान अम्री ने रवायत की है!

''हम चालीस अफ़राद थे जो हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के घर में जमअ् हुए। हज़रत ने अपने फ़र्ज़ंद को दिखलाया और फ़रमाया! येह तुम्हारा इमाम है और मेरा जानशीन है। मेरे बअ्द इसकी इताअत करना, इख़्तेलाफ़ न करना वर्ना हलाक हो जाओगे।

(कमालुद्दीन, शैख़ सुदूक़, जि० २, स० १०९, मुतरजम)

बहरहाल शीओं को उफ़ुक़े इमामत के बारहवें आफ़ताब के तुलूअ् की ख़बर मिली और लोग इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में मुबारकबाद पेश करने आते रहे।

हसन बिन हुसैन अलवी का बयान है:

सामर्रा शह्र में इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम **की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और फ़र्ज़ंद की वेलादत की मुबारकबाद दी।**

(इस्बातुल हुदा, शैख़ हुर्रे आ़मली, जि॰ ६, स॰ ४३३)

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास अ़लवी का भी यही बयान है:

सामर्रा में इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम **की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और फ़र्ज़ंद की वेलादत की मुबारकबाद दी।**

(इस्बातुल हुदा, शैख़ हुर्रे आ़मली, जि॰ ६, स॰ ४३३)

इस तरह हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम की वेलादत हुई वोह दुश्मनों और अजनबियों की निगाहों से दूर ज़िंदगी बसर करते रहे अलबत्ता कभी कभी किरदार-ओ-ईमान के पक्के पोढ़े शीआ़ हज़रत की बारगाह में हाज़िर होते रहे। यहां तक कि २६० हि. में इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम का इन्तेक़ाल हो गया और ख़ुदा की इमामत-ओ-वेलायत का अ़ज़ीम मन्सब हज़रत साहेबुल अम्र अ़लैहिस्सलाम तक पहुँचा।

दूसरा हिस्सा

ग़ैबते सुग़रा

इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात के बअ़्द सिलसिलए इमामत ख़ानदाने पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के आख़री मेह्रे दरख़्शां हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम तक पहुँचा। हज़रत अगरचे लोगों के दरमियान ज़ाहिर नहीं होते थे। लेकिन मोअ़्तबर और मोअ़्तमद अफ़राद बराबर आप की ख़िदमत में हाज़िर होते थे। शीओं के मसाएल और मुश्किलात आप के सामने पेश करते थे और हज़रत के जवाबात और अहकाम लोगों तक पहुँचाते थे।

येह अफ़राद ईमान, तक़्वा, एअ़्तेमाद, इत्मीनान के लेहाज़ से मुन्तख़बे रोज़गार थे। हज़रत की नेयाबत में हज़रत के अहकाम लोगों तक पहुँचाते थे। और लोगों को ज़िम्मेदारियों के अदा करने पर आमादा करते थे।

उन मुत्तक़ी और परहेज़गार अफ़राद के हालाते ज़िंदगी का

मुतालेआ एक तरफ़ हमें उनकी अ़ज़मत-ओ-बुज़ुर्गी का पता देता है और दूसरी तरफ़ इमाम अ़लैहिस्सलाम की मज़ीद मअ़्रेफ़त अ़ता करता है। क्यूंकि उन बा एअ़्तेबार और बा वुसूक़ अफ़राद (जिन का शुमार अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के मोअ़्तबर तरीन अन्सार-ओ-असहाब में था) की बातों में हमें हज़रत अ़लैहिस्सलाम की निशानियाँ नज़र आती हैं।

इमाम अ़लैहिस्सलाम के नाएबीन में चार अफ़राद सब से ज़्यादा मशहूर हैं। येह अफ़राद इमाम और अ़वाम के दरमियान वास्ता थे। उन को नव्वाबे अर्बआ के नाम से याद किया जाता है। उन अ़ज़ीमुल मर्तबत अफ़राद की अ़ज़मत-ओ-बुज़ुर्गी की मज़ीद मअ़्रेफ़त के लिए उनके मुख़्तसर हालाते ज़िंदगी यहां ज़िक्र करते हैं।[१]

(१) उ़स्मान बिन सईद अ़म्री

येह अ़ज़ीमुल क़द्र शख़्सीयत सिर्फ़ इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की नाएब नहीं थी बल्कि आप इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम और इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम के भी वकील-ओ-मोअ़्तमद थे। शीओं के बहुत से काम आप ही के ज़रीए अंजाम पाते थे। इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम ने शीओं से आप के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया था।

هٰذَا اَبُوْ عَمْرٍ وَالثِّقَةُ الْاَمِيْنُ، مَا قَالَهُ لَكُمْ فَعَنِّيْ يَقُوْلُهُ وَمَا اَدَّاهُ اِلَيْكُمْ فَعَنِّيْ يُوَدِّيْهِ۔

हाज़ा अबू अ़म्रिस्से-क़तुल अमीनो, मा क़ालहू लकुम

१. इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के नाएबीन की तफ़सीलात रेजाल की किताबों में मिन्जुम्ला तन्क़ीहुल मक़ाले मामक़ानी, जि. १, स० २०० में मज़कूर हैं।

फ़-अन्नी यक़ूलोहू व मा अद्दाहो इलैकुम फ़-अन्नी योवद्दीहे.

येह अबू अ़म्र उ़स्मान बिन सईद मोअ़्तबर और अमीन हैं। जो कुछ तुम से बयान करते हैं मेरी तरफ़ से बयान करते हैं जो कुछ तुम तक पहुँचाते हैं मेरी तरफ़ से पहुँचाते हैं।

(ग़ैबतः शैख़ुत्ताएफ़ा अबी जअ़्फ़र मोहम्मद बिन अल हसन तूसी, स॰ २१५)

२५४ हि. यअ़्नी इमाम अ़ली नक़ी अ़लैहिस्सलाम **की वफ़ात तक इमाम के वकील रहे। इसी तरह जो हदीसें इमाम हसन अ़सकरी** अ़लैहिस्सलाम **से वारिद हुई हैं उन में भी आप की अ़ज़ीम शख़्सीयत का जल्वा नज़र आता है। इमाम ने शीओं से मुख़ातिब हो कर फ़रमायाः**

هٰذَا اَبُوْ عَمْرٍو الثِّقَةُ الْاَمِيْنُ مِنْ ثِقَةِ الْمَاضِىْ وَ ثِقَتِىْ فِى الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ فَمَا قَالَهٗ لَكُمْ فَعَنِّىْ يَقُوْلُهٗ وَمَا اَدّٰى اِلَيْكُمْ فَعَنِّىْ يُوَدِّيْهِ۔

हाज़ा अबू अ़म्रिस्से-क़तुल अमीनो मिन से-क़तिल माज़ी व सेक़ती फ़िल मह्या वल ममाते फ़मा क़ालहू लकुम फ़-अन्नी यक़ूलोहू व मा अद्दा इलैकुम फ़-अन्नी योवद्दीहे.

येह अबू अ़म्र मोअ़्तबर और अमीन हैं। गुज़श्ता इमाम अ़लैहिस्सलाम **के भी मूरिदे एअ़्तेमाद थे और मेरी ज़िंदगी-ओ-मौत में मेरे भी मूरिदे एअ़्तेमाद और**

अमीन हैं जो कुछ तुम से बयान करते हैं मेरी तरफ़ से बयान करते हैं जो कुछ तुम तक पहुँचाते हैं मेरी जानिब से पहुँचाते हैं।

(ग़ैबतः शैख़ुत्ताएफ़ा अबी जअ़्फ़र मोहम्मद बिन अल हसन तूसी, स॰ २१५)

अपने अ़ज़ीम कारनामों की बेना पर इमाम हसन अ़सकरी अलैहिस्सलाम **की वफ़ात के बअ़्द बारहवें इमाम हज़रत महदी** अलैहिस्सलाम **के भी नाएब मुक़र्रर हुए। इमाम** अलैहिस्सलाम **ने उनके इन्तेक़ाल पर उनके फ़र्ज़ंद मोहम्मद बिन उ़स्मान को इस तरह तअ़्ज़ियत पेश कीः**

اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ، تَسْلِيْمًا لِاَمْرِهٖ وَ رِضَاءً بِقَضَائِهٖ عَاشَ اَبُوْكَ سَعِيْدًا وَّمَاتَ حَمِيْدًا فَرَحِمَهُ اللّٰهُ وَ اَلْحَقَهُ بِاَوْلِيَائِهٖ وَمَوَالِيْهِ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ فَلَمْ يَزَلْ مُجْتَهِدًا فِيْ اَمْرِهِمْ سَاعِيًا فِيْمَا يُقَرِّبُهُ اِلَى اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ وَاِلَيْهِمْ نَضَّرَ اللّٰهُ وَجْهَهٗ وَاَقَالَ عَثْرَتَهٗ۔

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊ-न, तस्लीमन लेअम्रेही व रेज़ाअन बेक़ज़ाएही आ-श अबू-क सईदन व मा-त हमीदन फ़-रहेमहुल्लाहो व अल्ह-क़हू बेऔलियाएही व मवालीहे अलैहिमुस्सलामो फ़-लम यज़ल मुज्तहेदन फ़ी अम्रेहिम साएयन फ़ीमा युक़र्र-बहू एलल्लाहे अ़ज़्ज़ व जल्ल व इलैहिम नज़्ज़रल्लाहो वज्हहू व अक़ा-ल अ़स्र-र-तहू.

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन फ़रमाने ख़ुदा के सामने तस्लीम और उसके फ़ैसले पर राज़ी हैं। तुम्हारे

वालिद ने कामियाब ज़िंदगी बसर की और बा इज़्ज़त वफ़ात पाई। ख़ुदा उन पर रहमत नाज़िल करे। उनको अपने औलिया और सरदारों के साथ मिला दे। वोह हमेशा इस बात की कोशिश करते थे जो ख़ुदा और औलिया से नज़्दीक कर सकती थी। ख़ुदा उनके चेहरे को शाद-ओ-आबाद रखे।

(तारीख़ुल ग़ैबतिस्सुग़रा, मोहम्मद अस्सद्र, स० ४०१)

(२) अबू जअ़्फ़र मोहम्मद बिन उ़स्मान

आप इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के दूसरे नाएबे ख़ास थे उससे पहले ग्यारहवें इमाम के भी नाएब रह चुके हैं। आप के बारे में कहा गया है:

"शीओं के नज़्दीक आप की अ़ज़मत-ओ-बुज़ुर्गी इस क़द्र मशहूर-ओ-मअ़्रूफ़ है कि किसी बयान की ज़रूरत नहीं है।"

(तन्क़ीहुल मक़ाले मामक़ानी, जि० ३, स० १४९)

इमाम हसन अ़सकरी अलैहिस्सलाम ने एक सहाबी से उनके और उनके वालिद उ़स्मान बिन सईद के बारे में फ़रमाया:

اَلْعَمْرِوِیُّ وَابْنُهُ ثِقَتَانِ فَمَا اَدَّیَا اِلَیْكَ فَعَنِّیْ یُؤَدِّیَانِ وَمَا قَالَا لَكَ فَعَنِّیْ یَقُوْلَانِ فَاسْمَعْ لَهُمَا وَاَطِعْهُمَا فَاِنَّهُمَا الثِّقَتَانِ الْمَامُوْنَانِ۔

अल-अम्री वब्नोहू से-क़ताने फ़मा अद्दया इलै-क फ़-अन्नी योवद्दयाने व मा क़ाला ल-क फ़-अन्नी यक़ूलाने फ़स्मअ़ लहोमा व अतेअ़्होमा

फ़-इन्नहोमस्स-क़तानिल मामूनाने.

अ़म्री और उनके फ़र्ज़ंद दोनों मूरिदे एअ़्तेमाद हैं। वोह दोनों जो कुछ तुम तक पहुँचाएं मेरी तरफ़ से पहुँचाते हैं और जो कुछ तुम से कहें मेरी तरफ़ से कहते हैं। उनकी बातों को ग़ौर से सुनो और उनकी इताअ़त करो क्यूंकि दोनों मूरिदे एअ़्तेमाद और अमीन हैं।

(ग़ैबतः शैख़ तूसी, स॰ २१९)

ख़ुद इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम **ने उनके बारे में फ़रमायाः**

فَاِنَّهُ ثِقَتِیْ وَ کِتَابُهُ کِتَابِیْ۔

फ़-इन्नहू से-क़ती व किताबोहू किताबी.

''वोह मेरा मूरिदे एअ़्तेमाद है, उनका मकतूब मेरे मकतूब के बराबर है।''

(ग़ैबतः शैख़ तूसी, स॰ २२०)

(३) अबुल क़ासिम हुसैन बिन रौह नोबख़्ती

अबू जअ़्फ़र मोहम्मद बिन उ़स्मान, इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के दूसरे नाएब ने आप के बारे में फ़रमायाः

येह हुसैन बिन रौह इब्ने अबू बह्र नोबख़्ती मेरे जानशीन हैं। तुम्हारे और इमाम के दरमियान सफ़ीर हैं और उनके मोअ़्तमिद और बावसूक़ हैं तुम लोग अपने उमूर में उनकी तरफ़ रुजूअ़् करो और अपने कामों में उन पर एअ़्तेमाद करो। मेरी येह ज़िम्मेदारी

थी जिसको मैंने पहुँचा दिया।

(तारीख़ुलग़ैबतिस्सुग़रा, मोहम्मद अस्सद्र, स० ४०७)

जनाब शैख़ तूसी रह्मतुल्लाह अलैहे **ने उनके बारे में फ़रमायाः**

हुसैन बिन रौह नोबख़्ती दोस्त-ओ-दुश्मन हर एक के नज़्दीक सब से ज़्यादा आलिम थे।

(ग़ैबते शैख़ तूसी, स. २३६)

उनकी नेयाबत की सदाक़त के मुतअ़ल्लिक़ मुख़ालेफ़ीन ने भी एअ़्तेराफ़ किया है। शलमग़ानी का शुमार उन अफ़राद में होता है जिन्होंने नेयाबत का झूठा दअ़्वा किया था। हुसैन बिन रौह ने इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम **के हुक्म से उसकी हक़ीक़त और किज़्ब को वाज़ेह कर दिया। आख़िरकार मजबूर हो कर शलमग़ानी को एअ़्तेराफ़ करना ही पड़ा।**

''मेरे और ख़ुदा के दरमियान सज़ावार नहीं है कि मैं उन के (हुसैन बिन रौह) मुतअ़ल्लिक़ सच के अ़लावा कुछ और कहूं। गरचे मेरे सिलसिले में उनका जुर्म बहुत संगीन है। येह शख़्स इमामे ज़माना की जानिब से कामों के लिए मन्सूब किया गया है और शीओं को यह हक़ नहीं है कि उनसे रूगर्दां हो जाएं।

(बेहारुल अनवार, किताबुल ग़ैबा, बाब २१ नक़्ल अज़ ग़ैबत, शल्मग़ानी)

(४) अबुल हसन अ़ली बिन मोहम्मद सैमुरी

येह अ़ज़ीमुल क़द्र जलीलुल मर्तबत इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के आख़री नाएबे ख़ास थे। इत्तेफ़ाक़ी तौर पर १५ शअ़्बान ३२९ हि. ही को आप की वफ़ात हुई। जनाब हुसैन बिन रौह ने आप का तआ़रुफ़ इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के नाएब के उ़न्वान से कराया था। नव्वाबे अर्बआ़ के ज़रीए़ इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की आख़री तौक़ीअ़् आप ही के ज़रीए़ मिली है। उसमें इमाम अ़लैहिस्सलाम ने आप को ख़ेताब फ़रमाया है और उसमें अ़ली बिन मोहम्मद की वफ़ात और बाबे नेयाबत के बंद हो जाने की ख़बर है।

(ग़ैबते तूसी, स॰ २४२-२४३)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ - يَا عَلِيُّ بْنُ مُحَمَّدٍ السَّيْمُرِيُّ اَعْظَمَ اللّٰهُ اَجْرَ اِخْوَانِكَ فِيْكَ فَاِنَّكَ مَيِّتٌ مَّا بَيْنَكَ وَ بَيْنَ سِتَّةِ اَيَّامٍ فَاجْمَعْ اَمْرَكَ وَلَا تُوْصِ اِلٰى اَحَدٍ فَيَقُوْمُ مَقَامَكَ بَعْدَ وَفَاتِكَ فَقَدْ وَقَعَتِ الْغَيْبَةُ التَّامَّةُ فَلَا ظُهُوْرَ اِلَّا بَعْدَ اِذْنِ اللّٰهِ تَعَالٰى ذِكْرُهُ وَ ذَالِكَ بَعْدَ طُوْلِ الْاَمَدِ وَ قَسْوَةِ الْقُلُوْبِ وَامْتِلَآءِ الْاَرْضِ جَوْرًا وَّ سَيَاتِيْ لِشِيْعَتِيْ مَنْ يَّدَّعِي الْمُشَاهِدَةَ اَلَا فَمَنِ الدَّعٰى الْمُشَاهِدَةَ قَبْلَ خُرُوْجِ السُّفْيَانِيْ وَالصَّيْحَةِ فَهُوَ كَذَّابٌ مُّفْتَرٍ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ۔

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम - या अ़लीयुब्नो मोहम्मदेनिस् सैमुरी अअ़्ज़मल्लाहो अज-र इख़्वाने-क फ़ी-क फ़इन्न-क मय्येतुन मा बै-न-क व बै-न सित्तते

अय्यामिन फ़ज्मअ़ू अम्र-क वला तूसे एला अ-ह़-दिन फ़यक़ूमो मक़ा-म-क बअ़ू-द वफ़ाते-क फ़क़द व-क़-अ़तिल ग़ैबतुत्ताम्मतो फ़ला ज़ुहू-र इल्ला बअ़ू-द इज़्निल्लाहे तआ़ला ज़िक्रोहू व ज़ाले-क बअ़ूद तूलिल अ-म-दे व क़स्वतिल क़ुलूबे वम्तेलाइल अर्ज़े जौरन व सयाती लेशीअ़ती मँय्यद्दइल मुशाहे-द-त अला फ़-म-निद् द-अ़ल मुशाहे-द-त क़बू-ल ख़ुरूजिस् सुफ़्यानी वस्सैह़ते फ़हो-व कज़्ज़ाबुम मुफ़्तरुन व ला ह़ौ-ल व ला क़ूव-त इल्ला बिल्लाहिल अ़लीयिल अ़ज़ीमे.

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम - ऐ अ़ली बिन मोह़म्मद सैमुरी तुम्हारी वफ़ात के बारे में ख़ुदा तुम्हारे भाइयों के अज्र को अ़ज़ीम करे क्यूंकि छः दिन के अंदर तुम्हारा इन्तेक़ाल हो जाएगा। बस अपने काम को दुरुस्त करो और किसी को अपने बअ़ूद अपना जानशीन मुअ़य्यन न करो। अब मुकम्मल ग़ैबत वाक़ेअ़ू हो गई है। अब मैं ख़ुदा के हुक्म से ज़ाहिर हूँगा और येह एक मुद्दत गुज़रने, क़सावते क़ल्ब और ज़मीन के ज़ुल्म-ओ-जौर से पुर होने के बअ़ूद। अ़न्क़रीब शीओं में ऐसे अफ़राद पैदा होंगे जो मेरे मुशाहिदे का दअ़्वा करेंगे। मुतवज्जेह रहो जो कोई भी सुफ़्यानी के ख़ुरूज और आसमानी आवाज़ से पहले मुशाहिदे का दअ़्वा करे वोह झूठा है, इफ़्तेरा पर्दाज़ है। व ला ह़ौ-ल व ला क़ू-व-त इल्ला

बिल्लाहिल अ़लीयिल अ़ज़ीम।

(मुन्तख़बुल असर, स॰ ४९४)

जैसा कि मुलाहेज़ा फ़रमाया - इस तौक़ीअ़ में नेयाबते ख़ास्सा के दरवाज़े के मसदूद होने का तज़्केरा है जिस के आख़री नाएब अ़ली बिन मोहम्मद सैमुरी थे। इस तौक़ीअ़ के मुताबिक़ जो कोई भी इमाम की नेयाबते ख़ास्सा और इमाम अ़लैहिस्सलाम के मुशाहिदे का (यअ़नी वोह कहे कि उसका जब जी चाहे इमाम का दीदार कर सकता है) दअ़वा करे वोह झूठा है और इफ़्तेरा पर्दाज़ है। ग़ैबते कुबरा के ज़माने में वोह तमाम ख़ुश क़िस्मत अफ़राद जिन्हें इमाम अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होने का शरफ़ हासिल हुआ है उनमें से किसी ने भी इस तरह का दअ़वा नहीं किया है।

नव्वाबे अर्बअ़ा पर लोगों को भरपूर एअ़तेमाद और मुकम्मल भरोसा था। उन हज़रात के तक़्वा, परहेज़गारी, इल्म-ओ-ईमान पर ज़रा भी शक-ओ-शुब्हा नहीं था। लेकिन जब तक हज़रत की एनायतों और तवज्जोहात की बेना पर उन हज़रात से करामतें ज़ाहिर न होतीं लोग उनकी नेयाबत के दअ़वा की तसदीक़ न करते।

(ख़राएज, क़ुतुबुद्दीन रावंदी, नक़्ल अज़ बेहारुल अनवार,
अ़ल्लामा मजलिसी, जि॰ १३, बाब २१)

येह नाएबीन अपनी मुश्केलात और सवालात और उ़लमा की मुश्केलात और मसाएल इमाम अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में पेश करते थे। हज़रत इन्हीं हज़रात के ज़रीए़ जवाबात और हल, तौक़ीअ़ की सूरत में बयान फ़रमाते थे।

उन तौक़ीआत में बहुत ज़्यादा हस्सास उमूर और अक़ाएद के दुश्वार मसाएल का हल नज़र आता है। उन्हीं मसाएल में से एक येह है कि नित नए मसाएल में शीओं की ज़िम्मेदारी क्या है। और ग़ैबते कुबरा के ज़माने में जो नऐ मसाएल रूनुमा हों उनमें शीओं को क्या करना चाहिए?

इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की एक तौक़ीअ् जो शीओं के गुले सर सबद जनाब इस्हाक़ बिन यअ्क़ूब के नाम सादिर हुई है उस में ग़ैबत के ज़माने में शीओं की ज़िम्मेदारियों को बयान फ़रमाया है। सदियों से उस दस्तूरुल अमल पर अमल हो रहा है। और इस्लामी तअ्लीमात की अबदीयत का एक राज़ है। हम इंशाअल्लाह आइंदा ग़ैबत के ज़माने में रहबरी के मौज़ूअ् में इस मसअले पर तफ़सीली बह्स करेंगे।

बहरहाल नेहायत ही ईमान और एअ्तेमाद के साथ बरसों येह हज़रात इमाम अलैहिस्सलाम और अवाम के दरमियान वास्तए फ़ैज़ बने रहे। यहां तक ३२९ हि. में अली बिन मोहम्मद सैमुरी की वफ़ात से येह सिलसिला मसदूद हो गया और ख़ुदावंद आलम की मशीयत की बेना पर इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की ग़ैबते कुबरा का दौर शुरू हो गया। वही ग़ैबत जिस की मुद्दतों पहले पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और शीओं के अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम ख़बर दे चुके थे। जिस में मुसलमानों का सख़्त इम्तेहान लिया जाएगा। यहां तक कि हज़रत अलैहिस्सलाम ख़ुदावंद आलम के हुक्म से ज़ाहिर होंगे और तमाम एलाही वअ्दों को अमली जामा पहनाएंगे।

तीसरा हिस्सा

ग़ैबते कुबरा

३२९ हि. से ग़ैबते कुबरा का आग़ाज़ हो गया और इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की नेयाबते ख़ास्सा का सिलसिला मसदूद हो गया। अगर कोई ग़ैबते कुबरा के ज़माने में बाबियत और नेयाबते ख़ास्सा का दअ़्वा करे तो इमाम अलैहिस्सलाम के बक़ौल वोह झूठा है और इफ़्तेरा पर्दाज़ है।

अइम्मए मअ़्सूमीन अलैहिमुस्सलाम की अहादीस में ग़ैबते कुबरा के ज़माने में इमाम के वजूद को बादलों में पोशीदा आफ़ताब से तश्बीह दी गई है। जैसे सूरज बादलों की ओट में रह कर भी जानदारों की ज़िंदगी का सबब है। इमाम अलैहिस्सलाम भी ग़ैबत के पर्दे में सारी काएनात की बक़ा का सबब हैं।

ग़ैबते कुबरा के ज़माने में बहुत से अफ़राद इमाम की ख़िदमत में शरफ़याब हुए हैं लेकिन किसी ने न तो मुशाहिदा-ओ-नेयाबत का

दअ़्वा किया और न ही इस बात का दअ़्वा किया कि वोह नाएबीने ख़ास की मानिंद जब चाहें इमाम अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हो सकते हैं।

इमाम अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमते अक़्दस में शरफ़याब होने वाले ख़ुश नसीब अफ़राद का तज़्केरा और उनके मुतअ़ल्लिक़ हज़रत की एनायतों का ज़िक्र मोअ़्तबर किताबों में मौजूद है। (नज्मुस्साक़िब, हाज मिर्ज़ा हुसैन तबरसी नूरी, बाब ७) उन नसीब वाले अफ़राद में दुनियाए इस्लाम के बलंद पाया आ़लिम-ओ-मुतकल्लिम अ़ल्लामा हिल्ली, बलंद मर्तबा फ़क़ीह मुक़द्दस अरदबेली, अ़ज़ीमुश्शान मोहद्दिस सय्यद बिन ताऊस और आ़ली मर्तबत दानिशमंद सय्यद बहरुल उ़लूम और दूसरे ख़ुश नसीबों का तज़्केरा किया जा सकता है।

हां उन लोगों ने आफ़ताबे इमामत को ख़ुद अपनी आँखों से देखा है और उनका दिल मअ़्रेफ़त-ओ-मोहब्बते इमाम से माला माल हो गया। उन लोगों ने अपने दिल नशीं अंदाज़ में दूसरों को हज़रत के वजूदे मुक़द्दस से आगाह फ़रमाया है।

अपने फ़र्ज़ंद के नाम सय्यद बिन ताऊस की वसीयत को बतौर मिसाल पेश किया जा सकता है। येह वसीयत उन्होंने ६५० हि. में तहरीर फ़रमाई है। इस तहरीर में दीदार का दअ़्वा किये बग़ैर इशारे इशारे में बात समझाई गई है।

> .... ऐ मेरे फ़र्ज़ंद अगर हक़ाएक़ और रुमूज़ के इन्केशाफ़ की तौफ़ीक़ तुम्हें हासिल हो जाए तो मैं तुम्हें हज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम के बारे में इस तरह आगाह

करूं कि कोई शक-ओ-शुब्हा बाक़ी न रह जाए। अ़क़्ली दलीलों और रवायतों से बे नियाज़ हो जाओ। क्यूंकि यक़ीनन ह़ज़रत ज़िंदा हैं और जब तक रह़मान-ओ-रह़ीम ख़ुदा तदबीरे उमूर की इजाज़त न दे वोह उमूर के इज़हार से मअ़ज़ूर हैं। येह बात सिर्फ़ ह़ज़रत की ज़ात से मख़्सूस नहीं है बल्कि बहुत से अंबिया और औसिया में भी येह बात पाई जाती है। इस बात का यक़ीन कर लो और उसको अपना दीन-ओ-ईमान क़रार दो और येह जान लो कि ह़ज़रत के बारे में तुम्हारे बाप की मअ़रेफ़त सूरज की मअ़रेफ़त से कहीं ज़्यादा रोशन और वाज़ेह है।

(कशफ़ुल हुज्जा, फ़स्ल ७५, स० ७४)

इमाम अलैहिस्सलाम की ज़ेयारत से न सिर्फ़ शीआ़ उ़लमा ही मुस्तफ़ीद हुए बल्कि बहुत से आ़म मुत्तक़ी और परहेज़गार अफ़राद को भी येह शरफ़ नसीब हुआ। यहां तक कि बअ़ज़ ऐसे अफ़राद भी नज़र आते हैं जो गुनाहों में डूबे हुए थे मगर उसके बाद वोह शर्मिंदा हुए और सिद्क़ दिल से तौबा कर ली। और उनका दिल इमाम अलैहिस्सलाम के इश्क़ से माला माल और मुनव्वर हो गया। बसा औक़ात तो ऐसा भी हुआ है कि बअ़ज़ अह्ले सुन्नत अफ़राद को भी येह शरफ़ नसीब हुआ है। उन ख़ुश नसीबों में ह़सन इराक़ी का नाम लिया जा सकता है। येह शख़्स जवानी के दिनों में ऐ़श-ओ-नोश में वक़्त बसर करता था लेकिन एक मर्तबा ख़ाबे ग़फ़लत से बेदार होता है और ख़ुद से सवाल करता है क्या मैं इन्हीं कामों के लिए पैदा किया गया हूं?

फ़ौरन ऐश-ओ-नोश की बज़्म से उठता है और सीधे मस्जिद चला जाता है। इत्तेफ़ाक़न मस्जिद में वाएज़ इमाम महदी अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ तज़्केरा करता है। इराक़ी अंदर ही अंदर मुन्क़लिब हो जाता है और हज़रत के इश्क़ का ज्वाला मुखी उसके वजूद में फट पड़ता है। उसके बअ्द हर नमाज़ के बअ्द सज्दे में सर रख कर ख़ुदा की बारगाह में हज़रत की ज़ेयारत की दुआएं मांगता है, यहां तक कि दुआ क़बूल होती है और सात दिन तक हज़रत की बारगाह में रहता है और कामियाबी-ओ-सआदत की राहें सीखता है।

उसके बअ्द यही शख़्स ज़माने का बुज़ुर्ग-ओ-पार्सा बन जाता है। इस्लाम के बड़े बड़े उलमा उसका एहतेराम करते हैं। इस वाक़ए को नक़्ल करने वाले मशहूर सुन्नी आलिम अब्दुल वह्हाब शेअ्रानी (इस वाक़ए के नाक़िल) इस शख़्स को मेरे आक़ा मेरे बुज़ुर्ग हसन इराक़ी ... के नाम से याद करते हैं।

ग़ैबते कुबरा के ज़माने में बुज़ुर्ग उलमा के लिए भी तौक़ीआत सादिर हुई हैं। जिस में रोज़ मर्रा की मुश्केलात और जदीद मसाएल का हल पेश किया गया है उन तौक़ीआत में एक तौक़ीअ् बुज़ुर्ग मर्तबा आलिम जनाब मोहम्मद बिन मोहम्मद बिन नोअ्मान (शैख़ मुफ़ीद) के मुतअल्लिक़ ४१० हि. में सादिर हुई है।

जनाब शैख़ मुफ़ीद इल्म-ओ-तक़्वा के ख़ास मर्तबे पर फ़ाएज़ थे। येह तौक़ीअ् क्या मिली गोया उनको उनकी मुसलसल ज़हमतों और मशक़्क़तों का सिला मिल गया। सदियां गुज़रने के बअ्द आज भी लोग उनको इज़्ज़त-ओ-एहतेराम की निगाह से देखते हैं।

हम यहां इस मुबारक तौक़ीअ़ के बअ़्ज़ हिस्से पेश करते हैं जिस से येह मअ़्लूम हो जाता है कि इमाम अ़लैहिस्सलाम का इल्म किस तरह शीअ़ों के तमाम हालात पर मुहीत है और उसी के साथ साथ बड़ी उम्मीद बंध जाती है।

فَاِنَّا يُحِيْطُ عِلْمُنَا بِاَنْبَائِكُمْ وَلَا يَفُوْتُ عَنَّا شَيْءٌ مِّنْ اَخْبَارِكُمْ وَ مَعْرِفَتُنَا بِالذَّلَلِ الَّذِيْ اَصْبَابُكُمْ، مُذْ جَنَحَ كَثِيْرٌ مِّنْكُمْ اِلٰى مَا كَانَ السَّلَفُ الصَّالِحُ عَنْهُ شَاسِعًا وَ نَبَذُوْا الْعَهْدَ الْمَاخُوْذَ مِنْهُمْ وَرَاءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ. اِنَّا غَيْرُ مُهْمِلِيْنَ لِمُرَاعَاتِكُمْ وَلَا نَاسِيْنَ لِذِكْرِكُمْ. وَ لَوْلَا ذَالِكَ لَنَزَلَ بِكُمُ اللَّاوَا، وَاصْطَلَمَتْكُمُ الْاَعْدَاءُ فَاتَّقُوْا اللهَ جَلَّ جَلَالُهٗ.

फ़इन्ना युहीतो इ़ल्मोना बेअम्बाएकुम व ला यफ़ूतो अ़न्ना शैउन मिन अख़्बारेकुम व मअ़्रेफ़तोना बिज़्ज़-ललिल्लज़ी अस्बाबोकुम, मुज़्ज-न-ह कसीरुम मिन्कुम एला मा कानस्स-लफ़ुस्सालेहो अ़न्हो शासेअ़ंव व न-ब-ज़ुल अ़ह्दल माख़ू-ज़ मिन्हुम वरा-अ ज़ुहूरेहिम क-अन्नहुम ला यअ़्-लमू-न इन्ना ग़ैरो मुह्मेली-न लेमुराआतेकुम व ला नासी-न लेज़िक्रेकुम व लौ ला ज़ाले-क ल-न-ज़-ल बेकुमुल् लअवाउ, वस्त-ल-मत्कुमुल अ़अ़्दाओ फ़त्तकुल्ला-ह जल्-ल जलालोहू.

हम तुम्हारी तमाम बातों की ख़बर रखते हैं और कोई

भी बात हमारी नज़रों से पोशीदा नहीं है। तुम से जो लग़ज़िशें हुई हैं उसे हम जानते हैं। तुम में से बहुतों ने ऐसे अअ्माल की तरफ़ रुख़ किया है जिस से तुम्हारे सालेह बुज़ुर्ग दूर रहते थे। जो अ़ह्द-ओ-पैमान को जानते ही नहीं हैं। हम तुम्हारी देख रेख में कमी नहीं करते और तुम्हारी याद से ग़ाफ़िल नहीं हैं। अगर ऐसा न होता तो मुसीबतें तुम्हारे सरों पर नाज़िल होतीं और तुम्हारे दुश्मन तुम्हें तबाह कर देते। पस ख़ुदा को याद करो और तक़्वा इख़्तेयार करो।

(बेहारुल अनवार, जि० ५२, स० १७५)

ग़ैबते कुबरा के ज़माने में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की गरां क़द्र तहरीर पाक दिल और पाकीज़ा ख़मीर शीओं के लिए राहनुमा और दस्तूरुल अ़मल है। येह तौक़ीआ़त मोअ़्तबर किताबों में मौजूद हैं।

(कमालुद्दीन, बाब ४९; बेहारुल अनवार, जि० १३, बाब ३६; एहतेजाज)

बहरहाल इस ग़ैबते कुबरा के ज़माने में शीआ़ ज़िंदगी बसर कर रहे हैं और अपनी तारीख़ के हस्सास तरीन दौर से गुज़र रहे हैं।

मुस्तक़्बिल पर एक नज़र

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के अक़ीदे ने शीओं को ऐसा क़द आवर आइना अता कर दिया है जिस में उनको अपने मज़हब की तमाम खुसूसियात नज़र आती हैं। इसी लिए शीओं की हमेशा से येह कोशिश रही है और है कि इस नूर को ज़िंदा रखें और इस नग़मे को अबदीयत अता करें। क्यूंकि इस आइना में शीआ खुद को देखता है कि इंसान की बलंदी-ओ-बरतरी के बारे में उसकी तमाम आर्ज़ूएं और उम्मीदें पूरी होती नज़र आ रही हैं।

वोह तमाम इंसानों को देखता है कि चार-ओ-नाचार खुदा की तरफ़ आ रहे हैं और इंसानियत के उसूल-ओ-ज़वाबित को तस्लीम कर रहे हैं।

वोह दुनिया को देखता है कि उसके गोशे गोशे में अद्ल-ओ-इंसाफ़ की हुक्मरानी है।

वोह अपने मज़हब को देखता है कि उसके सहीह अक़ीदे की पनाह में तारीख़ के नशेब-ओ-फ़राज़ और ऊंच नीच से गुज़रने के बावूजद

उसी तरह अपनी जगह पर क़ाएम-ओ-बरक़रार और मोहकम-ओ-उस्तवार है और आख़िर कार तमाम ख़यालो और ख़ुद साख़्ता मज़ाहिब को एक किनारे डाल कर ख़ुद सारी दुनिया पर छा गया है।

आख़िर में वोह इंसानी मआशरे को देखता है। जिस को तमाम मकातिबे फ़िक्र ने अपनी जुम्ला रुसवाइयों और इंसान के लिए इंसान के साख़्ता क़वानीन की बुरी तरह नाकामियों के बअ्द हर तरह से ना उम्मीद कर दिया है। इस वक़्त वोह एक उक़्दा कुशा के ज़ेरे साया है और एक रहबर, एक क़ानून और एक इलाही क़ानून के सामने सरे तस्लीम ख़म कर चुका है।

इस ज़ावियए निगाह से शीआ इंसानी मआशरे के मुस्तक़बिल के इर्द गिर्द एक नूर का हाला देख रहा है। अक़ीदए महदी के मुतअल्लिक़ बह्स-ओ-गुफ़्तुगू येह हयात आफ़रीं और तअ्मीर साज़ अक़ीदा है कि 'इमाम महदी अलैहिस्सलाम ' तमाम कोशिशों को कामियाबियों से हमकनार करने वाले हैं। येह इन्तेज़ार सई व कोशिश और जद्द-ओ-जेहद का बेहतरीन वसीला है। चूंकि वोह अपनी जल्वा नुमाइयों में, इलाही क़वानीन और आसमानी रहबर की क़यादत में दुनिया के अज़ीम तरीन इन्क़ेलाब को देख रहा है। इस बेना पर इस अक़ीदए इमाम महदी अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ बह्स-ओ-गुफ़्तुगू अपने दामन में दो अज़ीम मक़्सद लिये हुए है।

(१) बा मक़्सद काएनात

(२) सारी दुनिया के लिए एक मआशरे की तश्कील की ज़रूरत

और येह दोनों बातें ग़ज़ब की हस्सास और बे पनाह अहम हैं।

इस राह में शीआ एक ऐसे कारवां के क़ाफ़ेला सालार हैं जिस में दीन-ओ-मज़हब पर यक़ीन रखने वाले और दूसरे अफ़राद भी आगे पीछे चल रहे हैं क्यूंकि नेकूकारों की कामियाबी और दुनिया की नेक अंजामी एक इलाही और आलमी रहबर का वजूद येह वोह नुक़्तए मुश्तरक है जिस में अकसर आसमानी मज़ाहिब शरीक हैं।[१]

इस कारवां में जिस चीज़ ने शीओं को क़ाफ़ेला सालार बना दिया है वोह है इस अक़ीदा के तारीक गोशों को उजागर करना और इस मकतब के सही ख़द्द-ओ-ख़ाल को नुमायाँ करना, जिस में रहबर, रहबरी, ज़हूर और एक आलमी हुकूमत के क़याम की तफ़सीर-ओ-तशरीह है। यही वजह है कि हक़ीक़ी इन्तेज़ार ने अपनी तमाम तर ख़ुसूसियात के साथ शीओं में आमादगी का जज़्बा और जोश-ओ-ख़रोश पैदा कर दिया है। इसके अलावा दूसरे दानिशवरों ने भी माज़ी और हाल में इस तरह के नज़रियात पेश किये हैं। गुज़श्ता ज़माने में अफ़लातून का मदीनए फ़ाज़ेला और उन सदियों में

१. इलाही पेशवा के ज़हूर की बशारत तमाम आसमानी मज़ाहिब में मौजूद है। इस उमूमी अक़ीदे के बअ्ज़ हिस्से इन किताबों में देखे जा सकते हैं, ''बशाराते अहदैन'' ''दौलते महदी'' और ''मौऊदे जहानी'' पहली दो किताबें डाक्टर मोहम्मद सादिक़ की हैं जबकि तीसरी किताब आयतुल्लाह ज़न्जानी की तालीफ़ है।

यूटोपिया[१] जार्जिया[२] अल्डोराडो[३] और मम्लेकते आफ़ताब[४]

येह सारी कोशिशें इंसान के मुस्तक़बिल को जन्नत नज़ीर बनाने के लिए हैं। अगर आप तरक़्क़ी याफ़्ता टेक्नालोजी के बावजूद हैरान-ओ-परेशान इंसानियत को देखना चाहते हैं तो काफ़ी है कि आप इस सदी के दानिशरों के नज़रियात का मुतालेआ करें। (एक तरफ़ आप को ज़बरदस्त एहतेयात नज़र आएगी और दूसरी तरफ़ इंसानी इल्म की ज़िम्मेदारियों की शिकस्त-ओ-रीख़्त) तरक़्क़ी और इल्मी बेदारी के बअ़्द येह उम्मीद थी कि तहक़ीक़-ओ-तफ़तीश और साइंसी तजरेबात, इल्म ज़दा इंसान की तमाम उम्मीदें पूरी कर देंगे लेकिन, ''ऐ बसा आर्ज़ू कि ख़ाक शुदा''।

१. महदूदियतहाए रुश्द (महदूदियते इर्तेक़ा) नामी किताब जिस को अमरीका की रेयासत मेसीसोटा के टेक्नालोजी इन्स्टीट्यूट के दानिशवरों की तहक़ीक़ात का निचोड़ कहा जा सकता है, उस में तहरीर है:-

---

१. यूटोपिया एक ऐसे ख़याली मअ़ाशरे का नाम है जो बेहिश्त की मानिंद है जो यूटोपियन मक़सद के बानी ''थामस मूर'' की इख़्तेराअ़्-ओ-ईजाद है।

२. जार्जिया एक मदीनए फ़ाज़ेला का नाम है जो थामस मूर का हम अ़स्र शाएर ''बर्टोल्ट ब्रश्ट'' ने पेश किया था। (बर्टोल्ट ब्रश्ट के शेअ़्री मज्मूए से नक़्ल किया गया है)

३. अल्डोराडो तारीख़े अदबीयात फ़्रांस में रोशनी की सदी के फ़लसफ़ी ''वालटेयर'' का पेश कर्दा ''मदीनए फ़ाज़ेला'' जो उसकी किताबों में देखा जा सकता है।

४. किशवरे ख़ुर्शीद (सूरज का देश) येह वोह 'मदीनए फ़ाज़ेला' है जिस का तसव्वुर मशहूर रेयाज़ीदाँ और फ़लसफ़ी ''थामस कैंम्प नैला'' ने पेश किया था और इंसानों की तवज्जोह उसकी जानिब मब्ज़ूल कराई है।

साइंस और टेक्नालोजी अपने तमामतर फ़ाएदों के बावजूद हालात को पेचीदा करने, आबादी के बे पनाह इज़ाफ़ा, आलूदगियों, और सनअ़ती मआ़शरे के वजूद और दूसरे नाख़ुशगवार असरात का सबब क़रार पाए हैं। लेकिन आज तक हम येह नहीं जान सके कि मौजूदा हालात को किस तरह कन्ट्रोल करें क्यूंकि मन पसंद मुस्तक़बिल के बारे में हम कोई क़तई और दक़ीक़ नज़र नहीं रखते। हम नहीं जानते कि साइंस और टेक्नालोजी की बेपनाह तरक़्क़ी को जिस में आबाद और बर्बाद करने की सलाहियतें पाई जाती हैं, किस रास्ते पर लगाएं।[१]

२. मशहूर फ़्रान्सीसी मेथाडोलोजिस्ट ''साइंसी रूह के हालात-ओ-शराएत'' नामी किताब में साइंस की महदूदियत के बारे में लिखता है:

साइंस कहती है मैं सिर्फ़ क़ाबिले दीद चीज़ों से तअ़ल्लुक़ रखती हूँ। येह क्यूं है? इससे मेरा कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है। मैं सिर्फ़ येह बयान करती हूं कि यह चीज़ कैसी है। कमज़ोर इंसानों की परेशानियां मेरे लिए कोई ख़ास अहमियत नहीं रखती हैं। मेरा क़ानून क़ुदरत और वुसअ़ते नज़र नहीं है। लेकिन वोह

१. किताब ''महदूदियतहाए रुश्द'' सफ़हा २३ मुक़द्दमा, येह किताब ईरान में अन्जुमने मिल्ली तबीई मनाबेअ़ और इंसानी माहोल की हेफ़ाज़त की जानिब से नश्र हुई है।

अफ़राद जो इस ग़ुर्बत, परेशानी, इज़्तेराब और तकलीफ़ देह तबाहियों के बारे में बहुत ज़्यादा हस्सास हैं और हरनानूस, रूमान रूलान, आंद्रे बर्टन, पास्तरनाक और मूरियाक जैसे अ़ज़ीम दानिशवर अफ़राद येह सोचते हैं कि साइंस सिर्फ़ तख़रीब का बाइस है तअ़्मीर का उस से कोई रब्त नहीं। और इस से ज़्यादा वाज़ेह लफ़्ज़ों में साइंस की हक़ीक़त, शख़्सीयत और ज़िंदगी को नीस्त-ओ-नाबूद कर देती है। चंद माद्दी बातों, मशीनों की ईजादात और बे जान और बेहिस चीज़ों के अंबार के अ़लावा कुछ और नहीं है या हमारे लिए कोई मअ़्ना नहीं रखती। येह ऐसी चीज़ हैं जिन के साथ तअ़्मीर का तसव्वुर नहीं किया जा सकता।[१]

और जो चीज़ें ज़ैल में ज़िक्र की जाती हैं उन में उन ख़तरनाक और भयानक हालात से इंसान को नजात दिलाने की चंद राहें हैं।

१. बर्तानिया के मशहूर फ़लसफ़ी और रेयाज़ी दाँ बट्रन्ड रसल कहते हैं कि:

''इस वक़्त फ़न्नी एअ़्तेबार से एक आ़लमी बादशाहत के लिए कोई अ़ज़ीम मुश्किल मौजूद नहीं है। हमें मजबूरन या तो एक आ़लमी हुकूमत को क़बूल करना होगा या फिर हम बरबरीयत के दौर की तरफ़ वापस

१. किताब वज़्अ़-ओ-शराएते रूह इल्मी तालीफ़ ज़ान मूरासतिया, तरजुमा डाक्टर अ़ली मोहम्मद कारदान, सफ़हा १८

हो जाएं या नस्ले इन्सानी की तबाही पर राज़ी रहें।''

(किताब 'तासीरे इल्म बर इज्तेमाअ़' बट्रन्ड रसल, स० ५६)

२. अक़वामे मुत्तहेदा के साबिक़ सरबराह एडवर्ड हैम्बर का बयान है!

''आज भी लाखों अफ़राद ज़ुल्म-ओ-इस्तेब्दाद, फ़क्र और ना उम्मीदी का शिकार हैं। रोज़ बरोज़ नए ख़तरात इंसान को घेर रहे हैं। इन अ़ज़ीम पुराने और नए मसाएल से निपटने और ख़ासकर सुल्ह बरक़रार रखने के लिए एक ताक़तवर अक़वामे मुत्तहेदा की ज़रूरत है ...हुकूमतों का फ़रीज़ा है कि रफ़्ता रफ़्ता अपनी हाकेमीयत से दस्तबरदार हो जाएं और सारी दुनिया को एक समाज की नज़र से देखें।''

(माहनामा तेहरान एक्नोमिस्ट, शुमारा ८५९, आबान १३४९, स० ६)

३. मशहूर-ओ-मअ़रूफ़ हम अ़स्त्र माहिरे फ़िज़िक्स अलबर्ट आइन्सटाइन वहदत मआ़शरे की ज़बरदस्त ज़रूरत के बारे में कहता है:

'दुनिया की कौमें किसी रंग-ओ-नस्ल से तअ़ल्लुक़ रखती हों सब को एक परचम तले सिद्क़-ओ-सफ़ा, सुल्ह-ओ-दोस्ती और बराबरी-ओ-बरादरी की ज़िंदगी बसर करना चाहिए।'

(किताब 'मफ़हूमे निस्बीयत' अलबर्ट आइन्सटाइन, स० ३५)

इंसान की दास्तान किस क़द्र सबक़ आमोज़ है कि माज़ी में तमाम

शिकस्तों और इंसानी मसाएल के हल करने के सिलसिले में तमाम मन्सूबों के नाकाम हो जाने के बअ़्द भी अपनी अ़क़्ल-ओ-इल्म पर भरोसा करके नई राहें तलाश कर रहा है। ऐसा लगता है कि उसको कहीं ठोकर लगी ही नहीं और ख़रगोश की मानिंद बग़ैर किसी इरादे के तरह तरह के मकातिबे फ़िक्र ईजाद करने वालों और दुनिया की तजरेबागाह में नए नए नक़्शे बनाने वालों के हाथों गिरफ़्तार ही नहीं हुआ।

यहां येह बात क़ाबिले तवज्जोह है कि एक आ़लमी हुकूमत के नज़रिये के सिलसिले में हम उन दानिशवरों के मुक़ल्लिद नहीं हैं और येह बात हमने उन से मुतास्सिर हो कर नहीं कही है और न हम ने एक भुलाए हुए अ़क़ीदे को दोबारा याद किया है। बल्कि बात इसके बिल्कुल बर ख़ेलाफ़ है। दर अस्ल येह हमारा ही नज़रिया है कि इंसान की इस फ़ितरी ज़रूरत को जिस की तरफ़ इस वक़्त के दानिशवर मुतवज्जेह हुए हैं, सदियों पहले बयान किया जा चुका है। यही बात सरगर्दां इंसान को नजात दिला सकती है और इसका वाहिद रास्ता ख़ुदा की जानिब से मुक़र्रर शुदा रहबर को दिल-ओ-जान से क़बूल करना है।

येह बात बयान कर चुके हैं कि शीआ़ ऐसे कारवाँ की क़यादत कर रहे हैं जो इंसानी मआ़शरे की जुम्ला परेशानियों का हल ख़ुदाई रहबर के साए में तलाश करने में कोशां है। इसका मतलब येह नहीं कि मुसलमानों के तमाम फ़िर्क़ों में सिर्फ़ शीआ़ येह अ़क़ीदा रखते हैं। काश कि वोह लोग जो इस तरह की बातें करते हैं अगर वोह

जाहिलाना तअ़स्सुब का शिकार न हों और सिर्फ़ एक मर्तबा आ़लेमाना और मुन्सेफ़ाना तौर पर इस मौज़ूअ़ पर नज़र करें और अगर ह़क़ को तलाश करना चाहते हैं तो ज़रा सुन्नी किताबों का मुतालेआ़ करें। ज़ैल में जो बातें बयान की जा रही हैं वोह इस अ़क़ीदे की तरजुमानी कर रही हैं जिस पर इस्लाम के तमाम फ़िर्क़े मुत्तफ़िक़ हैं।

(अ) सेहाहे सित्ता के मशहूर शारेह और अल अज़हर यूनिवर्सिटी के मअ़रूफ़ उस्ताद शेख़ ''मन्सूर अ़ली नासिफ़'' कहते हैं:

> उ़लमाए अह्ले सुन्नत में येह बात मशहूर है कि आख़री ज़माने में पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के ख़ानदान से एक महदी का ज़हूर होगा। इस्लामी मुमालिक पर हुकूमत करेगा। मुसलमान भी उसकी पैरवी करेंगे। महदी लोगों के दरमियान अ़द्ल क़ाएम करेंगे, दीने इस्लाम की ताईद करेंगे। महदी अ़लैहिस्सलाम के तअ़ल्लुक़ से ह़दीसें हमारे मुन्तख़ब बुज़ुर्ग मोह़द्देसीन की जमाअ़त जैसे अबू दाऊद, तिरमिज़ी, तबरानी, इब्ने माजा, इमाम अह़मद बिन ह़ंबल और ह़ाकिम नेशापूरी ने नक़्ल की हैं। और अपनी किताबों में उसका तज़्केरा किया है।[१]

(ब) मक्का के मुत्तक़ी-ओ-बुज़ुर्ग और वाक़ई मोह़क़्क़िक़

१. किताब ''अत्ताज, जि॰ ५, बाब॰ ७, तालीफ़ शेख़ मन्सूर अ़ली नासिफ़, उस्ताज़ अल अज़हर यूनिवर्सिटी, मिस्र, 'ख़लीफ़ा महदी रज़ियल्लाह अ़न्हो' के ज़ैल में सातवें बाब में लिखा है।

''अहमद ज़ैनी दहलान'' कहते हैं:

जिन अहादीस में महदी अलैहिस्सलाम **का तज़्केरा है वोह काफ़ी ज़्यादा हैं और मुतवातिर हैं। उनमें सहीह रवायतें भी हैं, गरचे ज़ईफ़ रवायतें ज़्यादा हैं लेकिन रवायतों की फ़रावानी और रावियों की कसरत और अकसर मोहद्देसीन का अपनी किताबों में उनका तज़्केरा यक़ीनी होने के लिए मुफ़ीद है।**

(किताब 'फ़ुतूहातुल इस्लामिया' तालीफ़ अहमद ज़ैनी दहलान)

इस पर तवज्जोह रखना चाहिए कि येह अक़ीदा इस्लाम में ख़ास ख़ुसूसियात का हामिल है जैसा कि पहले इशारा किया जा चुका है येह अक़ीदा तमाम मुसलमानों के तमाम फ़िर्क़ों में मुश्तरक है और येह इस बेना पर है कि इसकी अस्ल क़ुरआन मजीद में मौजूद है। अइम्मए मअ़सूमीन अलैहिमुस्सलाम की हदीसों ने उसको और ज़्यादा रोशन कर दिया है। ज़ैल में बउ़न्वाने मिसाल चंद आयतों और रवायतों का तज़्केरा करेंगे।

(अ) आयाते क़ुरआन

१. क़ुरआन करीम इस बात की बशारत दे रहा है कि ज़मीन की हुकूमत आख़िरकार नेकूकारों और परहेज़गारों के हाथों में होगी।

اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ۔

इन्नल अर-ज़ लिल्लाहे यूरेसोहा मँय्यशाओ मिन

एबादेही वल आक़ेबतो लिल मुत्तक़ी-न.

ज़मीन ख़ुदा की है जिस को चाहता है उसे देता है, आख़िरकार परहेज़गारों को मिलेगी।

(सूरए अअ्राफ़, आयत १२८)

२. **ज़ुल्म-ओ-जौर से भरी हुई ज़मीन बे जान जिस्म की तरह है और क़ुरआन के मुताबिक़ ख़ुदा उस मुर्दा ज़मीन को अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से ज़िंदा करेगा।**

اِعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِي الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۔

एअ्लमू अन्नल्ला-ह युह्यिल अर-ज़ बअ्द मौतेहा.

जान लो कि ख़ुदा ज़मीन को मुर्दा होने के बअ्द ज़िंदा करता है।[१]

३. **क़ुरआन करीम में येह भी इर्शाद है:**

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا يَّعْبُدُوْنَنِيْ وَلَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْئًا ۔

वअ़दल्लाहुल्लज़ी-न आ-मनू मिन्कुम व अ़मेलुस्सालेहाते लयस्तख़्लेफ़न्नहुम फ़िल अर्ज़े कमस्

---

१. सूरए हदीद, आयत १७, इस आयत की तफ़सीर में इमाम मोहम्मद बाक़िर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमायाः يُحْيِي الْاَرْضَ بِالْعَدْلِ بَعْدَ مَوْتِهَا بِالْجَوْرِ युह्यिल अर-ज़ बिल अ़द्ले बअ्-द मौतेहा बिल जौरे - किताब काफ़ी)

तख़्लफ़ल्लज़ी-न मिन क़ब्लेहिम व-लयोमक्केनन्न लहुम दी-नहुमुल्लज़ितर्ज़ा लहुम व-लयोबद्देलन्नहुम मिन बअ़्दे ख़ौफ़ेहिम अम्नन यअ़्बुदूननी व ला युशरेकू-न बी शैआ.

ख़ुदावंद आ़लम ने बा अ़मल मोअ़्मेनीन से येह वअ़्दा किया है कि बअ़्ज़ लोगों को मन्सबे ख़ेलाफ़त पर फ़ाएज़ करेगा जिस तरह उसने पहले वालों को बनाया था और जिस दीन से राज़ी है उसको इस्तेहकाम देगा। अह्ले ईमान का तर्स-ओ-ख़ौफ़, अम्न-ओ-अमान में तब्दील कर देगा। ताकि उस वक़्त बग़ैर किसी ख़ौफ़ के बस ख़ुदाए वाहिद की इ़बादत करें और किसी को उसका शरीक क़रार न दें।

(सूरए नूर, आयत ५५)

४. **ख़ुदावंद आ़लम का येह भी इर्शाद है:**

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِئُوْا نُوْرَ اللهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ۔

युरीदू-न लेयुत्फ़ेऊ नूरल्लाहे बे-अफ़्वाहेहिम वल्लाहो मुतिम्मो नूरेही व लौ करेहल काफ़ेरू-न.

वोह हेदायते ख़ुदा के नूर को अपनी फूंकों से बुझाना चाहते हैं लेकिन ख़ुदा अपनी हेदायत को मुकम्मल करके रहेगा। गरचे येह बात काफ़िरों को पसन्द न

आए।

(सूरए सफ़, आयत ८)

येह क़ुरआने करीम में मौजूद ख़ुदावंद आलम की मुतअद्दिद बशारतों के चंद नमूने थे इन आयतों और बक़िया दूसरी आयतों पर ग़ौर करने से येह बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है कि इस्लाम का पैग़ाम उस वक़्त मुकम्मल होगा जब येह तमाम बातें अमली हो जाएंगी और तमाम बातिल, ख़याली और ख़ुराफ़ाती नज़रियात ख़त्म हो जाएंगे और सिर्फ़ इस्लाम, ख़ुदाए वाहिद का हक़ीक़ी दीन मशरिक़ से मग़रिब तक फैल जाएगा। तमाम लोग इसी दीन से वाबस्ता हो जाएंगे। ज़ुल्म-ओ-जफ़ा, जब्र-ओ-तअद्दी और अदमे मसावात ख़त्म हो जाएगी। ज़मीन के इस सिरे से उस सिरे तक इलाही नुमाइन्दों की हुकूमत होगी हर जगह ख़ुदा का नूर जल्वा गर होगा और ज़मीन परहेज़गारों की होगी।

हां क़ुरआन इस बात की बशारत दे रहा है कि एक दिन ज़रूर ऐसा आएगा। दुनिया के तमाम मुसलमान नेहायत शौक़ से उस दिन का इन्तेज़ार कर रहे हैं।

(ब) रवायाते नबवी

क़ुरआन करीम के बअ्द मआरिफ़े इस्लामी के ख़ज़ाने में सब से ज़्यादा गरांक़द्र और अहम चीज़ नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम के अक़वाल हैं। हर फ़र्दे मुसलमान पर रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मए

मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम के अक़वाल की पैरवी वाजिब और ज़रूरी है। क्यूंकि क़ुरआन करीम ने बहुत ही वाज़ेह अल्फ़ाज़ में रसूल अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम की इताअ़त वाजिब क़रार दिया है।

أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ

अतीउ़ल्ला-ह व अतीउ़र्रसू-ल व उलिल अम्रे मिन्कुम.

ख़ुदा, रसूल और साहेबाने अम्र की इताअ़त करो।

(सूरए निसा, आयत ५९)

शीआ़ और सुन्नी मुफ़स्सेरीन के वाज़ेह और रोशन बयानात की बेना पर ''उलिल अम्र' से मुराद अइम्मए बरहक़ हैं जो ख़ुदा के हुक्म से पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के ज़रीए़ उम्मत की रहबरी के लिए मुन्तख़ब किए गए हैं। इस सिलसिले में मज़ीद तफ़सीलात और तस्कीने ख़ातिर के लिए 'फ़ज़ाएलुल ख़म्सा मिनस्सेहाहिस् सित्ता' का मुतालेआ़ किया जा सकता है।

इस्लामी रवायतों के बह्रे ज़ख़्ख़ार में अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ की हुकूमत की बशारतें नज़र आती हैं। इसके अ़लावा इस इन्क़ेलाबे इलाही की ख़ुसूसियात भी मिलती हैं। इस इलाही रहबर का बाक़ाएदा तआ़रुफ़ कराया गया है जो इन तमाम बातों को अ़मली जामा पहनाएगा।

पैग़म्बर अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम का इर्शाद है:

لَوْ لَمْ يَبْقَ مِنَ الدُّنْيَا إِلَّا يَوْمٌ وَاحِدٌ لَطَوَّلَ اللهُ ذَالِكَ الْيَوْمَ حَتّٰى
يَبْعَثَ فِيهِ رَجُلًا مِنْ أُمَّتِي وَ مِنْ أَهْلِ بَيْتِي يُوَاطِئُ اِسْمُهُ اِسْمِي

يَمْلَاءُ الْاَرْضَ قِسْطًا وَّ عَدْلًا كَمَا مُلِئَتْ ظُلْمًا وَّ جَوْرًا۔

लौ लम यब-क़ मिनद् दुन्या इल्ला यौमुन वाहेदुन लतव्वलल्लाहो ज़ालेकल यौ-म हत्ता यब्अ-स फ़ीहे रजोलन मिन उम्मती व मिन अह्लेबैती युवाती इस्मोहू इस्मी यम्लउल अर्-ज़ क़िस्तंव व अ़द्लन कमा मुलेअत ज़ुल्मंव व जौरा.

अगर दुनिया की उ़म्र में बस एक दिन बाक़ी रह जाएगा तो ख़ुदा उस दिन को इतना तूलानी कर देगा यहां तक कि मेरी उम्मत और मेरे ख़ानदान से एक शख़्स ज़ाहिर करेगा जिस का नाम मेरा नाम (मोहम्मद) होगा। वोह दुनिया को इस तरह अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से भर देगा जिस तरह वोह ज़ुल्म-ओ-जौर से भर चुकी होगी।

(मुन्तख़बुल असर, लुत्फ़ुल्लाह साफ़ी गुल्पाएगानी, फ़स्ल २, बाब १)

अगर इस गरां क़द्र हदीस का गरांक़द्र मज़्मून सबसे ज़्यादा इसी बात की बशारत दे रहा है और लोगों को अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ की हुकूमत से आगाह कर रहा है, इलाही वअ़्दों को यक़ीनी बता रहा है। येह हदीस शीआ़ और सुन्नी दोनों के यहां मौजूद है।

एक दूसरी रवायत में पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **ने हज़रत अ़ली** अ़लैहिस्सलाम **से फ़रमाया:**

اَلْاَئِمَّةُ مِنْ بَعْدِیْ اِثْنٰی عَشَرَ اَوَّلُهُمْ اَنْتَ یَا عَلِیُّ وَ اٰخِرُهُمُ الْقَائِمُ
الَّذِیْ یَفْتَحُ اللّٰهُ عَزَّ وَ جَلَّ عَلٰی یَدَیْهِ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَ مَغَارِبَهَا۔

अल-अइम्मतो मिन बअ़्दी इस्ना अ़-श-र अव्वलोहुम अन्-त या अ़लीयो व आख़ेरोहुमुल क़ाएमुल्लज़ी यफ़्तहुल्लाहो अ़ज़्ज़ व जल्ल अ़ला यदैहे मशारेक़ल अर्-ज़े व मग़ारेबहा

मेरे बअ़्द बारह इमाम होंगे पहले तुम हो या अ़ली और आख़री क़ाएम है। वही जिस के हाथों ख़ुदा मशरिक़-ओ-मग़रिब को फ़त्ह करेगा।

(मुन्तख़बुल असर, फ़स्ल अव्वल, बाब ४)

अइम्मए मअ़सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम ने मुतअ़द्दिद रवायतों में लोगों को इस वअ़्दए इलाही की अहमियत और पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बारहवें इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर का मुश्ताक़ और मुन्तज़िर क़रार दिया है। हज़रत अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर के इन्तेज़ार को बुज़ुर्गतरीन इबादत और हज़रत अ़लैहिस्सलाम के शीओं और जाँनिसारों को पाकीज़ा तरीन और मोहतरम तरीन अफ़राद क़रार दिया है।

(ज) रवायाते अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम

येह तज़्केरा अह्लुल बैत अ़लैहिमुस्सलाम की रवायतों की बरकत से महरूम न रहे बतौरे नमूना चंद रवायतें ज़िक्र करते हैं।

१. जिस वक़्त हज़रत इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम मसनदे इमामत-ओ-ख़ेलाफ़त पर जल्वा अफ़रोज़ हुए और मुआ़विया जैसा शख़्स मुक़ाबले पर आया। उसने अपने हीलासाज़ और पुर फ़रेब वज़ीर अ़म्र आ़स के ज़रीए हज़रत

हसन अलैहिस्सलाम के अस्हाब को फ़रेब दे कर इमाम को बे यार-ओ-मददगार कर दिया। मुआविया से जो सुल्ह हुई उस में येह शर्त थी कि वोह अपने बअ्द किसी को जानशीन मुअय्यन नहीं करेगा, तलवार नहीं उठाएगा।

इमाम हसन अलैहिस्सलाम वक़्त वक़्त पर मुआविया को उसके ग़लत कामों की तरफ़ मुतवज्जेह करते रहते थे और लोगों को आगाह करते रहते थे। लेकिन कुछ इल्म-ओ-अक़्ल से बेगाना अफ़राद ने हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम पर एअ्तेराज़ किया कि आप ने सुल्ह क्यूं क़बूल कर ली?

हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने इमाम के मअ्ना की वज़ाहत करने के बअ्द और येह वाज़ेह करने के बअ्द कि इमाम का हर काम मसलेहत का पाबंद होता है। उसमें चूं-ओ-चरा की गुन्जाइश नहीं है। बारहवें इमाम अलैहिस्सलाम की हुकूमत को यूं बयान फ़रमाया है।

اَمَا عَلِمْتُمْ اَنَّهُ مَا مِنَّا اَحَدٌ اِلَّا وَ يَقَعُ فِيْ عُنُقِهِ بَيْعَةٌ لِطَاغِيَةِ زَمَانِهِ اِلَّا الْقَائِمُ الَّذِيْ يُصَلِّيْ رُوْحُ اللهِ عَيْسٰى بْنُ مَرْيَمَ خَلْفَهُ فَاِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يُخْفِيْ وِلَادَتَهُ وَ يُغَيِّبُ شَخْصَهُ لِئَلَّا يَكُوْنَ فِيْ عُنُقِهِ بَيْعَةٌ اِذَا خَرَجَ ذَالِكَ التَّاسِعُ مِنْ وُّلْدِ اَخِيْ الْحُسَيْنِ ابْنِ سَيِّدَةِ الْاِمَاءِ يُطِيْلُ اللهُ عُمْرَهُ فِيْ غَيْبَتِهِ ثُمَّ يُظْهِرَهُ بِقُدْرَتِهِ فِيْ صُوْرَةِ شَابٍّ دُوْنَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً وَ ذَالِكَ لِيُعْلَمَ اَنَّ اللهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔

अ मा अ़लिम्तुम अन्नहू मा मिन्ना अ-ह-दुन इल्ला व

य-क़ओ फ़ी ओनोक़ेही बैअतुल्लेताग़ेयते ज़मानेही इल्लल क़ाएमुल्लज़ी योसल्ली रूहुल्लाहे ईसब्नो मरय-म ख़ल्फ़हू फ़-इन्नल्ला-ह अज़्ज़ व जल्ल युख़्फ़ी वेलादतहू व युग़ीबो शख़्सहू लेअल्ला यकू-न फ़ी ओनोक़ेही बैअतुन एज़ा ख़-र-ज ज़ालेकत्तासेओ मिंव वुल्दे अख़िल हुसैनिब्ने सय्यदतिल इमाए युतीलुल्लाहो उ़म्रहू फ़ी ग़ैबतेही सुम्म युज़्हेरोहू बेकुदरतेही फ़ी सू-रते शाब्बिन दू-न अर्बईन स-नतन व ज़ाले-क लेयोअ्-ल-म अन्नल्ला-ह अला कुल्ले शैइन क़दीर.

क्या तुम्हें नहीं मअ्लूम कि हम अइम्मा अलैहिमुस्सलाम **में से हर एक के लिए एक ज़ालिम-ओ-जाबिर हुक्मराँ है सिवाए हमारे क़ाएम** अलैहिस्सलाम **के जिन के पीछे ईसा रूहुल्लाह नमाज़ पढ़ेंगे। ख़ुदा उनकी वेलादत को लोगों से पोशीदा रखेगा। वोह ख़ुद भी लोगों की निगाहों से पोशीदा रहेंगे जब ज़हूर करेंगे तो कोई ज़ालिम-ओ-जाबिर उन पर मुसल्लत नहीं होगा। वोह मेरे भाई हुसैन** अलैहिस्सलाम **का नवां फ़र्ज़ंद और शहज़ादी का बेटा होगा। ख़ुदावंद आलम ग़ैबत के ज़माने में उसकी उ़म्र तूलानी करेगा यहां तक कि ख़ुदा अपनी कुदरते कामेला की बेना पर उनको चालीस साल से कम जवान की शक्ल में ज़ाहिर करेगा ताकि सब लोग जान लें कि ख़ुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता**

है।

(मुन्तख़बुल असर, फ़स्ल २, बाब १०)

२. इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम के शीओं में से एक शख़्स ने उनके जानशीन के बारे में दरियाफ़्त किया तो हज़रत ने फ़रमायाः

اَلْاِمَامُ مِنْ بَعْدِیْ مُوْسٰی وَالْخَلَفُ الْمُنْتَظَرُ مُحَمَّدُ بْنُ الْحَسَنِ بْنِ عَلِیِّ ابْنِ مُحَمَّدِ بْنِ مُوْسٰی

अल-इमामो मिन बअ़्दी मूसा वलख़ल्फ़ुल मुन्तज़रो मोहम्मदुब्नुल हसनिब्ने अ़लीयिब्ने मोहम्मदिब्ने मूसा.

(मुन्तख़बुल असर, फ़स्ल २, बाब २१)

येह बात भी हज़रत से मन्क़ूल है कि आप बार बार फ़रमाया करते थे -

لِکُلِّ اُنَاسٍ دَوْلَةٌ یَرْقَبُوْنَهَا وَدَوْلَتُنَا فِیْ اٰخِرِ الدَّهْرِ یُظْهَرُ۔

लेकुल्ले उनासिन दौलतुन यरक़बूनहा व दौलतोना फ़ी आख़ेरिद् दह्रे युज़्हरो.

लोगों का हर गरोह अपनी हुकूमत का इन्तेज़ार कर रहा है और हमारी हुकूमत आख़री ज़माने में ज़ाहिर होगी।

(अमाली, शैख़ सुदूक़, स० ४८९, मुतरजम)

३. इमाम मूसा काज़िम अ़लैहिस्सलाम ने अपने एक सहाबी के दरियाफ़्त करने पर कि क्या आप क़ाएम हैं? हज़रत ने

फ़रमायाः

اَنَا الْقَائِمُ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ الْقَائِمَ الَّذِیْ یُطَهِّرُ الْاَرْضَ مِنْ اَعْدَاءِ اللّٰهِ یَمْلَاُهَا عَدْلًا كَمَا مُلِئَتْ جَوْرًا۔ هُوَ الْخَامِسُ مِنْ وُّلْدِیْ لَهٗ غَیْبَةٌ یَطُوْلُ اَمَدُهَا خَوْفًا عَلٰی نَفْسِهٖ یَرْتَدُّ فِیْهَا اَقْوَامٌ وَ یَثْبُتُ فِیْهَا اٰخَرُوْنَ ---- طُوْبٰی لِشِیْعَتِنَا الْمُتَمَسِّكِیْنَ بِحَبْلِنَا فِیْ غَیْبَةِ قَائِمِنَا اُولٰئِكَ مِنَّا وَ نَحْنُ مِنْهُمْ قَدْ رَضُوْا بِنَا اَئِمَّةً وَ رَضِیْنَا بِهِمْ شِیْعَةً فَطُوْبٰی لَهُمْ، هُمْ وَاللّٰهِ مَعَنَا فِیْ دَرَجَتِنَا یَوْمَ الْقِیَامَةِ۔

अनलक़ाएमो बिल हक़्क़े व लाकिन्नलक़ाएमल्लज़ी योतह्हेरुल अर-ज़ मिन अअ़्दाइल्लाहे यम्लओहा अ़द्लन कमा मुलेअत जौरा होवल ख़ामेसो मिंव वुल्दी लहू ग़ैबतुन यतूलो अ-मदोहा ख़ौफ़न अ़ला नफ़्सेही यर्तद्दो फ़ीहा अक़्वामुन व यस्बोतो फ़ीहा आख़ेरू-न.... तूबा लेशीअ़तेनलमुतमस्सेकी-न बेहब्लेना फ़ी ग़ैबते क़ाएमेना उलाए-क मिन्ना व नह्नो मिन्हुम क़द रज़ू बेना अइम्मतन व रज़ीना बेहिम शी-अ़तन फ़तूबा लहुम, हुम वल्लाहे म-अ़ना फ़ी द-र-जतेना यौमल क़ेयामते.

मैं क़ाएमे बरहक़ हूं, लेकिन वोह क़ाएम जो ज़मीन को दुश्मनाने ख़ुदा से पाक करेगा और अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से पुर करेगा, वोह मेरा पाँचवां फ़र्ज़ंद है। चूंकि उसकी

जान का ख़तरा है लेहाज़ा वोह मुद्दतों निगाहों से पोशीदा रहेगा। ग़ैबत के ज़माने में कुछ लोग दीन से ख़ारिज हो जाएंगे लेकिन कुछ लोग अपने अ़क़ीदे पर साबित क़दम रहेंगे। उसके बअ़्द फ़रमाया उन शीअ़ों का क्या कहना जो इमामे ज़माना की ग़ैबत के ज़माने में हमारी वेलायत से मुतमस्सिक रहेंगे। हमारी दोस्ती पर साबित क़दम और हमारे दुश्मनों से बेज़ार रहेंगे। वोह हम से हैं और हम उनसे हैं। वोह हमारी इमामत से राज़ी हैं हम उनकी पैरवी से ख़ुशनूद हैं। क्या कहना उनकी क़िस्मत का! ख़ुदा की क़सम येह जन्नत में हमारे दर्जे में होंगे।

(इस्बातुल हुदा, शैख़ हुर्रे आ़मली, जि॰ ६, स॰ ४१७)

४. और ग्यारहवें इमाम हसन अ़सकरी अ़लैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमायाः

كَاَنِّيْ بِكُمْ وَ قَدِ اخْتَلَفْتُمْ بَعْدِيْ بِالْخَلْفِ اَمَا اِنَّ الْمُقِرَّ بِالْاَئِمَّةِ بَعْدَ رَسُوْلِ اللهِ الْمُنْكِرَ لِوَلَدِيْ كَمَنْ اَقَرَّ بِنُبُوَّةِ جَمِيْعِ اَنْبِيَاءِ اللهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اَنْكَرَ نُبُوَّةَ رَسُوْلِ اللهِ وَالْمُنْكِرُ لِرَسُوْلِ اللهِ كَمَنْ اَنْكَرَ جَمِيْعَ اَنْبِيَاءِ اللهِ لِاَنَّ طَاعَةَ اٰخِرِنَا كَطَاعَةِ اَوَّلِنَا وَالْمُنْكِرُ لِاٰخِرِنَا كَالْمُنْكِرِ لِاَوَّلِنَا ۔ اَمَا اَنَّ لِوَلَدِيْ غَيْبَةٌ يَرْتَابُ فِيْهَا النَّاسُ اِلَّا مَنْ عَصِمَهُ اللهُ ۔

क-अन्नी बेकुम व क़दिख़्तलफ़्तुम बअ़्दी बिलख़ल्फ़े अ मा इन्नल मुक़िर्-र बिल अइम्मते बअ़्-द रसूलिल्लाहे अल मुन्के-र ले-व-लदी क-मन अ-क़र्-र बेनुबूवते जमीए़ अंबियाइल्लाहे व रोसोलेही व अन्क-र नुबू-व-त रसूलिल्लाहे वल मुन्केरो लेरसूलिल्लाहे कमन अन्क-र जमी-अ़ अन्बियाइल्लाहे ले-अन्-न ता-अ़-त आख़ेरेना क-ताअ़ते अव्वलेना वल मुन्केरो ले आख़ेरेना कल मुन्केरे ले-अव्वलेना अमा अन-न ले-व-लदी ग़ैबतुन यर्ताबो फ़ीहन्नासो इल्ला मन अ़सेमहुल्लाहो.

गोया मैं तुम को देख रहा हूं कि तुम मेरे जानशीन के बारे में इख़्तेलाफ़ कर रहे हो। आगाह हो जाओ जो कोई पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **के बअ़्द इमामों पर ईमान रखता हो लेकिन मेरे फ़र्ज़ंद की इमामत का इन्कार करे वोह उस शख़्स की तरह है जिस ने तमाम अंबिया को तस्लीम किया और नबीए आख़िर का इन्कार कर दिया। क्यूंकि आख़री इमाम की इताअ़त पहले इमाम की तरह वाजिब है। लेहाज़ा अगर किसी ने हमारे आख़री का इन्कार किया गोया उसने पहले का इन्कार कर दिया। येह जान लो मेरे फ़र्ज़ंद की ग़ैबत इस क़द्र तूलानी होगी कि लोग शक में पड़ जाएंगे मगर वोह अफ़राद जिन के ईमान की हेफ़ाज़त ख़ुदा ने की हो।**

(इस्बातुल हुदा, जिल्द ६, स० ४२७)

वोह तमाम हदीसें जो पयाम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम से बारहवें इमाम अ़लैहिस्सलाम के बारे में वारिद हुई हैं वोह हमें इस बुनियादी अ़क़ीदे की अहम्मीयत से आगाह करती हैं। क्यूंकि उन हदीसों की तअ़्दाद काफ़ी ज़्यादा है। येह आसानी से कहा जा सकता है कि शीअ़ा किताबों में जो बे पनाह रवायतें इमामत के बारे में वारिद हुई हैं उनमें हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की इमामत-ओ-ख़ेलाफ़त के बअ़्द सब से ज़्यादा रवायतें बारहवें इमाम के मुतअ़ल्लिक़ वारिद हुई हैं। येह हदीसें शीअ़ा और सुन्नी दोनों किताबों में मौजूद हैं जिन की तअ़्दाद सैकड़ों से ज़्यादा है।[१]

इस्लाम के मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों के बुज़ुर्ग उ़लमा ने इस मौज़ूअ़् पर मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं ख़ुद उन किताबों की तअ़्दाद अच्छी ख़ासी है।[२]

ख़ुलासा येह का आज का इंसान नेहायत शौक़ और संजीदगी से एक ऐसी पनाहगाह तलाश कर रहा जहां उसको अपने इज़्तेराब, अपनी परेशानियों और नित नए मसाएल से सुकून मिल सके। और येह पनाहगाह अपने तमाम ख़द-ओ-ख़ाल-ओ-ख़ुसूसियात और

---

१. इस तरह की मुन्तख़ब हदीसें आ़लिमे जलील जनाब आक़ाए लुत्फ़ुल्लाह साफ़ी गुल्पाएगानी की गरांक़द्र किताब 'मुन्तख़बुल असर फ़िल इमामुस्सानी अ़शर अ़लैहिस्सलाम'' में मौजूद हैं।

२. इस तरह की किताबों की एक मुख़्तसर फ़ेहरिस्त आ़ली मर्तबत आ़ली जनाब हाज मीरज़ा हुसैन तबरसी की किताब नजमुस्साक़िब में मौजूद है। और मज़ीद मअ़्लूमात के लिए किताब नामा इमाम महदी का मुतालेआ़ किया जा सकता है।

जामेईयत के साथ दीने मुक़द्दस इस्लाम में मौजूद है। क़ुरआन करीम ने उसी पनाहगाह की रोशनी में इंसानियत के मुस्तक़बिल की इमारत तअ़मीर की है।

ग़ैबत में रहबरी

तौरात में आया है कि:

> ''जनाब मूसा अ़लैहिस्सलाम ने इस्राईल के बा केफ़ायत अफ़राद को मुन्तख़ब किया। उनको लोगों का सर परस्त क़रार दिया। हज़ारों अफ़राद, सैकड़ों अफ़राद और दसियों अफ़राद की हुकूमत उनके हवाले की। येह लोग हमेशा लोगों के दरमियान फ़ैसला करते थे और मुश्किल मसाएल जनाब मूसा अ़लैहिस्सलाम के सामने पेश करते थे लेकिन छोटे छोटे फ़ैसले ख़ुद ही कर लेते थे।''

जनाब मूसा अ़लैहिस्सलाम के दो हज़ार साल के बअ़्द भी येह मसअला इतना ज़्यादा ताज़ा था कि ''एफ़-वी-टाईलर'' इस बात पर मजबूर हुआ कि उसने बात को (इदारों की इन्तेज़ामिया के लिए) एक क़ानून की शक्ल दी और उसका नाम ''क़ानूने इस्तेस्ना'' रखा।[१]

---

१. उसूले साज़माने इदारी तालीफ़ लावर बक तर्जुमा सीरूस परहाम, स० ५४, मोअल्लिफ़ ने ज़ाहेरन दो इश्तेबाह किए हैं: (१) जनाब मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माने को दो हज़ार साल नहीं बल्कि साढ़े तीन हज़ार साल हो रहे हैं। (२) येह मसअला इस क़द्र ताज़ा भी नहीं है जितना ख़याल है बल्कि येह मसअला इस्लामी तहज़ीब में बहुत पहले तवज्जोह का मरकज़ बन चुका है।

इख़्तेयारात की तक़्सीम एक ऐसी बह्स है जो हर तरह की रहबरी और इन्तेज़ामिया में जारी-ओ-सारी है। रहबर इदारे के अहम काम अंजाम देता है और मअ़्मूली काम दूसरे ज़िम्मेदार अफ़राद के सेपुर्द कर देता है ताकि वोह अपनी फ़िक्र, अपने तजरेबे से काम के तमाम पहलूओं पर नज़र रखते हुए, रहबर के मुअ़य्यन कर्दा उसूल-ओ-क़वानीन की रोशनी में काम अंजाम दें और काम को आगे बढ़ाएं।

''इख़्तेयारात सेपुर्द'' करने का मक़्सद येह है कि रहबर अपने बअ़्ज़ इख़्तेयारात दूसरों को दे देता है और अपनी ज़िम्मेदारियों का कुछ हिस्सा दूसरों के हवाले कर देता है। क्यूंकि कोई भी इदारा, कोई भी आर्गनाइज़ेशन मोअस्सर तौर पर काम अंजाम नहीं दे सकता है और ख़ास कर उस सूरत में जब रहबर का मैदाने कार वसीअ़् से वसीअ़् तर होता जाए। ऐसी सूरत में इख़्तेयारात की सेपुर्दगी बहुत ज़रूरी है।

इस सूरत में रहबर बअ़्ज़ चीज़ों के बारे में सिर्फ़ अपने इख़्तेयारात मुन्तक़िल नहीं करता है, बल्कि दरअस्ल वोह अपनी ज़िम्मेदारियों का एक हिस्सा मुन्तक़िल कर देता है यअ़्नी वोह ख़ुद इख़्तेयार सेपुर्द करने का हक़ एक महदूद दाएरे में दूसरों के हवाले कर देता है।

दूसरी आ़लमी जंग के बअ़्द इदारों की इन्तेज़ामिया के माहेरीन का नज़रिया बिलकुल तब्दील हो गया और इख़्तेयारात सेपुर्द करने का जदीद तरीक़ा राएज हो गया इस तरह हुक्मरानी, देख भाल और

उमूमी-ओ-ख़ुसूसी इन्तेज़ामिया के तर्ज़-ओ-अन्दाज़ में ज़बरदस्त तब्दीली रूनुमा हो गई जिस के असरात आज कल के इदारों में बाक़ाएदा देखे जा सकते हैं।

येह बात ख़ास तवज्जोह के लाएक़ है कि रहबरी के इस तर्ज़-ओ-अन्दाज़ से ख़ातिर ख़ाह नताएज बरामद हुए। मसलन एक आदमी के पास काम का अंबार नहीं होता। नताएज ज़्यादा बरामद होते हैं, तआवुन में इस्तेहकाम होता है, काम करने के जज़्बे में एज़ाफ़ा होता है। हर वक़्त रहबर के नुमाइंदे की मौजूदगी की बेना पर काम तेज़ होता है और इसके अलावा भी बहुत सारे फ़ाएदे हैं।

क़ानूने इस्तेस्ना से येह बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है कि किस तरह एक रहबर मैदाने कार को वसीअ़ से वसीअ़ तर कर सकता है। इस बेना पर रहबर से मिलती जुलती ज़िम्मेदारी लाएक़ अफ़राद के सेपुर्द करना चाहिए। ताकि वोह लोग इंसानों की रहबरी अपने हाथों में लें और रास्ते की मुश्केलात को बर तरफ़ करें, सहीह रास्ता दिखलाएं और सिर्फ़ इस्तेस्नाई[१] जगहों पर जहां ख़ुद को नातवां महसूस करते हों रहबर की तरफ़ रुजूअ़ करें। क़ुरआने करीम यही बात इल्मे दीन की तरवीज के बारे में बयान करता है।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ
طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْا اِلَيْهِمْ

१. मुक़द्दमा इब्ने ख़ल्दून की तरफ़ रुजूअ़ किया जाए। यहां इस्तेस्ना से मुराद ख़ेलाफ़े क़ानून नहीं है बल्कि इन्तेज़ामिया और मुदीरियत में उसका मफ़हूम मौज़ूआत की नई तक़्सीम और दर्जा बंदी है।

لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ۔

व मा कानलमोअ्मेनू-न लेयन्फ़ेरू काफ़्फ़तन फ़लौ ला न-फ़-र मिन कुल्ले फ़िर्क़तिन मिन्हुम ताएफ़तुल ले य-तफ़क़्क़हू फ़िद्दीने वले युन्ज़ेरू क़ौ-महुम एज़ा र-जऊ इलैहिम लअ़ल्लहुम यहज़रून.

अगर येह मुनासिब नहीं कि सारे मोअ्मेनीन सफ़र करें तो हर फ़िर्क़े से बअ़्ज़ लोग क्यूं नहीं निकलते ताकि दीन की अ़मीक़ मअ़्लूमात हासिल करें और फिर अपनी क़ौम की तरफ़ वापस आएं और उनको ख़तरात से आगाह करें ताकि वोह लोग ख़ुदा से डरें।

(सूरए तौबा, आयत १२२)

इस आयते करीमा से जो बात वाज़ेह होती है वोह येह कि हर जगह से हर गरोह से कुछ ख़ास अफ़राद को इल्म हासिल करने के लिए अपने घरों से निकलना चाहिए और इल्म हासिल करने के बअ़्द वापस भी आना चाहिए ताकि जो कुछ उन्होंने हासिल किया है उससे अपनी क़ौम को बा ख़बर कर सकें और ज़िंदगी के मसाएल में उनकी रहनुमाई करें ख़्वाह वोह एबादत का मसअला हो या समाजियात का। इन्फ़ेरादी मसाएल हों या इज्तेमाई। हर एक मसअले के बारे में गहरी मअ़्लूमात हासिल करें और अपनी क़ौम में वापस आकर लोगों की सहीह रहनुमाई करें और इस तरह लोगों को ख़तरात से आगाह करके उनको उनकी ज़िम्मेदारियों का एहसास दिलाएं और उनकी

कोताहियों के नताएज से उन्हें बा ख़बर करें।

हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के ज़माने से अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम के ज़माने तक अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की रविश यही थी कि वोह अपने फ़क़ीह और ज़ी इल्म अस्हाब को अहकामे इस्लामी की नश्र-ओ-तब्लीग़ के लिए इधर उधर रवाना करते थे। उनको फ़ैसला करने और मसअला बयान करने का इख़्तेयार देते थे। चुनाँचे हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने इसी तरह के इख़्तेयारात दे कर ''मुस्अ़ब बिन उ़मैर' को मदीना भेजा और 'सअ़्द बिन मआ़ज़' को यमन की तरफ़ रवाना किया।

अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम की भी यही रविश रही। चुनाँचे हज़रत अमीरुल मोअ़्मेनीन अ़लैहिस्सलाम ने अपनी हुकूमत के ज़माने में मक्का में अपने गवर्नर क़ुसुम बिन अ़ब्बास को तहरीर फ़रमायाः

> सुब्ह-ओ-शाम बैठो और लोगों के लिए मसअले बयान करो।[१]

इसी तरह हज़रत जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम के बारे में मिलता है कि वोह बअ़्ज़ अफ़राद को ''अबू बसीर असदी'' और बअ़्ज़ को मोहम्मद बिन मुस्लिम 'सक़फ़ी' के पास भेजते थे ताकि वोह अपने मसाएल में उनकी तरफ़ रुजूअ़् करें।

हज़रत अ़लैहिस्सलाम ने ''अबान बिन तग़लिब'' से फ़रमायाः

---

१. मर्दे मुक़द्दस, मुत्तक़ी परहेज़गार, इमाम का मूरिदे एअ़्तेमाद और इत्मीनान, तन्क़ीहुल मक़ाल, जि० २, शुमारा ९६३८

''मस्जिदे मदीना में बैठो और लोगों को फ़तवा दो।''

हज़रत इमाम अ़ली रज़ा अ़लैहिस्सलाम ने अ़ली बिन मुसय्यब''[१] को इल्म हासिल करने के लिए ''ज़करिया बिन आदम कुम्मी'' के पास भेजा जो इमाम के अमीन थे।

इसी तरह अपने बअ़्ज़ अस्हाब को इल्मे दीन के सिलसिले में 'यूनुस बिन अ़ब्दुर्रहमान' के सेपुर्द किया।

(तन्क़ीहुल मक़ाल, जि० ३, स० ३३८, शुमारा : १३३५७)

इस रविश पर बराबर अ़मल होता रहा और हमें अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम के कामों में क़ानूने इस्तेस्ना जगह जगह नज़र आता है यहां तक कि हज़रत बक़ीयतुल्लाह इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत के ज़माने में इस पर एक नए अन्दाज़ से अ़मल हुआ। जैसा कि हम बयान कर चुके हैं कि इस दौर में इमाम अ़लैहिस्सलाम ने उम्मत की रहबरी अपनी उम्मत के मोअ़्तबर और अमीन फ़ुक़हा के सेपुर्द की है ताकि वोह ग़ैबत के ज़माने में उम्मत की रहबरी की ज़ेमाम अपने ज़िम्मेदार हाथों में लें। और उन लोगों को इमाम अ़लैहिस्सलाम ने लोगों की रहनुमाई और दीनी हक़ाएक़ दरियाफ़्त करने के लिए मुअ़य्यन फ़रमाया है।

इस तरह येह ''क़ानूने इस्तेस्ना'' एक बार फिर ग़ैबत के ज़माने में

१. अ़ली बिन मुसय्यब का बयान है मैंने इमाम अ़ली रज़ा अ़लैहिस्सलाम की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया मेरी राह दूर है और मैं आप की ख़िदमत में हाज़िर नहीं हो सकता ताकि आप से इल्मे दीन हासिल कर सकूं। हज़रत ने फ़रमाया ज़करिया बिन आदम कुम्मी के पास जाओ, वोह दीनी और दुनियवी उमूर में हमारा अमीन है। (तन्क़ीहुल मक़ाल, जि०१, शुमारा ४२३७)

अपनी ख़ास ख़ुसूसियतों के साथ शीओं की रहबरी के बारे में एक नए अन्दाज़ से नाफ़िज़ हुआ और ग़ैबत के ज़माने में येह क़ानून, ज़माने में मज़हब की बक़ा, ज़माने के तग़य्युरात, तब्दीलियों के साथ क़दम ब क़दम चलने और मज़हबी अफ़कार की इर्तेक़ा और जामेईयत का सबब क़रार पाया। ताकि इमाम अलैहिस्सलाम के नुमाइन्दे ''मुकम्मल पैग़ाम'' के ज़रीए हर ज़माने में इमाम अलैहिस्सलाम की एनायतों से शीओं की राहनुमाई कर सकें।

फ़िक़ही किताबों में मौजूद तसरीहात के ब मूजिब येह हज़रात शीओं पर ज़ाहिरी वेलायत-ओ-हाकेमीयत रखते हैं और लोगों को अपने दीनी मसाएल में उन फ़ुक़हा की तरफ़ रुजूअ् करना चाहिए। हज़रत ''बक़ीयतुल्लाह इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम'' ने ''इस्हाक़ बिन यअ्क़ूब'' के लिए जो तौक़ीअ् ''अबू जअ्फ़र मोहम्मद बिन उस्मान बिन सईद'' के ज़रीए सादिर फ़रमाई थी उस में सवालात के जवाब में फ़रमाया है:

وَ امَّا الْحَوَادِثُ الْوَاقِعَةُ فَارْجِعُوْا فِيْهَا اِلٰى رُوَاةِ حَدِيْثِنَا فَاِنَّهُمْ حُجَّتِيْ عَلَيْكُمْ وَ اَنَا حُجَّةُ اللهِ عَلَيْهِمْ۔

व अम्मल हवादेसुल वाक़ेअतो फ़र्जेऊ फ़ीहा एला रोवाते हदीसेना फ़-इन्नहुम हुज्जती अलैकुम व अना हुज्जतुल्लाहे अलैहिम.[१]

१. कमालुद्दीन, स० ४८४, बेहारुल अनवार, जि० ५३, स० १८१, वसाएलुश्शीआ, किताबुल क़ज़ा, स० १०१.

और रूनुमा होने वाले नित नए मसाएल में हमारी हदीस के रावियों की तरफ़ रुजूअ् करना। क्यूंकि येह मेरी जानिब से तुम पर हुज्जत हैं और मैं ख़ुदा की जानिब से उन पर हुज्जत हूं।

येह बात वाज़ेह है कि हवादिसे वाक़ेआ से मुराद रूनुमा होने वाले नित नए मसाएल हैं जो लोगों को रोज़ मर्रा की ज़िंदगी में पेश आते रहते हैं। उन नए मसाएल में लोगों के लिए ज़रूरी है कि वोह अपनी ज़िम्मेदारियों को मअ्लूम करने के लिए उलमा की तरफ़ रुजूअ् करें।

हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने एक हदीस में फ़ोक़हा की सेफ़ात इस तरह बयान फ़रमाई हैं:

فَاَمَّا مَنْ كَانَ مِنَ الْفُقَهَاءِ صَائِنًا لِّنَفْسِهٖ، حَافِظًا لِدِيْنِهٖ مُخَالِفًا عَلٰى هَوَاهُ، مُطِيْعًا لِّاَمْرِ مَوْلَاهُ، فَلِلْعَوَامِ اَنْ يُّقَلِّدُوْهُ وَ ذَالِكَ لَا يَكُوْنُ اِلَّا بَعْضَ الْفُقَهَاءِ الشِّيْعَةِ لَا كُلُّهُمْ۔

फ़-अम्मा मन का-न मिनल फ़ु-क़हाए साएनन लेनफ़्सेही, हाफ़ेज़न, लेदीनेही, मुख़ालेफ़न अ़ला हवाहो, मुतीअ़न लेअम्रे मौलाहो, फ़लिल अ़वामे अन युक़ल्लेदूहो व ज़ाले-क ला यकूनो इल्ला बअ़्ज़ल फ़ुक़हाइश्शीअ़ते ला कुल्लोहुम

फ़ुक़हा और उलमा में से वोह शख़्स जो अपने नफ़्स को (गुनाहों से) बचाता हो, अपने दीन की हेफ़ाज़त

करता हो, ख़ाहिशाते नफ़्स की मुख़ालेफ़त करता हो और अपने आक़ा-ओ-मौला की इताअ़त करता हो तो अ़वाम की ज़िम्मेदारी है कि उसकी तक़लीद करें। और (इन सेफ़ात के हामिल) बस बअ़्ज़ फ़ुक़हा होते हैं सब नहीं।

(वसाएलुश्शीया, जि॰ १८, स॰ ९५)

इस तरह इमाम अ़लैहिस्सलाम ने लोगों की रहबरी उन शीआ़ फ़ुक़हा के ज़िम्मेदार हाथों में सेपुर्द कर दी जिन में येह सेफ़ात मौजूद हों ताकि येह ज़िम्मेदार हज़रात ग़ैबत के ज़माने में लोगों की रहबरी करें और रूनुमा होने वाले मसाएल का हल पेश करें। येह 'क़ानूने इस्तेस्ना'' दूसरे अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम के ज़माने में भी था लेकिन ग़ैबत के ज़माने में येह क़ानून वसीअ़् पैमाने पर अ़मली हुआ। मिसाल के तौर पर इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने लोगों को उन उ़लमा की तरफ़ रुजूअ़् करने को कहा जो ख़ुदा के हलाल-ओ-हराम और अइम्मए अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के अक़वाल की रोशनी में फ़ैसला करते हैं।

अगर दो अफ़राद बाहम इख़्तेलाफ़ रखते हों तो उसकी तरफ़ देखो जो हमारी हदीस बयान करता है और हमारे हलाल-ओ-हराम में ग़ौर-ओ-फ़िक्र करता है, हमारे अहकाम का जानने वाला है। ऐसे शख़्स को फ़ैसले के लिए इन्तेख़ाब करो क्यूंकि मैंने ऐसे ही शख़्स को मुअ़य्यन किया है। अगर उसके फ़ैसले को क़बूल नहीं

किया जाए तो ख़ुदा के हुक्म को सुबुक क़रार दिया है और हमारी बात को रद किया है और जो हमारी बात को रद करे उसने ख़ुदा की बात को रद किया और ऐसा शख़्स शिर्क की हदों में दाख़िल है।

(वसाएलुश्शीआ, जि॰ १८, स॰ ९८)

रावियाने हदीस

सिर्फ़ वोह अफ़राद नहीं हैं जो अइम्मए मअ़्सूमीन अलैहिमुस्सलाम के अक़वाल नक़्ल करते हैं बल्कि वोह अफ़राद हैं जो रवायत को दरायत पर परखते हैं और ग़ौर-ओ-ख़ौज़ करते हैं और आयतों और रवायतों को मिला कर उसूल-ओ-क़वाएद की रोशनी में अहकाम के इस्तेन्बात की सलाहियत रखते हैं।

हज़रत इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने एक हदीस में ज़ोरारा, अबू बसीर, मोहम्मद बिन मुस्लिम, बुरैद अ़जली, जैसे अस्हाब को जो इमाम अलैहिस्सलाम के नुमाइन्दे थे और इमाम की बातों को लोगों तक पहुँचाते थे और उनको इस्लाम से आगाह करते थे, इमाम और अ़वाम के दरमियान राबेता और वास्ता थे, उनके बारे में फ़रमायाः

अगर येह लोग न होते तो कोई दीन के अहकाम का इस्तेम्बात नहीं कर सकता था। येह लोग दीन के मुहाफ़िज़ हैं। येह लोग हलाल-ओ-हरामे ख़ुदा में मेरे वालिद के अमीन थे। दुनिया में येह लोग दूसरों की ब

निस्बत हमारी तरफ़ सबक़त करते थे और आख़ेरत में भी हमारी तरफ़ सबक़त करेंगे।

(वसाएलुश्शीआ, जि॰ १८, स॰ १०४)

दूसरे अइम्मा अलैहिमुस्सलाम के ज़माने की तरह इमाम महदी अलैहिस्सलाम के ज़मानए ग़ैबत में उम्मत की ज़िम्मेदारी फ़ुक़हा के हाथों में है। येह लोग हर जगह दीने ख़ुदा के मुहाफ़िज़ थे और हर तरह के हमलों के मुक़ाबले में मुस्तहकम सिपर थे। यही वजह है कि हज़रत ने उनके बारे में फ़रमाया है:

येह लोग मेरी जानिब से तुम पर हुज्जत हैं और मैं ख़ुदा की जानिब से उन पर हुज्जत हूं।[१]

इमाम अलैहिस्सलाम ने उनके हक़ में दुआ की है उनकी मदद फ़रमाई है। इश्तेबाहात में उनकी रहबरी की है। यहां तक कि ज़बरदस्त फ़क़ीह जनाब शैख़ मुफ़ीद के बारे में साबित क़दम बरादर, ज़िम्मेदार दोस्त फ़रमाया है। उसी मुबारक तौक़ीअ् का दूसरा हिस्सा एक अज़ीम हक़ीक़त को वाज़ेह कर रहा है और वोह येह कि इमाम अलैहिस्सलाम शीआओं की बराबर देख भाल करते रहते हैं। उनको याद करते रहते हैं और उनकी हेफ़ाज़त करते रहते हैं।

إِنَّا غَيْرُ مُهْمِلِيْنَ لِمُرَعَاتِكُمْ وَلَا نَاسِيْنَ لِذِكْرِكُمْ وَلَوْلَا ذَالِكَ
لَنَزَلَ بِكُمُ اللَّأْوَاءُ وَاصْطَلَمَتْكُمُ الْأَعْدَاءُ فَاتَّقُوْا اللهَ جَلَّ

१. आली मर्तबत मोहद्दिस हाज मीरज़ा हुसैन तबरसी नूरी की किताब नज्मुस्साक़िब का मुतालेआ मुफ़ीद है।

جَلَالُهٗ۔

इन्ना ग़ैरो मोहमेली-न लेमुराआतेकुम व ला नासी-न लेज़िक्रेकुम व लौ ला ज़ाले-क ल-न-ज़-ल बेकुमुल ल अवाओ वस्तलम्तोकुमुल अअ़्दाओ फ़त्तकुल्ला-ह जल्ल जलालोहू.

हम तुम्हारे बारे में कोताही नहीं करते। तुम्हारी याद को भुलाते नहीं। अगर ऐसा होता तो बलाएं तुम पर नाज़िल होतीं, दुश्मन तुम को नाबूद कर देते। लेहाज़ा तक़्वा और परहेज़गारी इख़्तेयार करो।

(बेहारुल अनवार, जि॰ ५३, स॰ १७५)

तूले उ़म्र

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के अक़ीदे के बारे में हमारे मज़हब की येह ख़ुसूसियत है कि येह अक़ीदा हमेशा से एक मर्दे इलाही की तूले उम्र के साथ साथ है जिस की उम्र को आज ग्यारह सदियों से ज़्यादा अर्सा गुज़र चुका है। जब कि हम अपने अतराफ़ में देखते हैं तो लोगों की उम्र आम तौर से सौ साल से ज़्यादा नज़र नहीं आती। इस बेना पर हज़रत अलैहिस्सलाम की उम्र का मसअला नेहायत संजीदगी से पेश किया जाता है। इस तूले उम्र का राज़ क्या है? और क्यूं?

इस बेना पर ज़रूरी है कि इस हस्सास मसअले में इल्मी अन्दाज़ से ग़ौर-ओ-फ़िक्र किया जाए। इस सिलसिले में हमारी कोशिश येह होगी कि मुख़्तलिफ़ पहलूओं से इसको मूरिदे मुतालेआ-ओ-तहक़ीक़ क़रार दें ताकि मसअला बिल्कुल वाज़ेह हो जाए।

(१) ज़िंदगी

तूले उम्र का मसअला ज़िंदगी के फ़रई मसाएल में एक अहम मसअला है। अगर हम ज़िंदगी को पहचान लें और उसकी तअ्रीफ़

हमें मअ़्लूम हो जाए तो तूले उ़म्र का मसअला या तो पेश ही नहीं आएगा या नेहायत आसानी से हल हो जाएगा। बायोलोजी (इल्मे हयातियात) यहां पर ख़ामोश है और आज भी ज़िंदगी उसके लिए एक मोअ़म्मा है। आज तक कोई एक ऐसी जामेअ़् तअ़्रीफ़ सामने न आ सकी जो ज़िंदा और मुर्दा ख़लियों में फ़र्क़ क़ाएम कर सके। दूसरे लफ़्ज़ों में यूं कहा जा सकता है कि आज तक ज़िंदगी की सहीह और जामेअ़् तअ़्रीफ़ न हो सकी।

अमरीका के मशहूर-ओ-मअ़्रूफ़ दानिशवर जार्ज वाशिंग्टन यूनिवर्सिटी के उस्ताद अपनी किताब एक, दो, तीन, ला महदूद में बायोलोजी (इल्मे हयातियात) की आ़जिज़ी का बाक़ाएदा एक़रार करते हैं और अपनी किताब की एक फ़स्ल ''मोअ़म्मए ज़िंदगी'' के नाम से मख़्सूस करते हैं और इसका एअ़्तेराफ़ करते हैं कि इंसान की अ़क़्ल-ओ-फ़हम इस हक़ीक़त को समझने से क़ासिर है।

मशहूर सर्जन और माहिरे तबीईयात डॉ. अल्केसिस कार्ल (जो मुद्दतों अमरीका के रॉकफ़ेलर इदारे में इल्मुल हयात के सरबराह रहे हैं) जब अपनी तहक़ीक़ात को किताबी शक्ल देना चाहते हैं तो उनको इंसान एक मजहूल मौजूद से बेहतर कोई नाम नज़र नहीं आता है। और इस किताब में बाक़ाएदा एअ़्लान और एअ़्तेराफ़ करते हैं:

> ''हम ख़ुद अपने वजूद के बारे में मअ़्मूली और नाक़िस इत्तेलाआ़त रखते हैं।''

फ़ितरी बात है कि जब ख़ुद ज़िंदगी ही के बारे में जो हमारे वुजूद

की तशकील में बुनियादी हैसियत रखती है, इस क़द्र हमारी इत्तेलाआ़त नाक़िस और बहुत ही मआ़मूली हैं।

तो येह सवाल किया जा सकता है कि जब अभी तक ख़ुद अस्ल ज़िंदगी का मोआ़म्मा हल न हो सका तो तूले उ़म्र जो अस्ल ज़िंदगी का एक ज़िम्नी मसअला है उसके बारे में क्या एआ़तेराफ़ किया जा सकता है? जब तक इंसान ज़िंदगी के बारे में किसी मोआ़तबर नतीजे तक न पहुँचे उस वक़्त तक तूले उ़म्र का मसअला पेश करना कोई मआ़क़ूल बात नहीं है। इसके बआ़द जो कुछ बयान किया जाएगा वोह अबदी ज़िंदगी के लिए इंसान की सई-ओ-कोशिश है और ज़िंदगी का मोआ़म्मा हल करने की राह में एक क़दम है।

(२) मौत

इल्मे हयात के माहेरीन मौत और हयात में किस को फ़ितरी क़रार देते हैं और किस को ग़ैर फ़ितरी जानते हैं? जर्मन के इल्मुल हयात के प्रोफ़ेसर वाइज़मैन अपनी किताब ''ज़ीस्त शनासी'' जिस का फ़ारसी में तरजुमा हुआ है। इस सवाल का जवाब इस तरह देते हैं:

जो चीज़ मौजूदात के लिए फ़ितरी है वोह ज़िंदगी है मौत नहीं।

(नक़्ल अज़ किताब्चा ख़ुर्शीदे मग़रिब)

इल्मे हयात हम से कहता है अगर हम किसी एक सेल (ख़लिया) में बूढ़ा होने के असबाब को जान कर उस पर कंट्रोल कर लें तो बड़ी हद तक मौत पर क़ाबू पा सकेंगे। जो चीज़ मौत के बारे में वाक़ेआ़ होती है

वोह इंसान की तदरीजी ख़ुदकुशी है। खाने पीने की चीज़ों और उनकी ख़ासियतों से नावाक़िफ़ और माहौल के असरात की बेना पर इंसान रफ़्ता रफ़्ता मौत से नज़्दीक होता रहता है।

दूसरे लफ़्ज़ों में हम किसी से येह सवाल नहीं करते हैं कि क्यूं ज़िंदा हो? जब कि हम मर्द, औरत, जवान, बूढ़ा, बच्चा हर एक की मौत के बारे में हस्सास हैं और किसी की ख़बरे मर्ग सुनने के बअ़्द उसकी वजह दरियाफ़्त करते हैं। येह ख़ुद एक वाज़ेह अ़लामत है कि मौत ग़ैर फ़ितरी है। इस बेना पर तूलानी उ़म्र के लिए किसी ख़ास दलील की ज़रूरत नहीं है बल्कि येह मौत है जिस के लिए दलील दरकार है। और उसके अस्बाब की जुस्तुजू है। वक़्त और ना वक़्त मौत के लिए सबब ज़रूरी है। यूं कहना शायद बेहतर होगा - चूंकि मौत का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं है इस लिए जिस वक़्त भी आए ना वक़्त ही है।

(इस बात पर तवज्जोह रहे कि मुअ़य्यना अजल का मसअला यहां मुश्तबा न होने पाए)

(३) इ़ल्म

अगर चंद साल पहले ख़लाई उ़लूम के माहेरीन हम से कहते हैं कि येह चाँद जो शाएरों का मअ़्शूक़ है (जिस के लिए सुक़रात ने तरह तरह के नादिर ख़यालात नज़्म किये हैं) ज़मीन पर बसने वाले इसांन के ज़ेरे क़दम होगा तो कोई उसको आसानी से तस्लीम न करता। लेकिन आज! येह मतलब कोई नया नहीं है अब बात इस क़द्र आ़म हो चुकी है कि उस में पहली जैसी जाज़ेबीयत भी नहीं है। इसी तरह अगर हम इस बात पर ग़ौर करें कि येह एक मैदाने इ़ल्म (इ़ल्मे हयात)

है जहां दानिशवर हज़रात दिन रात तहक़ीक़ में लगे हुए हैं और हमें येह मुज़्दा सुना रहे हैं:

> **''हम तूले उ़म्र की तमन्ना रखते हैं। और इस राह में क़दम भी उठाते हैं। जानवरों में माहौल और ग़ेज़ा की तब्दीली पर जो तजरेबात हुए हैं उनसे येह नतीजा निकलता है कि इंसान के लिए तूले उ़म्र की राह हमवार हो जाएगी।''**

(एलेकसिस कार्ल ''इंसान मौजूदे ना शेनाख़्ता'' बह्से तूले उ़म्र)

अ़क़्लमंद इंसान जिस ने मुख़्तलिफ़ मैदानों में दानिशवरों की कामियाबियां देखी हैं वोह कभी तूलानी उ़म्र के मसअला को नाक़ाबिले हल मसअला ख़याल नहीं करता है। बल्कि मशहूर फ़लसफ़ी बू अ़ली सीना के बक़ौल:

كُلَّمَا قَرَعَ سَمْعُكَ مِنَ الْغَرَائِبِ وَلَمْ يَقُمْ دَلِيْلٌ عَلٰى اِمْتِنَاعِهٖ فَذَرْهُ فِيْ بُقْعَةِ الْاِمْكَانِ۔

कुल्लमा क़-र-अ़ सम्ओ-क मिनल ग़राएबे व लम यकुम दलीलुन अ़ला इम्तेनाएही फ़ज़र्हो फ़ी बुक़्अ़तिल इम्काने.

अगर तुम कोई अ़जीब-ओ-ग़रीब बात सुनो तो जब तक उसके मोहाल होने पर कोई क़तई दलील न हो तो उसको दामने इमकान में रहने दो।

(मुक़द्दमा इलाहियाते शफ़ा)

इस बह्स में हम यहां सब से पहले तूले उ़म्र के सिलसिले में दानिशवरों के कामियाब तजरेबात और उनके नताएज का तज़्केरा करेंगे ताकि इन्कार करने वालों की बे बुनियाद हक़ीक़त वाज़ेह हो जाए।

(अ) इन्सान की कोशिशः

आज का इंसान तूले उ़म्र के बारे में बेपनाह कोशिश कर रहा है और उसके अस्बाब तलाश करने के लिए हर तरफ़ हाथ-पैर मार रहा है ताकि जिस तरह हो सके बुढ़ापे पर क़ाबू पा सके। तजरेबागाहों में सारी उ़म्र सर्फ़ कर रहा है। यहां तक कि मिशीगन यूनिवर्सिटी में बायोकेमिक की तहक़ीक़ात के उस्ताद प्रोफ़ेसर जार्ज हैमिल्टन ने येह मुज़्दा सुनाया कि लेविस्ट्रोल नामी एक दवा कश्फ़ हुई है जो बदन के ख़लियों पर एअ़्जाज़ी असरात रखती है और उनकी उ़म्र को दो गुना कर देती है और वोह बाक़ाएदा इस बात का एअ़्लान करता है किः

> **हारमोन से इस्तेफ़ादा करने के बअ़्द इंसान के अअ़्ज़ा की और नतीजतन ख़ुद इंसान की उ़म्र को दो गुना किया जा सकता है।**

(हफ़्तावार अख़बार ''पेज़िश्की, शुमारा २२४, सहशंबा, ख़ुरदाद ४८)

कभी मशरिक़ी यूरोप के इल्मुल हयात के मशहूर माहिर डॉ. पेचनीकाव इस नज़रिये के बअ़्द कि मौत का सबब आँत के पास जरासीम का ख़मीर में तब्दील हो जाना है यही वोह जगह है जहां

क़ूवते जाज़ेबा और दाफ़ेआ का अमल और रद्दे अमल होता है। वोह जज़ीरा नुमा बाल्कन के तमाम मुल्कों का सफ़र करता है ताकि वहां के लोगों की लंबी उम्र के बारे में तहक़ीक़ कर सके। वहां वोह देखता है कि दूध, ख़ास कर दही का बहुत ज़्यादा इस्तेआमाल करते हैं और दही में लैक्टिक तेज़ाब पाया जाता है जो आँतों में मौजूद ज़हरीले अबख़रात का तजज़िया और तहलील करता है और उनके मुज़िर असरात को बे असर कर देता है।

इस मसअले में इंसान की सई-ओ-तलाश इस हद तक नज़र आती है कि उसने इल्मुल हयात के बअ़ज़ शोअ़बों को इस बात से मख़्सूस क़रार दिया है कि बुढ़ापे और मौत के अस्बाब के बारे में तहक़ीक़ की जाए। जिस से एक तरफ़ येह बख़ूबी वाज़ेह होता है कि इंसान को बुढ़ापे और मौत का मोअ़म्मा हल करने की किस क़द्र फ़िक्र है और दूसरी तरफ़ येह भी वाज़ेह होता है कि तूले उम्र का राज़ कश्फ़ करना इंसान के लिए मुमकिन है। इस इल्मी तहक़ीक़ का पहला नतीजा येह है कि इंसान की उम्र के दो गुना होने के इम्कानात पैदा हो गए हैं। उम्मीद है कि आइंदा इस से बेहतर नताएज बरामद होंगे। इन बातों से येह हक़ीक़त भी वाज़ेह हो जाती है कि तूले उम्र का मसअला इल्मी तहक़ीक़ात के ख़ेलाफ़ नहीं है और इन दोनों में कोई तज़ाद नहीं पाया जाता है, बल्कि इल्मी तरक़्क़ी और साइंस के इन्केशाफ़ात इस बात की ताईद करते हैं और रोज़ बरोज़ इंसान तूले उम्र के मसअले से नज़्दीक होता जाता है और इसको क़बूल करने के लिए पहले से ज़्यादा आमादा होता जा रहा है।

(ब) अस्बाब

इल्मे हयात उन अस्बाब को भी तलाश कर रहा है जो तूले उम्र में मोअस्सिर साबित हो सकते हैं और इस सिलसिले में उसने मुख़्तलिफ़ अस्बाब को मोअस्सर पाया है। अहम अस्बाब में माहौल, काम और ग़ेज़ा का नाम लिया जा सकता है। ज़ाहिर है कि वोह पाक-ओ-पाकीज़ा माहौल (आब-ओ-हवा) जो फ़ितरी है जिसे इंसान की दस्त दराज़ियों ने मसमूम नहीं किया है (जैसे पहाड़ी और देहाती एलाक़े) वोह सहीह-ओ-सालिम गेज़ा जिस में बदन की तमाम ज़रूरियात मौजूद हैं और वोह मुनासिब काम और मसरूफ़ियात जिस में अअ्साबी रद्दे अमल नहीं है। येह इंसान की तूलानी उम्र में बेपनाह मोअस्सर है उन अफ़राद की ज़िंदगी का मुतालेआ जो शहरों में रहते हैं और अपनी ग़ेज़ा का बाक़ाएदा ख़याल रखते हैं। और वोह अफ़राद जो इस मसअले में ला परवाह हैं और पेटू हैं। वोह अफ़राद जो मुनासिब काम करते हैं और वोह अफ़राद जो अपने काम में मुसलसल अअ्साबी तनाव का शिकार रहते हैं। दूसरे अफ़राद की बनिस्बत पहले अफ़राद की ज़िंदगी और उम्र का औसत कहीं ज़्यादा है। जिस से येह मअ्लूम हो जाता है कि येह चीज़ें तूले उम्र में किस दर्जा मोअस्सर हैं।

(ज) अअ्दाद-ओ-शुमार

जो बातें बयान की गईं और जो इल्म और साइंस की मुश्तरक

तलाश-ओ-जुस्तुजू का नतीजा हैं उससे येह वाज़ेह हो जाता है कि इंसान के लिए उम्र की कोई हद मुअय्यन नहीं की जा सकती है न कोई औसत हद है और न कोई अकसर। इल्मी बुनियाद पर किसी भी हद को मोअ्तबर और नाक़ाबिले तग़य्युर क़रार नहीं दिया जा सकता है। क्यूंकि हर हद को तजावुज़ करने का एहतेमाल मौजूद है। इसी बेना पर हम देखते हैं कि दुनिया के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में उम्र का औसत मुख़्तलिफ़ है और येह इख़्तेलाफ़ अस्बाब के इख़्तेलाफ़ की बेना पर है।

इन्ग्लैंड में १८३८-१८५४ में मर्दों की औसत उम्र ३९.९१ साल और औरतों की ४१.८५ साल थी जब कि १९७३ में मर्दों की औसत उम्र ६०.१८ साल और औरतों की औसत उम्र बढ़ कर ६६.४० हो गई।

अमरीका में १९०१ में मर्दों की औसत उम्र ४८.२३ और औरतों की औसत उम्र ५१.०८ थी और १९४४ में मर्दों की औसत उम्र ६३.५ और औरतों की उम्र ६८.९५ पहुंच गई। मुख़्तलिफ़ मुमालिक में येह औसत उम्र का इख़्तेलाफ़ सेहते आम्मा की बेहतरी और बअ्ज़ वबा की बीमारियों पर कंट्रोल करने की बेना पर है।

अगर १८३८ और १८५४ के दरमियान इन्ग्लैंड में कोई शख़्स दानिशवरों का लबादा ओढ़ कर येह एअ्लान करे कि मर्दों की उम्र ४० साल से ज़्यादा नहीं होगी तो इस एअ्लान पर इस वक़्त के दानिशवर और मुहक़्क़िक़ हज़रात मुस्कुरा कर यही जवाब देंगे:

१. कि उम्र का कोई औसत मुअय्यन नहीं है जिस से कम या ज़्यादा नहीं हो सकता।

२. अगर कोई औसत मुअ़य्यन की भी गई तो उस वक़्त की मौसूला कम-ओ-बेश मेक़दार को मेअ़्यार क़रार देकर। उसकी बुनियाद पर येह औसत कोई मुस्तक़िल न होगी बल्कि उससे कमी-ओ-ज़्यादती का इम्कान मौजूद रहेगा। इस लिए उसकी बुनियाद पर क़तअ़न कोई हद मुअ़य्यन न होगी। हक़ीक़त पर मबनी इस बात को बीस साल बअ़्द की तहक़ीक़ात सहीह साबित कर देती हैं और इस तरह उ़म्र को महदूद करने का नज़रिया मज़हका ख़ेज़ बन गया। और येह मज़हका और रुसवाई न सिर्फ़ उसके लिए है बल्कि येह रुसवाई हर उस शख़्स का मुक़द्दर है जो इस तरह की ग़ैर इल्मी बात करेगा और उ़म्र को महदूद करने की ला हासिल कोशिश करेगा। यहाँ इस बात की दोबारा याद दहानी शायद बेजा न होगी कि औसत उ़म्र की बदलती हुई सरहदें ख़ुद इस बात की बेहतरीन और यक़ीनी दलील हैं कि इंसानी उ़म्र की कोई हद मुअ़य्यन नहीं है।

इल्मुल हयात की रोज़ अफ़्ज़ूं तहक़ीक़ात से इंसान की उ़म्रे तबीई के अस्बाब में मज़ीद इज़ाफ़ा होता जा रहा है। हर मौजूद की औसत उ़म्र मुअ़य्यन करने की निस्बत से जो नतीजा दानिशवरों ने बरामद किया है वोह येह कि इंसान की उ़म्र ३५० साल तक पहुँच सकती है। जब कि दिमाग़ के वज़्न के तनासुब से तूले उ़म्र के बारे में तहक़ीक़ात इस अअ़्दाद -ओ-शुमार में इज़ाफ़े का सबब हैं।

ख़ुलासा येह कि उ़म्र की कोई ख़ास ह़द मुअ़य्यन नहीं है और किसी चीज़ का मअ़्मूल के ख़ेलाफ़ होना उसके न होने की दलील नहीं है।

(द) इस्तेस्ना

आइये इन तमाम बह़्सों को अलग रखें और एक दूसरे अन्दाज़ से गुफ़्तुगू करें। इंसानी उ़लूम की बेपनाह तरक़्क़ी और फ़ितरत के बेशुमार राज़हाए सरबस्ता के इन्केशाफ़ के बअ़्द भी फ़ितरत का एक मसअला है जिस के सामने इंसान बिल्कुल लाचार और आ़जिज़ है। और वोह फ़ितरी क़वानीन में इस्तेस्ना है जो मुख़्तलिफ़ उ़लूम-ओ-फ़ुनून के माहेरीन के तअ़ज्जुब में इज़ाफ़ा कर देता है। येह ह़ज़रात जो आ़म क़वानीन की रोशनी में मुश्केलात का ह़ल तलाश करते हैं कुछ ऐसे मक़ामात भी आते हैं जहां सारे क़वानीन जवाब दे देते हैं और सारे अन्दाज़े ग़लत साबित हो जाते हैं। इसी बेना पर दानिशवर ह़ज़रात फ़ितरी क़वानीन में इस्तेस्ना के क़ाएल हैं।

मिसाल के तौर पर फ़ितरी क़ानून के मुताबिक़ मअ़्मूली हालात में दो गैसों की तरकीब (बग़ैर किसी तजरेबागाह के) में तीसरी गैस का पैदा हो जाना है जो इस क़िस्म की तरकीबात के बारे में सह़ीह़ है। लेकिन पानी उन दोनों गैसों यअ़्नी हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की तरकीब से वजूद में आता है और क़ाएदे के ह़िसाब से आ़म हालात में, उसके मालीक्यूल के वज़्न के पेशे नज़र सिर्फ़ भाप की शक्ल में होना चाहिए। बहुत ही हैरत के आ़लम में सय्याल की शक्ल में नज़र आती

है। जब कि अमोनिया मालीक्यूल के वज़्न के साथ सिफ़्र (०) से ३३ दर्जा कम हालत में भाप होती है या हाइड्रोजन सल्फ़ाइड जो मैंडलीफ़ के जुदूल में अपनी जगह के हिसाब से क़रीब क़रीब पानी क़रार दिया गया है। और ३४ मालीक्यूल वज़्न के साथ ५९ दर्जा सेन्टी ग्रेड से कम पर भी भाप ही रहती है। पानी को भी क़तई तौर पर ऐसी तबीई हालत में दूसरे अनासिर और तरकीबात से मुशाबेह होने की वजह रहना चाहिए जब कि इस मक़ाम पर बात क़ाएदए इस्तेस्ना के मुताबिक़ उलट पलट गई इस लिए इस मक़ाम पर क़वानीने कुल्ली को क़बूल करने के साथ साथ इस इस्तेस्ना की हालत से इन्कार ना मुम्किन है।[१]

आलमे नबातात का एक और नमूना येह है कि हम जानते हैं कि नबातात और पौदे उस वक़्त बारआवर और समरदार होते हैं जब (बराहे रास्त या बिल्वास्ता) नर पौदे के फूल के ज़ीरे मादा पौदे के ज़ीरों से मुत्तसिल होते हैं। चाहे वोह हवा के ज़रीए हो या शहद की मक्खियों, या दीगर ज़रीओं से। इसी को ''अमले लेक़ाह'' कहा जाता है। अगरचे येह एक कुल्ली क़ानून है फिर भी बअ़्ज़ मादा पौदे ऐसे होते हैं जिन्हें अमले लेक़ाह की ज़रूरत नहीं पड़ती बल्कि अज़ खुद वोह समरदार हो जाते हैं। यअ़्नी कुल्ली क़ानून से हट कर येह इस्तेस्नाई हैसियत-ओ-हालत होती है। गोया हर मक़ाम पर इस्तेस्ना

१. इस साइन्सी मसअले की तफ़सील ''आब क़िस्सा मी गोयद'' के मक़ाले में मिलेगी। तहरीरः डॉ. थॉमस ड्यूर्डपार्क्स अमरीका की एलेन्ज़ यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर की किताब 'इस्बाते वजूदे खुदा' का मुतालेआ कीजिये।

कार फ़रमा रहता है।

यहां पर बात क़ाबिले तवज्जोह है कि येह सारे मुस्तस्नियात और उनका एक हक़ीक़त के उन्वान से क़बूल कर लेना और उन मवारिद के तजज़िया और तहलील में आम क़वानीन की ना रसाई का एहसास इस बात का सबब नहीं है कि इल्म का इन्कार कर दें। वोह अफ़राद जो इस तरह के मवारिद को इल्मी तहक़ीक़ात के ख़ेलाफ़ इस्तेअ्माल करते हैं वोह कज फ़िक्र हैं और ग़लत रास्ते पर चल रहे हैं। क्यूंकि येह इस्तेस्नाई मवारिद ख़ुद दुनिया के निज़ाम में शरीक हैं और काएनात के उमूमी क़वानीन की पैरवी करते हैं और ख़ुद उनका एक मख़्सूस क़ानून है जो इस दुनिया के दीगर क़वानीन के साथ बाहमी रब्त रखते हैं। इस बेना पर अगर हम देखें कि एक निज़ाम कश्फ़ किया गया है लेकिन उसका मिस्दाक़ एक दो मूरिद से ज़्यादा नहीं है तो उसका मतलब येह नहीं है कि वोह उमूमी क़ानून बेकार है। बल्कि ज़रूरत इस बात की है कि हम अपनी तहक़ीक़ात और ज़्यादा वसीअ् करें। ताकि उन मवारिद के ख़ास क़वानीन भी पैदा करने में कामियाब हो जाएं। इसी बेना पर कहा जाता है कि नाक़ाबिले तौजीह मुस्तस्नियात का क़बूल कर लेना इल्म के मुख़ालिफ़ नहीं है बल्कि इल्मी तहक़ीक़ की राह में एक क़दम है बल्कि इस बात की बशारत है अगर मज़ीद तहक़ीक़ की जाए तो दूसरे मिस्दाक़ भी तलाश किये जा सकते हैं। अगर हम अपने रोज़ मर्रा के मअ्मूल के मुताबिक़ और आम मुशाहेदात की बेना पर तूले उम्र का मसअला न हल कर सकें तो हमें येह इजाज़त नहीं है कि हम फ़ौरन उसका इन्कार कर दें और उस से दस्त बरदार हो जाएं। क्यूंकि इल्मी नज़रियात ने हमेशा इस्तेस्नाई

मवारिद के लिए दरवाज़ा खुला रखा है और जल्द बाज़ी से मनअ् किया है। ख़ास कर उस सूरत में जब इस इस्तेस्ना के सबूत में दूसरे नमूने भी मौजूद हों जिस का हम आइंदा ज़िक्र करेंगे। अब इसके बअ्द तूले उ़म्र के इन्कार की कोई गुन्जाइश बाक़ी नहीं रहती है।

(४) हक़ीक़त

अगर हम इन तमाम बह्सों से सर्फ़े नज़र कर लें और आज की दुनिया पर नज़र करें तो हमें ऐसे अफ़राद मिल जाएंगे जिन्होंने लम्बी लम्बी उ़म्रें बसर की हैं। इसके बअ्द तो बात और ज़्यादा आसान हो जाती है क्यूंकि इल्मी दलीलें जब तक महसूस न होने लगें उस वक़्त तक दिलनशीं नहीं होती हैं। चंद साल क़ब्ल की बात है कि दुनिया के मशहूर-ओ-मअ्रूफ़ माहनामा 'रीडर डाइजेस्ट' जो दुनिया की मुख़्तलिफ़ ज़बानों में शाएअ् होता है। उसमें एक मज़्मून इस उ़न्वान से शाएअ् हुआ था:

''मौत हम से डरती है'' इस मज़्मून में रूस में वाक़ेअ् आज़रबाईजान के लोगों के हालात थे जहां १२० और १५० साल के अफ़राद कसरत से मिलते हैं जो अपनी ज़िंदगी के कामों में बाक़ाएदा मश्ग़ूल और मस्रूफ़ हैं। वहां इतनी उ़म्र के अफ़राद की मौजूदगी लोगों को मुतअ़ज्जिब नहीं करती क्यूंकि येह बात वहां के लिए आ़म है और तूलानी उ़म्र के अफ़राद एक दो नहीं हैं बल्कि उस एलाक़े की ख़ुसूसियत ही कुछ ऐसी है। बहरहाल इस तरह के वाक़ेआ़त की मौजूदगी हमारी बह्स में बहुत हद तक मुआ़विन है। और तूले उ़म्र के

मसअले को मुख़ालिफ़े इल्म होने से यकसर ख़ारिज कर देती है।

इन ज़िंदा हक़ीक़तों के अ़लावा इंसानी ज़िंदगी की तारीख़ में माज़ी बईद और माज़ी क़रीब में ऐसे अफ़राद मिलते हैं जो इस हक़ीक़त को आईना कर देते हैं। दुनिया की तारीख़ में और मज़हबी तारीख़ में ऐसे अफ़राद मिलते हैं जिन की उ़म्रें तूलानी थीं। और इस मौज़ूअ़ पर या तो मुस्तक़िल किताबें लिखी गई हैं या किताबों की फ़स्लें मख़्सूस की गई हैं।[१]

इन किताबों में ऐसे अफ़राद का तज़्केरा मिलता है जिन की उ़म्रें अच्छी ख़ासी लम्बी थीं मसलन जनाब आदम अ़लैहिस्सलाम ९३० साल, जनाब आ़द अ़लैहिस्सलाम १२०० साल, जनाब मतूशानेह अ़लैहिस्सलाम ९६० साल, जनाब नूह अ़लैहिस्सलाम ९५० साल से ज़्यादा। क़ुरआन करीम जहां जनाब नूह अ़लैहिस्सलाम का तज़्केरा करता है तो अहकामे इलाही की तब्लीग़ करने की मुद्दत इस तरह बयान की है:

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا۔

व लक़द अर्सल्ना नूहन इला क़ौमेही फ़-लबे-स फ़ीहिम अल-फ़ स-नतिन इल्ला ख़मसी-न आ़मा

(सूरए अ़न्कबूत, आयत १४)

इस आयत से वाज़ेह हो जाता है कि सिर्फ़ तब्लीग़ की मुद्दत ९५०

१. जैसे अबी हातिम सजिस्तानी की किताब अल मोअ़म्मरून वल वसाया। जैसे मसऊ़दी की मुरूजुज़्ज़हब, अबू रैहान बैरूनी की आसारुल बाक़िया।

साल और येह मुद्दत भी तूफ़ान से पहली की है। यअ़्नी इस ९५० साल में बेअ़्सत से पहले और तूफ़ान से पहले की मुद्दत शामिल नहीं है लेहाज़ा उनकी उ़म्र यक़ीनन ९५० साल से ज़्यादा है।

इस तरह की हक़ीक़ी मिसालें ख़्वाह वोह गुज़श्ता ज़माने से मुतअ़ल्लिक़ हों या मौजूदा ज़माने से। इस हक़ीक़त को वाज़ेह कर देती हैं कि तूलानी उ़म्र का न सिर्फ़ इन्कार नहीं किया जा सकता है बल्कि उसको साबित करने के लिए नमूने भी मौजूद हैं। इस बेना पर हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम की उ़म्र मुबारक उस वक़्त तक जब कि वोह परचम हाथों में लिये ज़हूर फ़रमाएंगे किसी तरह भी क़ाबिले इन्कार नहीं है। बल्कि गुज़श्ता मिसालों के पेशे नज़र बहुत ज़्यादा तअ़ज्जुब ख़ेज़ भी नहीं है। इसको क़बूल कर लेना ही अ़क़्ल-ओ-मन्तिक़ की दलील है।

(५) यक़ीन

इन इल्मी और मन्तिक़ी दलीलों के बअ़्द बेहतर है कि हम अपने अ़क़ीदों पर एक नज़र करें और अपने अ़क़ाएद की बुनियाद पर इस मसअले का जाएज़ा लें क्यूंकि तमाम ज़िक्र शुदा दलीलें येह साबित करती हैं कि इस अ़क़ीदे (तूलानी उ़म्र) की राह में कोई रुकावट नहीं है। और ज़ेह्न उसको मोहाल नहीं जानता है। चूंकि हमारे तमाम इस्लामी अफ़कार-ओ-नज़रियात, किरदार और गुफ़्तार का सर चश्मा इस्लामी मआख़ज़ और बुनियादी अ़क़ाएद हैं। इस लिए इल्मी मबाहिस का येह इम्कान वहां यक़ीन की शक्ल इख़्तेयार कर लेता है

और येह अ़क़ीदा अपनी इस्लामी बुनियादों पर नेहायत मुस्तहकम है।

इस्लामी अ़क़ाएद की रोशनी में तख़्लीक़े काएनात का एक अहम क़ानून येह है कि इंसानी मअ़ाशरे में एक कामिल इंसान की मौजूदगी ज़रूरी है जो तमाम सिफ़ात-ओ-कमाल का मज्मूआ हो ताकि इंसानियत की राह में क़दम बढ़ाने वालों के लिए नमूनए अ़मल हो, जिस की ज़िंदगी इस्लामी तअ़्लीमात की अ़मली तस्वीर हो। येह इंसाने कामिल ख़ुदा और रसूल का जानशीन है। जिस को इस्लामी रवायात में हुज्जत के नाम से याद किया गया है। इन रवायतों की तअ़्दाद किस क़द्र ज़्यादा है जो रूए ज़मीन पर हुज्जते ख़ुदा की मौजूदगी को ज़रूरी क़रार देती हैं। और हुज्जत का न होना ज़मीन की तबाही के मुतरादिफ़ है।[१]

इसी बेना पर ख़ुद पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने जानशीन मुअ़य्यन फ़रमाए ताकि येह वाज़ेह हो जाए कि उनके बअ़्द येह ज़मीन हुज्जत और इमाम के वजूद से ख़ाली नहीं रह सकती और पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बअ़्द बारह इमामों ने जो यके बअ़्द दीगरे पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के हक़ीक़ी जानशीन थे, येह ज़िम्मेदारी अपने कांधों पर ली। यहां तक कि इस सिलसिले की आख़री कड़ी और इंसानी कारवां के आख़री क़ाफ़ला सालार ने परचम अपने हाथों में लिया ताकि एक दिन इस ज़मीन पर ख़ुदा के आ़देलाना निज़ाम को भरपूर तरीक़े से नाफ़िज़ कर

१. मिसाल के लिए उसूले काफ़ी किताबुल हुज्जा, बाब 'अन्नल अर्-ज़ ला तख़्लू मिन हुज्जते' का मुतालेआ़ किया जाए।

दे।

अब येह बात रोशन हो जाती है कि इस रहबर की उम्र को ख़ूब तूलानी होना चाहिए। जो लोगों की निगाहों से इस लिए पोशीदा है कि लोगों में उसको क़बूल करने की सलाहियत नहीं है जब वक़्त आएगा तो हाथों में अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ का परचम लिये ज़ाहिर होगा।

अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम की रवायात में हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम की जो सिफ़ात और ख़ुसूसियात बयान की गई हैं वोह सब इसी बात की ताईद करती हैं और ख़ुदा की आख़री हुज्जत के लिए तूले उम्र को बयान करती हैं और उसको हज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम की एक ख़ास ख़ुसूसियत क़रार दिया है। और गवाह के तौर पर उन अफ़राद (अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम) का तज़्केरा किया है जिन को ख़ुदावंद आ़लम ने तूले उम्र से नवाज़ा है।[१]

जब येह बात रोशन हो गई कि हज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम के लिए मन्तिक़ी तौर पर तूलानी उम्र ज़रूरी है और अ़मली दुनिया में भी उसके लिए कोई मानेअ़् नहीं है क्यूंकि मुसलमान बल्कि आसमानी मज़ाहिब के मानने वाले और तमाम ख़ुदा को तस्लीम करने वाले ख़ुदा की क़ुदरत पर यक़ीन रखते हैं और उसको ला महदूद जानते हैं और किसी मुमकिन काम को ख़ुदा की क़ुदरत से ख़ारिज नहीं जानते हैं और सब को इस बात का यक़ीन है कि अगर ख़ुदा किसी काम का

१. गरां क़द्र किताब मुन्तख़बुल असर, बाब २७, जहां तक़रीबन पचास (५०) हदीसें हज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम की तूले उम्र के सिलसिले में शीआ़ और सुन्नी किताबों से नक़्ल की गई हैं।

इरादा करे तो उसको अंजाम देता है और कोई ताक़त उसको रोक नहीं सकती है। ख़ुदा जब किसी काम को करना चाहता है तो बस येह कहने का इरादा करता है कि हो जा, वोह वजूद में आ जाता है। गरचे येह काम मअ़्मूल के कितना ही ख़ेलाफ़ हो। और इस तरह के काम बहुत ज़्यादा हैं और इस तरह के कामों से इंसान भी मानूस है। अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के मोअ़्जेज़ात इसी क़िस्म से तअ़ल्लुक़ रखते हैं जो अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम की सदाक़त और ख़ुदा की क़ुदरत की अ़लामत हैं।

साहेबान ईमान जो ख़ुदा की ला महदूद क़ुदरत पर ईमान रखते हैं। जब उनके नज़्दीक कोई काम, ख़ुदा की जानिब से सादिर होना ज़रूरी हो गया ख़ास कर उस सूरत में जब कि रवायतें भी उसकी ताईद करती हों तो अब उनके लिए इस पर ईमान लाना कोई दुश्वार नहीं है। क्यूंकि ख़ुदा के नज़्दीक कोई ''मुश्किल'' या ''बईद'' या ''अन्होनी'' नहीं है। और उसके हुक्म के नाफ़िज़ होने की कोई हद नहीं।

यहां इस बात की तरफ़ तवज्जोह ज़रूरी है कि इस्लामी अ़क़ाएद में मोअ़्जेज़ा और क़ुदरते ख़ुदा का अ़क़ीदा इल्म के ख़ेलाफ़ नहीं है। क्यूंकि इस तरह के ग़ैर आ़द्दी मसाएल का वजूद उ़मूमी क़वानीन की नफ़ी नहीं करता है और उन्हें बेकार नहीं क़रार देता है। बल्कि इस तरह के ग़ैर मअ़्मूली मसाएल ख़ुद एक उ़मूमी क़वानीन के पाबंद हैं जो अपने मुअ़य्यना ख़ुतूत पर हरकत करते हैं। इस तरह मोअ़्जेज़ा और क़ुदरत का अ़क़ीदा साइंस की ज़िद नहीं है।

बहरहाल इन तमाम बह्सों का मतलब येह था कि उन तमाम हज़रात की हक़ीक़त वाज़ेह हो जाए। उनके नज़रियात की बे सबाती का सब को इल्म हो जाए। किसी तरह भी तूलानी उम्र इल्म के ख़ेलाफ़ नहीं है। और इस तरह उन तमाम हज़रात के ज़ेह्नों से तमाम शुकूक-ओ-शुब्हात दूर हो जाएं जो इस अ़क़ीदे को अपने दिलों में लगाए हुए हैं वर्ना हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम की तूलानी उम्र का अ़क़ीदा हर मुसलमान बल्कि हर उस शख़्स के दिल की गहराइयों में मौजूद है जो ख़ुदा को मानता है। और आसमानी मज़ाहिब पर ईमान रखने का येह लाज़िमी नतीजा है।

ज़हूर का इन्तेज़ार

فَجِدُّوا وَانْتَظِرُوا هَنِيئًا لَّكُمْ اَيَّتُهَا الْعَصَابَةُ الْمَرْحُومَةُ۔

फ़जिद्दू वन्तज़ेरू हनीअन लकुम अय्यतोहल अ़सा-बतुल मर्हूमतो.

हां कोशिश करो और इन्तेज़ार करो, तुम्हें येह इन्तेज़ार मुबारक हो, ऐ रह़मतों के ह़ामिल गरोह।

(मुन्तख़बुल असर, स॰ ४९८)

ग़ैबत के ज़माने में शीअ़ों की ज़िम्मेदारियां काफ़ी ज़्यादा अहम हैं। कोशिश येह करना चाहिये कि येह शम्अ़ दिल के ऐवानों में इसी तरह रोशन और फ़रोज़ां रहे। मौजूदा दौर की तमाम तारीकियों और मुश्केलात के बावजूद उसकी नज़रे ताबनाक मुस्तक़बिल पर हो। शीअ़ा मुद्दतों से अपने मज़हब की मुकम्मल कामियाबी का मुज़्दा क़ुरआन की ज़बानी सुन रहा है।

اِنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُوْنَ۔

इन्नल अर्-ज़ यरिसोहा ए़बादेयस्सालेहून.

यक़ीनन ज़मीन के वारिस मेरे नेक बंदे होंगे।

(सूरए अंबिया, आयत १०५)

मुसलमान को जब इस बात का पूरा पूरा यक़ीन है कि ज़ुल्म-ओ-जौर से भरी हुई ज़मीन एक दिन ज़रूर हज़रत महदी अलैहिस्सलाम के हाथों अ़द्ल-ओ-इन्साफ़ से भर जाएगी तो उसके लिए ज़रूरी है कि वोह ख़ुद अपनी हेफ़ाज़त करे और अपने मअ़ाशरे को भी हर तरह की बुराइयों से पाक साफ़ रखने की कोशिश करे। येह इन्तेज़ार उसको किसी काम से रोके नहीं बल्कि उसको और ज़्यादा मेहनत करने पर आमादा करे ग़ाफ़िल और ख़ाबीदा लोगों को जगाए, उनको राह पर लाए ताकि सब हाथों में हाथ देकर, एक हो कर, एक साथ एक राह पर क़दम उठाएँ और क़ुरआन करीम की तअ़्बीर को अ़मली शक्ल दें

صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ۔

सफ़्फ़न क-अन्नहुम बुन्यानुन मर्सूसुन.

सीसा पिलाई हुइ दीवार की तरह मज़बूत और मुस्तहकम.

(सूरए सफ़, आयत ४)

जिस में बातिल की रख़्ना अंदाज़ियां ख़लल ईजाद नहीं कर सकती हैं। शीअ़ा अपनी नमाज़ों में नेहायत ख़ुज़ूअ़ और ख़ुलूसे दिल से बारगाहे ख़ुदा में येह दुआ़ मांगता है:

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَرْغَبُ اِلَيْكَ فِيْ دَوْلَةٍ كَرِيْمَةٍ تُعِزُّ بِهَا الْاِسْلَامَ وَ اَهْلَهُ وَ تُذِلُّ بِهَا النِّفَاقَ وَ اَهْلَهُ۔

अल्लाहुम्-म इन्ना नर्ग़बो इलै-क फ़ी दौ-लतिन

करी-मतिन तोइ़ज़्ज़ो बेहलइस्ला-म व अह्लहू व तुज़िल्लो बेहन्नेफ़ा-क़ व अह्लहू.

(दुआए इफ़्तेताह)

इस बेना पर सब से पहले वोह इस आलमी और कुरआनी हुकूमत के तअल्लुक़ से खुद अपनी ज़िम्मेदारियों को महसूस करता है और वोह ऐसी हुकूमत का ख़्वाहां है जिस में इस्लाम और मुसलमानों को इ़ज़्ज़त नसीब हो। नेफ़ाक़ और मुनाफ़ेक़ीन ज़लील-ओ-ख़्वार हों।

इन्तेज़ार का जो मफ़हूम हमारे यहां है उसके लिए ज़रूरी है कि मुख़्तलिफ़ अंदाज़ से बह्स की जाए। क्यूंकि इमाम अलैहिस्सलाम से जुदाई और दूरी बड़ी ही जाँ गुसल, नेहायत सख़्त और दुश्वार मरहला है उसी के साथ सबक़ आमोज़ भी है।

(१) जाँ गुसल

हम ऐसे क़ाफ़ले में सफ़र कर रहे हैं जहां क़ाफ़ला सालार निगाहों से ओझल है और उसकी जुदाई दिल को शाक़ हो रही है। हुदी ख़्वानों की रेयाकाराना और मुनाफ़ेक़ाना हुदी ख़्वानी तकलीफ़ में इज़ाफ़ा कर रही है। और क़ाफ़ले में चलने वाले हर नई आवाज़ पर गरोह दर गरोह क़ाफ़ले से जुदा हो रहे हैं और ज़लालत की तारीकियों में भटकते चले जा रहे हैं। येह देख कर हम लरज़ उठते हैं कि येह सारा दर्द-ओ-ग़म क़ाफ़ला सालार की ग़ैबत की बेना पर है। हम इस फ़िक्र में ग़र्क़ हैं कि आख़िरकार क़ाफ़ला सालार को उस वक़्त जवाब क्या देंगे। जब वोह इस्लाह की इब्तेदा करेंगे और हम से दरियाफ़्त करेंगे ग़फ़लत और

आराम के साथ क्यूं बैठे रहे? सुस्त और बुझे हुए क्यूं थे? क्या इन्तेज़ार का मतलब यही था कि सारा काम रहबर पर छोड़ दो और ख़ुद आराम करो? जब लोग गरोह दर गरोह अलग हो रहे थे तो तुमने हेफ़ाज़त क्यूं न की? जिस वक़्त ख़ूँखार भेड़िये हमला कर रहे थे उस वक़्त तुम ख़ामोश क्यूं थे? क्या इसी तरह हेफ़ाज़त की जाती है? इसी को इन्तेज़ारे ज़हूर कहते हैं? ख़ुद तो नेहायत आराम से ग़फ़लत के बिस्तर पर सोते रहे और ख़ाली ख़ुश्क और बे रूह ज़बानों से हमारा नाम लेते रहे?

येह बातें सोच कर एक हक़ीक़ी मुन्तज़िर तड़प उठता है और उसको किसी कल आराम नहीं मिलता। इमाम अलैहिस्सलाम की दूरी-ओ-जुदाई उसके लिए बड़ी रूह फ़र्सा होती है।

(२) नेहायत सख़्त और अक़्ल गुम करने वाली

हर रोज़ अपनी आँखों से इन्तेशार, परेशानी, अफ़रा तफ़री, ज़ोअ्फ़, ज़िल्लत, बे पनाही, कार शिकनी, रू सियाही, क़ैद-ओ-बंद, येह सारी बातें अपने मआशरे में देखते हैं। इन बीमारियों का इलाज, दर्द का मरहम, इमाम अलैहिस्सलाम के इस्लाही मन्सूबों में से एक है जिन्हें हम कभी कभी दुआए इफ़्तेताह में पढ़ते हैं और ख़ुदावंद आलम की बारगाह में हज़रत के ज़हूर की दुआएं मांगते हैं गरचे ख़ुद इस राह में कोई क़दम आगे नहीं बढ़ाते। येह ख़ुद अपनी जगह एक सख़्त इम्तेहान है और इन हालात में हज़रत से दूरी नेहायत सख़्त है।

(३) सबक़ आमोज़

वोह दिन कब आएगा जब हम गौहर को पहचान सकेंगे। और क़द्रदानी के आदाब सीखेंगे। जैसा कि पहले इशारा हो चुका - वोह माज़ी के इन्हेराफ़ात वोह इमामों से दूरी, वोह उनकी ना क़द्री, इन्हीं बातों को आज के दौर में भी देखते हैं जब कि इमाम अलैहिस्सलाम निगाहों से पोशीदा हैं। और इसी के साथ साथ दिल-ओ-दिमाग़ को मफ़्लूज कर देने वाला दर्द-ओ-ग़म। येह सब हमें येह सबक़ देता है कि हम हज़रत अलैहिस्सलाम के ज़हूर के ज़माने में और हज़रत अलैहिस्सलाम की ग़ैबत के ज़माने में ऐसा रास्ता इख़्तेयार करें कि फिर शर्मिंदा न होना पड़े। और इस बात की कोशिश करें कि इमाम अलैहिस्सलाम की एनायतों के ज़ेरे साया सारी दुनिया को इस कोने से उस कोने तक अद्ल और इन्साफ़ से भर दें, अद्ल-ओ-इन्साफ़, बराबरी और बरादरी का भूला हुआ दर्स फिर से याद दिलाएं। ज़मीन में ताज़ा रूह फूंक दें, ज़मीन को हयाते नौ अता करें। येह ख़ुद इमाम अलैहिस्सलाम के इन्तेज़ार का एक सबक़ है।

(४) ताक़त बख़्श भी है और तअ्मीरी भी

इन्तेज़ार इंसान को ताक़त अता करता है। क्यूंकि मुस्तक़बिल के सफ़हात हमारी निगाहों से दूर हैं, हम सिर्फ़ उम्मीद पर ज़िंदा हैं। एक रोशन और ताबिंदा सूरज अपने जिलू में रखते हैं। अगर हम तारीकियों में बैठे हुए हैं तब भी निगाहें उसी रोशनी की तरफ़ लगी हुई हैं। येह बात ख़ुद अपनी जगह हयात आफ़रीं है। ख़ास कर अगर

हम बुज़ुर्गों से सबक़ हासिल करते हुए बैठने के बजाए उठ खड़े हों और रोशनी की सिम्त क़दम उठाएं, न अकेले बल्कि दूसरों को भी अपने साथ लें। यअ़्नी सरापा मौज बन जाएं और नेहायत जोश-ओ-ख़रोश के साथ ख़ुद भी आगे बढ़ें और दूसरों को भी आगे बढ़ाएं। एक साथ क़दम से क़दम मिला कर हरकत करना एक ताक़त है। येह हमें भी ताक़तवर करता है और हमारे मआ़शरे को भी। येह हरकतें तअ़्मीरी भी हैं। क्यूंकि नूर की तरफ़ उठने वाला क़दम ख़ुद अपने साथ भी कुछ न कुछ रोशनी रखता है और उसमें बराबर इज़ाफ़ा होता रहता है और आख़िरकार नूरे मुजस्सम और हक़ीक़ी रोशनी से मिला देता है।

इसी बेना पर इमाम अ़लैहिस्सलाम की दूरी हमें इस बात की इजाज़त नहीं देती है कि हम ख़ामोशी से बैठे रहें। बल्कि हमें फ़ौलाद की तरह मज़बूत हो जाना चाहिए ताकि सहीह इन्तेज़ार के फल खा सकें। हमारी ताक़त और सेबाते क़दम में इज़ाफ़ा हो। कोशिशों में मज़ीद इस्तेहकाम पैदा हो। ताकि इस ज़माने की सख़्तियां हमें रास्ते से मुन्हरिफ़ न कर सकें। तमाम मुश्केलात के बावजूद हम अपने ताबनाक मुस्तक़बिल से मायूस न हों। अपनी कोशिशों और मेहनतों से इस्लाम की आ़लमी हुकूमत के लिए ज़मीन हमवार करें।

हम यहां चंद रवायतों का तज़्केरा करेंगे ताकि मअ़्लूम हो सके कि इमाम अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत के ज़माने में इमाम अ़लैहिस्सलाम का इन्तेज़ार करने वालों की क्या क्या ज़िम्मेदारियां हैं?

१. हज़रत इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

اِنَّ اَهْلَ زَمَانِ غَيْبَتِهِ الْقَائِلِيْنَ بِاِمَامَتِهٖ وَالْمُنْتَظِرِيْنَ لِظُهُوْرِهٖ اَفْضَلُ مِنْ اَهْلِ كُلِّ زَمَانٍ لِاَنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى اَعْطَاهُمْ مِنَ الْعُقُوْلِ وَالْاَفْهَامِ وَالْمَعْرِفَةِ مَا صَارَتْ بِهِ الْغَيْبَةُ عِنْدَهُمْ بِمَنْزِلَةِ الْمُشَاهِدَةِ وَجَعَلَهُمْ فِيْ ذَالِكَ الزَّمَانِ بِمَنْزِلَةِ الْمُجَاهِدِيْنَ بَيْنَ يَدَيْ رَسُوْلِ اللهِ بِالسَّيْفِ اُولٰئِكَ الْمُخْلِصُوْنَ حَقًّا وَ شِيْعَتُنَا صِدْقًا وَالدُّعَاةُ اِلٰى دِيْنِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ سِرًّا وَّ جَهْرًا۔

इन-न अह्ल-ल ज़माने ग़ैबतेहिल क़ाएली-न बेइमामतेही वल मुन्तज़ेरी-न लेज़ुहूरेही अफ़्ज़लो मिन अह्ले कुल्ले ज़मानिन ले-अन्नल्ला-ह तबार-क व तआला अअ़्ताहुम मिनल उ़क़ूले वल अफ़्हामे वल मअ़्रेफ़ते मा सारत बेहिल ग़ैबतो इन्दहुम बेमन्ज़ेलतिल मुशाहेदते व ज-अ-लहुम फ़ी ज़ालेकज़्ज़माने बेमन्ज़ेलतिल मुजाहेदी-न बै-न यदै रसूलिल्लाहे बिस्सैफ़े उलाएकल मुख़्लेसू-न ह़क़्क़न व शीअ़तोना सिद्क़न वद्दुआतो एला दीनिल्लाहे अ़ज़्ज़ व जल-ल सिर्रव व जह्रा.

“वोह लोग जो ग़ैबत के ज़माने में ह़ज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम की इमामत के क़ाएल हैं और उनके ज़हूर का इन्तेज़ार कर रहे हैं वोह हर ज़माने के लोगों से अफ़्ज़ल हैं। ख़ुदावंद आ़लम ने उनको ऐसी अ़क़्ल, फ़ह्म और मअ़्रेफ़त अ़ता की है जिस की बेना पर उनके नज़्दीक ह़ज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबत उनके ज़हूर

की तरह है। अल्लाह उन लोगों को उन मुजाहेदीन के बराबर क़रार देगा जो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **के सामने तलवार से जेहाद कर रहे थे.... यही लोग मुख़्लिस और हमारे सच्चे शीआ़ हैं। यही वोह अफ़राद हैं जो लोगों को एअ़्लानिया और ख़ुफ़िया तौर पर ख़ुदा की तरफ़ बुलाने वाले हैं।**

(कमालुद्दीन, स० ३०२, मतबूआ़ मकतबुस्सदूक़)

इस हदीस पर मुख़्तसर सी तवज्जोह से येह बात वाज़ेह हो जाती है कि हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर का इन्तेज़ार करने वालों की क़द्र-ओ-मंज़ेलत क्या है। यहां तक कि उन लोगों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के सामने जेहाद करने वालों के बराबर क़रार दिया गया है इस तरह का इन्तेज़ार कभी भी मन्फ़ी इन्तेज़ार नहीं रह सकता। और इस तरह का इन्तेज़ार करने वाला मआ़शरे के मसाएल से बे तअ़ल्लुक़ नहीं रह सकता है और न उनकी इस्लाह से मायूस हो सकता है।

२. हज़रत इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने एक हदीस में इर्शाद फ़रमाया है:

طُوْبٰى لِشِيْعَةِ قَائِمِنَا الْمُنْتَظِرِيْنَ لِظُهُوْرِهٖ فِيْ غَيْبَتِهٖ وَالْمُطِيْعِيْنَ لَهٗ فِيْ ظُهُوْرِهٖ اُوْلٰئِكَ اَوْلِيَآءُ اللّٰهِ الَّذِيْنَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ۔

तूबा लेशीअ़ते क़ाएमेनलमुन्तज़री-न लेज़ुहूरेही फ़ी

ग़ैबतेही वल मुतीई-न लहू फ़ी ज़ुहूरेही उलाए-क औलियाउल्लाहिल्लज़ी-न ला ख़ौफ़ुन अ़लैहिम व ला हुम यह्ज़नून.

''हमारे क़ाएम के शीओं की ख़ुश क़िस्मती का क्या कहना जो उनकी ग़ैबत में उनके ज़हूर का इन्तेज़ार कर रहे हैं और ज़हूर के बअ़्द उनकी इताअ़त करेंगे। यही लोग ख़ुदा के वली हैं। उनके लिए न कोई ख़ौफ़ है और न कोई रंज-ओ-ग़म।

(कमालुद्दीन, बाब ३३, हदीस ५४)

इस हदीस में भी इन्तेज़ार करने वालों की अ़ज़मत नज़र आ रही है। ग़ैबत और ज़हूर के ज़माने में उनकी दो अहम ख़ुसूसियत और ज़िम्मेदारी बयान की गई है। ग़ैबत में हक़ीक़ी इन्तेज़ार और ज़हूर के ज़माने में मुकम्मल इताअ़त इन दोनों सेफ़ात को हासिल करने के बअ़्द इंसान औलियाए ख़ुदा में शुमार हो सकता है जिन से रंज-ओ-ग़म, परेशानी-ओ-अलम दूर है।

३. ग़ैबत के ज़माने में हज़रत इमाम महदी अ़लैहिस्सलाम की इमामत का अ़क़ीदा रखने वाले बा अ़ज़मत अफ़राद की मज़ीद मअ़्रेफ़त और उनकी ख़ुसूसियात जानने के लिए उन बातों पर ग़ौर करना चाहिए जो इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने इस हदीस में बयान फ़रमाई हैं:

مَنْ سَرَّهُ اَنْ يَّكُوْنَ مِنْ اَصْحَابِ الْقَائِمِ فَيَنْتَظِرْ وَلْيَعْمَلْ بِالْوَرَعِ وَمَحَاسِنِ الْاَخْلَاقِ وَهُوَ مُنْتَظِرٌ۔

मन सर्रहू अंय्यकू-न मिन अस्हाबिल क़ाएमे फ़-यन्तज़िर वल यअ़्मल. बिल व-रए़ व महासेनिल अख़्लाक़े व हो-व मुन्तज़ेरुन.

तक़्वा, परहेज़गारी, हुस्ने अख़्लाक़, इन्तेज़ार की वाज़ेह ख़ुसूसियतें हैं। और जो शख़्स इमाम अ़लैहिस्सलाम **का इन्तेज़ार कर रहा है उस में इन सेफ़ात का पाया जाना ज़रूरी है।**

(ग़ैबते नोअ़्मानी, स० २००, मुन्तख़बुल असर, स० ४९७)

४. **हज़रत इमाम जअ़्फ़र सादिक़** अ़लैहिस्सलाम **की एक और हदीस पर ग़ौर करने से इस मौज़ूअ़् की हस्सासियत, अहमियत मज़ीद वाज़ेह हो जाती हैं।**

''जो लोग क़ाएम की हुकूमत का इन्तेज़ार करते करते इस दुनिया से रुख़्सत हो जाएं वोह उन अफ़राद की मानिंद हैं जो क़ाएम के पास हों।''

हज़रत अ़लैहिस्सलाम **ने फिर थोड़ी देर के बअ़्द इर्शाद फ़रमायाः**

''बल्कि वोह उन लोगों की तरह हैं जो हज़रत महदी अ़लैहिस्सलाम **के हमरकाब हों और तलवार चला रहे हों।''**

कुछ देर ख़ामोश रहने के बअ़्द फिर इर्शाद फ़रमायाः

''ख़ुदा की क़सम येह लोग उन अफ़राद की तरह हैं जो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **के सामने दर्जए**

शहादत पर फ़ाएज़ हुए हैं।

(मुन्तख़बुल असर, स० ४९८, हदीस० १३)

क्या हम को हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का इन्तेज़ार करने वालों में शुमार किया जाएगा? क्या हम कम अज़ कम उतना हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का इन्तेज़ार कर रहे हैं जितना सफ़र पर गए हुए अपने अज़ीज़ का इन्तेज़ार करते हैं?

इन्तेज़ार जहां मआशरे को फ़अ्आल बनाता है और तअ्मीरी असरात रखता है वहां इस बात का मुतक़ाज़ी है कि इन्तेज़ार करने वाले अपनी ज़िम्मेदारियों को बा क़ाएदा पहचानें, उसको क़बूल करें और उस से ओह्दा बर आ होने की भरपूर कोशिश करें ताकि इस तरह हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के ज़हूर के लिए जल्द अज़ जल्द ज़मीन हमवार कर सकें और सारी दुनिया को सरापा इन्तेज़ार बना दें।

ग़ैबत के ज़माने में शीओं की क्या ज़िम्मेदारियां हैं। और ज़हूर के बअ्द क्या क्या होगा। इस सिलसिले में अमीक़ और वसीअ् मअ्लूमात हासिल करने के लिए बेहतरीन ज़ख़ीरा वोह दुआएं हैं जो हज़रत महदी अलैहिस्सलाम के सिलसिले में वारिद हुई हैं। उसके लिए जनाब सय्यद इब्ने ताऊस की ''इक़बाल'' और जनाब शैख़ अब्बास कुम्मी की ''मफ़ातीहुल जेनान'' का पढ़ना बहुत मुफ़ीद है। इन दुआओं को समझ समझ कर पढ़ने से मअ्लूम हो जाएगा कि एक मुन्तज़िर की ज़िम्मेदारियां क्या हैं और हज़रत अलैहिस्सलाम की हुकूमत की ख़ुसूसियत और ज़हूर के बअ्द दुनिया की हालत क्या होगी।